

NOT FOR SALE

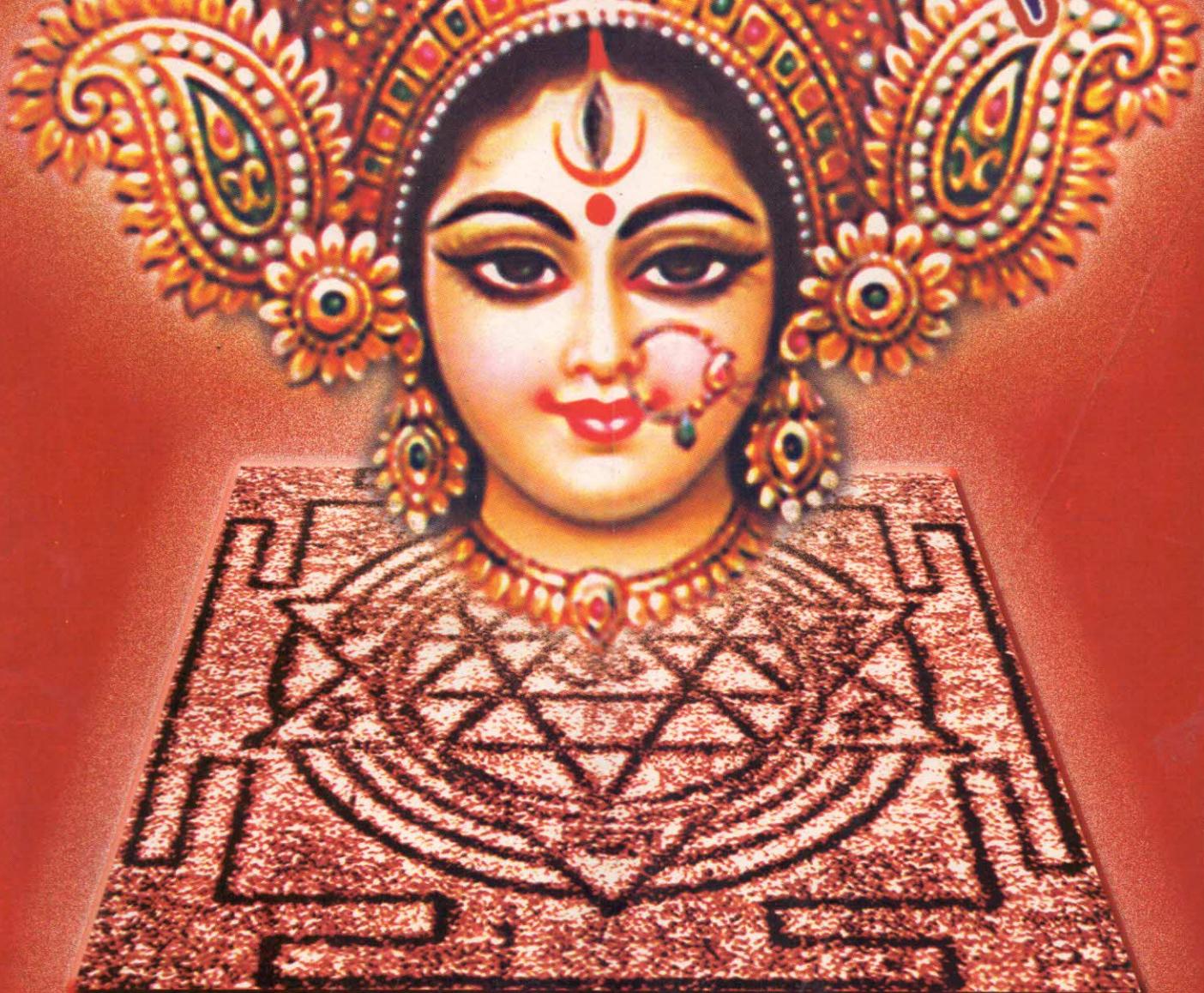
सितम्बर 2005

त्रिपुर शक्ति साधना विशेषांक

मूल्य : 18/-

# त्रिपुर शक्ति साधना

विज्ञान



ब्रह्मशंकर पूजन

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी आधार साधना है

आज्ञा चक्र जाग्रत कीजिए

कर्म शिखि कैसे हो?

ब्रह्मशंकर पर्व नहीं साधना कल्प है

A Monthly Journal





## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

अकाल मृत्यु-अपधात दोष निवारण हेतु

# आयुष्य लक्ष्मी यंत्र

लक्ष्मी के 108 स्वरूपों में 'आयुष्य लक्ष्मी' का भी नाम है। जीवन में यदि पूर्ण आयु नहीं होगी, पूरा विस्तार ही नहीं होगा तो कब व्यक्ति अपनी इच्छाओं की कामनाओं की पूर्ति कर सकेगा, कब अपनी इच्छा का संसार रच सकेगा और वह सब कुछ प्राप्त करने में सफल होगा जो उसके मन की चिरसंचित अभिलाषा है। साथ ही कब उन कर्त्तव्यों को पूरा कर सकेगा जो जन्म से ही उसके साथ चलते रहते हैं? हिन्दू धर्म के अनुसार व्यक्ति जन्म से ही मातृ-ऋण, पितृ-ऋण, देव-ऋण और गुरु-ऋण से आबद्ध होता है जिनका भुगतान किए बिना वह मुक्त हो ही नहीं सकता और इसके लिए, इन कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए व्यक्ति की लम्बी आयु आवश्यक होती है।

लक्ष्मी के सभी अन्य स्वरूपों के साथ 'आयुष्य लक्ष्मी' की साधना भी जीवन की प्राथमिक साधना में मानी गई है, जीवन का विस्तार करने में सहायक मानी गई है। जिससे व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा को तृप्ति के साथ सम्पन्न कर सके। शास्त्रों में स्पष्ट स्वप्न से कहा गया है जिस व्यक्ति की कामनाएं शेष रह गयी हो या जो अल्पायु हो वह मुक्ति लाभ का अधिकारी नहीं। 'कल्पतूम सौख्य' में प्राप्त आयुष्य लक्ष्मी साधना सम्पन्न कर ली जाती है तो उससे जीवन का मार्ग सहज हो जाता है। जीवन में केवल वर्षों की संख्या से आयु का निधरिण नहीं किया जा सकता। जीवन कितना तृप्ति सुखी और परिपूर्ण बीता, कितने क्षण आनन्द में व्यतीत हुए - वही जीवन की वास्तविक 'आयु' है।

आयुष्य लक्ष्मी साधना किसी भी सप्ताह में बुधवार, गुरुवार अथवा शुक्रवार में से कोई एक दिवस निर्धारित कर प्रत्येक सप्ताह उसी दिवस पर करते रहना आवश्यक है। इस साधना में विधान अधिक जटिल नहीं है और जो भी दिवस निश्चित किया हो उसमें प्रातः 6 से 8 के मध्य शुद्ध वस्त्र धारण कर साधना में बैठ जाएं और अपने सामने ताबीज रूप में आयुष्य लक्ष्मी यंत्र स्थापित कर लें। प्रथम दिन की साधना के बाद इस ताबीज को गले में धारण कर लेना है और आगे केवल सफेद हकीकी की माला से निम्न मंत्र का 108 बार उच्चारण करना है।

मंत्र

ॐ अं अः उरुष्यायै महालक्ष्म्यै नमः //

इस साधना में ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रथम दिन जिस समय साधना प्रारम्भ की थी अगले बार पुनः ठीक उसी समय पर साधना प्रारम्भ करें। साधक संकल्प पूर्वक 5, 11 अथवा 21 दिवसों की यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं और चाहे तो निरन्तर प्रति सप्ताह भी करते रह सकते हैं।

जब आपके संकल्प के दिवस पूर्ण हो जाय तब पांच छोटी कन्याओं को सम्मानपूर्वक भोजन आदि कराकर उन्हें भगवती महालक्ष्मी का ही स्वरूप मानते हुए दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करें। यदि ज्योतिषीय दृष्टि से किसी की आयु कम हो या हाथ में जीवन रेखा कटी हो, उसे इस साधना को सम्पन्न कर लेना ही चाहिए।

साधना समाप्ति के पश्चात् माला व यंत्र को जल सरोवर में विसर्जित कर दें।

सम्पर्क :-

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

साधना सामग्री - 450/-

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः  
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

# श्री ब्रह्म प्रकाश

॥ॐ परम तत्त्वाय नाकायणाय गुलुभ्यो नमः॥



सद्गुरु रुद्रेव  
सदगुरु प्रवचन 5

स्तरभंग	
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
वाराहमिहिर	63
जीवन सरिता	64
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	86

वर्ष 25 अंक 09  
सितम्बर 2005 पृष्ठ 88



## साधना

अहं ब्रह्मास्मि	27
षोडशी त्रिपुर	
सुन्दरी साधना	46
नवार्ण मंत्र साधना	55
सिद्ध महाचण्डी दिव्य	
अनुष्ठान साधना	66
धनवर्षिणी धनदा	
यक्षिणी साधना	70



## पूजन

शास्त्रोक्त्र त्रिशक्ति	
नवरात्रि पूजन	30

## विवेचन

शक्ति तत्व की व्याख्या	23
वास्तु कृत्या यंत्र	59
नारायण ध्यान	73
मातृ देवो	74
हमें गर्व है कि	
हम हिन्दू हैं	82

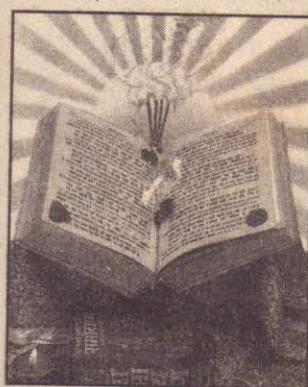


## स्तोत्र

इन्द्राक्षी स्तोत्र	76
---------------------	----

## दीक्षा

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा	37
----------------------------	----



:: सम्पर्क ::

प्रकाशक एवं स्वामित्व  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
द्वारा  
सुदर्शन प्रिन्टस  
487/505, पीरागढ़ी,  
रोहतक रोड, नई दिल्ली-87  
से मुद्रित तथा  
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट  
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 18/-  
वार्षिक: 195/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27182248, टेली फैक्स: 011-27196700  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtyv@siddhashram.org](mailto:mtyv@siddhashram.org)

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमकड़ साधु—संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद—विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद—विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद मैं असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद—विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें। इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता—असफलता, हानि—लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या सन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## ★ प्रार्थना ★

दिव्यामाभां च दधतीं परितः विलसत् दिव्यकन्यावराभिः,  
सिंहस्थां पूजितां तामसुरसुरजणैः भक्त्वाभाज्यैकथात्रीं।  
सौभाज्यं भाववित्रीं जनिभव्यहत्रीं भावगम्यां भवान्तीं;  
वन्दे चन्द्रार्कविम्बां भगवत्ति दुर्गं पुण्यपुष्टैः परीतां॥

दिव्य आभा से युक्त अनेक दिव्य कन्याओं से धिरी हुई, सिंह के ऊपर विराजमान सुर और असुरों द्वारा संपूजित, भक्तों के भाज्य को अनुप्राणित करने वाली, सौभाज्य को उत्पन्न करने वाली, सभी भक्तों के समस्त भव को दूर करने वाली, केवल भावों से जानने योग्य, सूर्य तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, अनन्त पुण्य समूह से पावनतम भवगती दुर्गा का भावपूर्ण हृदय से मैं नमन करता हूँ।

## ★ विद्ययाऽमृतश्नुत् ★

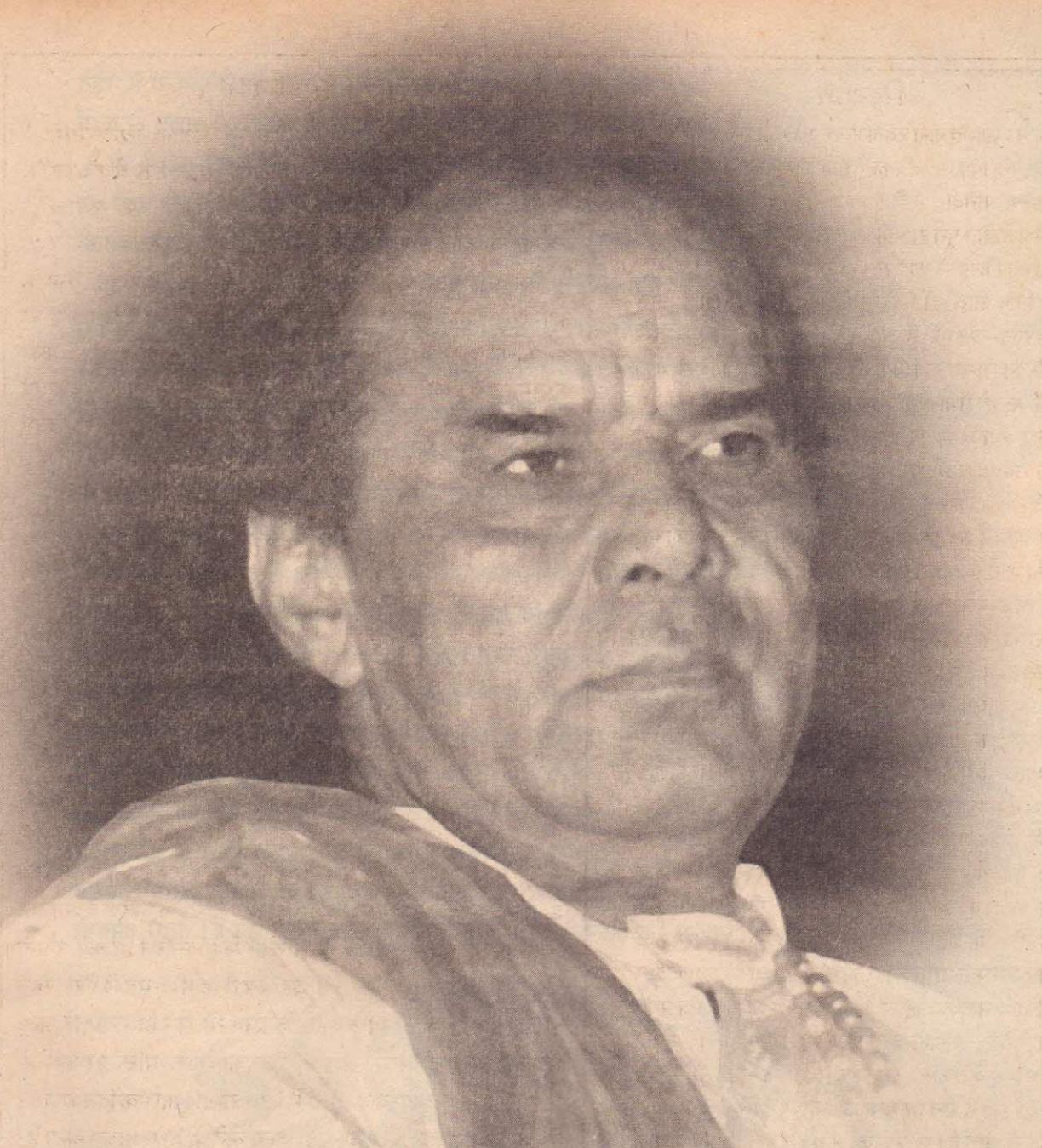
इस धरा पर जन्म लेने वाल प्रत्यके मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, भय, आशा, तृष्णा आदि अष्ट पाशों से ग्रसित है और यही कारण है कि उसका जीवन 'काल' या 'मृत्यु' की इच्छा पन निर्भर है। जिस क्षण मृत्यु की इच्छा होती है, वह व्यक्ति के पस आती है और उसे अपने साथ ले कर चल देती है।

लेकिन इन अष्ट पाशों से बंधे रह कर जीवन भर समस्याओं, परेशानियों, दुःखों, तकलीफों, रोग, पीड़ा आदि से युक्त रह कर मृत्यु का ग्रास बन जाने के लिए इस मनुष्य शरीर की प्राप्ति नहीं होती। जिस मानव शरीर को धारण करने के लिए देवता भी प्रयत्नशील रहते हैं और विभिन्न रूपों में अवतरित हो कर अपनी इस इच्छा की पूर्ति भी करते हैं, वह इस तरह मल-मूत्र में लिप्स रहते हुए मात्र श्मशान की यात्रा करने के लिए तो हो नहीं सकता। अतः निश्चय ही कोई अन्य तथ्य है, जिसका ज्ञान व्यक्ति को नहीं हो पाता और वह विषय-वासनाओं में लिप्स रहता हुआ एक दिन श्मशान में जा कर सो जाता है और पुनः जन्म लेने के लिए बाध्य होता है।

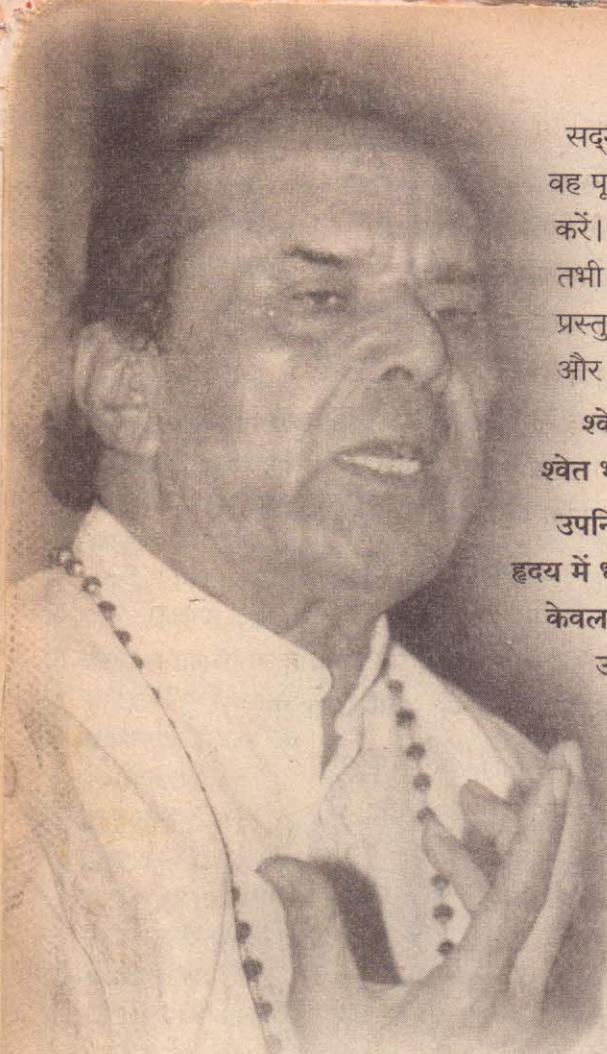
84 लाख योनियों में से एकमात्र मानव योनि ही ऐसी है, जिसमें जन्म लेने पर मनुष्य सद्गुरु की शरण में जा कर उनके द्वारा निर्देशित वैदिक कर्मकाण्ड व साधना रूपी अविद्या का सहारा ले कर पशु कर्म-ज्ञान, जो अष्ट पाशों के प्रभुत्व व मृत्यु का कारण बनता है, से परे हो जाता है, अर्थात् अविद्या द्वारा मृत्यु को पार किया जा सकता है। मृत्यु से परे होने के उपरान्त विद्या की प्राप्ति होती है अर्थात् ब्रह्म साक्षात्कार होता है, जिससे देवत्व या अमृतत्व की प्राप्ति होती है।

ईशावास्योपनिषद् में भी कहा गया है -

विद्यां चाविद्यां च यस्तदवेदोभयं सह।  
अविद्यया मृत्युंतीत्त्वां विद्ययाऽमृतमश्नुते॥



# ଶ୍ରୀ ସଂଗ ଦ୍ୱାପୁ ହାତାଖ୍ୟା ଭାଲୁଚାରୀ କାଳୀ



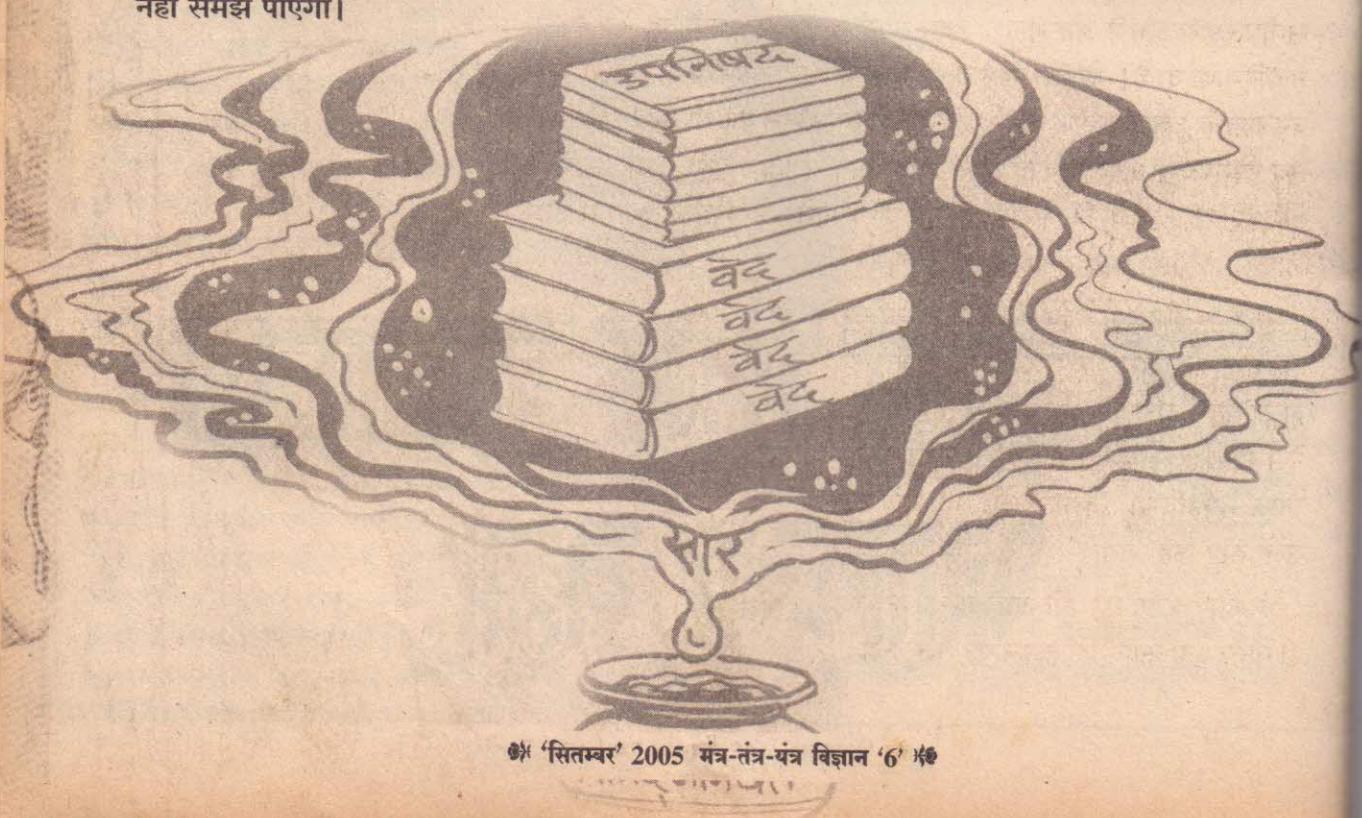
उसका आनन्द ले  
नहीं समझ पाएगा।

सद्गुरुदेव कहते हैं कि व्यक्ति अपना भाग्य स्वयं लिख सकता है, यदि वह पूर्ण संकल्प, ईमानदारी, निष्ठा, आहलाद और गुरु आज्ञा से कार्य करें। जीवन पर ओढ़ी हुई अज्ञान के अंधकार की चादर हटानी ही है, तभी जीवन में सर्वोच्चता प्राप्त कर सकते हैं, जीवन के सभी पक्षों को प्रस्तुत करता सद्गुरुदेव का यही ओजस्वी प्रवचन जिसे केवल पढ़े ही और अपने जीवन में उतार दें -

श्वेतश्वेतारोपनिषद का अर्थ है कि हम ज्ञानी हैं या अज्ञानी हैं, मन में श्वेत भाव है या दुर्भाव है। देवत्व जगाने की क्रिया इस उपनिषद में है।

उपनिषद का तात्पर्य है कि बिल्कुल पास में बैठ करके गुरु की बात को हृदय में धारण करना। यह उपनिषद का अर्थ है कि हम गुरु के पास बैठें। केवल शारीरिक दृष्टि से नहीं आत्मिक दृष्टि से उनके पास बैठकर के उनके एक-एक शब्द को सुनें, ठीक उसी प्रकार से सुनें जैसे अमृत पीते हैं और हृदय में हमेशा के लिए उसको धारण कर लें, जिससे कि हम वो स्थान प्राप्त कर सकें जो जीवन में दुर्लभ है। आज के परिवेश में, आज के वातावरण में, आज के विचारों में लोगों के संपर्क के कारण आप इस चीज को समझे या नहीं समझें। महानता क्या है और सामान्यता क्या है? शायद आप नहीं समझेंगे। आपको समझ में आएगा तो महानता तक पहुंचा जाएगा। वहां का एक अलग आनन्द है। जिसने शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया है वह समझ पाएगा कि शास्त्र का आनन्द क्या है। जो कालीदास पढ़ेगा वह

पाएगा कि कालीदास ने कितनी अद्भुत कल्पनाएं की हैं। आम आदमी



श्वेतश्वेतारोपनिषद भी 108 उपनिषदों में श्रेष्ठ उपनिषदों की गणना में आता है। उसमें एक श्लोक है

दधतां सदैव दधतां परिपूर्णस्त्वयं,  
उज्ज्ञान अन्ध दधतां सततं श्री देवः।  
तस्यैव दुर्भाग्य भाग्य वदतां सहितं पवित्रः  
स्वात्मैव कर्म भुक्ति न विधात् भर्त्॥

बहुत सुन्दर श्लोक और जीवन में उतारने लायक श्लोक है। ऋषि ने कहा भाग्य और दुर्भाग्य कोई चीज नहीं होती और विधाता जैसी भी कोई चीज नहीं होती। ऐसा कहीं भी उल्लेख नहीं कि पैदा होते हुए विधाता ने आपके ललाट पर कुछ लिख दिया हो, ऐसा कहीं शास्त्रों में उल्लेख नहीं है। शास्त्रों ने कहा है कि अहम् ब्रह्मास्मि, हम स्वयं ब्रह्म हैं, विधाता है तो दूसरे विधाता कौन से हो गए जिन्होंने आपके भाग्य में अच्छा या बुरा लिखा। ऐसा कौन सा विधाता पैदा हो गया?

विधाता का अर्थ है ब्रह्मा, निर्माण करने वाला, निर्मित करने वाला, रचने वाला और जब विधाता है ही नहीं तो भाग्य जैसी भी कोई चीज नहीं है। उसका निर्माण भी हम ही करते हैं क्योंकि यदि पढ़े लिखे हैं तो मिलटन, शेक्सपीयर को पढ़कर समझ सकते हैं, अंग्रेजी पढ़े लिखे नहीं तो उनके काव्य को नहीं समझ सकते।

ठीक उसी प्रकार यदि हम ब्रह्म नहीं हैं तो भाग्य का निर्माण नहीं कर सकते। जो नहीं निर्माण कर सकते वह विनाशकारी है उसको भाग्य नहीं कह सकते। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे पास मकान नहीं है, यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम सफल नहीं हुए या पूर्णता प्राप्त नहीं की। हमारी केवल ईश्वर पर आश्रित होने की आदत पड़ गई है।

यह बहुत बड़ी बात कही है इस उपनिषद ने। बाकी सब शास्त्रों ने ईश्वर के अस्तित्व को माना है। इस उपनिषदकार ने कहा कि हम स्वयं ब्रह्म हैं तो फिर विधाता कौन है? हम स्वयं विधाता हैं। इसलिए ब्रह्म की परिभाषा इस श्लोक में की गई है कि ब्रह्म पाँच साल का प्रह्लाद भी पूर्ण ब्रह्म था, शुकदेव पाँच साल के थे तब भी पूर्ण ब्रह्म थे और कश्यप अस्सी साल के थे तब भी पूर्ण ब्रह्म नहीं थे। जो गुरु के समीप रह सकता है और गुरु के हृदय में प्रवेश कर सकता है वह ब्रह्म है। यह श्लोक ने परिभाषा दी है। जो गुरु के समीप रहता है शारीरिक रूप से या आत्मिक रूप से वह ब्रह्म है और वह गुरु के हृदय में प्रवेश करे। गुरु को भी आप पर स्नेह रहे, वह तब रहेगा जब आपका कार्य होगा, जब आप नजदीक होंगे, आप उनके आत्मीय होंगे। इतने नजदीक कि आप उपनिषद बन जाएंगे। आप उनके हृदय में उतर जाएंगे तब आप ब्रह्म बन जाएंगे।

ब्रह्म की व्याख्या ऋषि ने बिल्कुल नए तरीके से की। ब्रह्मचारी रहने को ब्रह्म नहीं कहा, शास्त्र पढ़ने वाले को ब्रह्म नहीं कहा गया और ऐसे सैकड़ों ऋषि हुए जिन्होंने विधिवत ज्ञान प्राप्त नहीं किया, विद्यालय में नहीं पढ़े और उन्हें ब्रह्म कहा गया।

विश्वमित्र सैकड़ों वर्षों तक ब्रह्म कहलाए ही नहीं। ब्रह्म ऋषि नहीं कहलाए। राज ऋषि



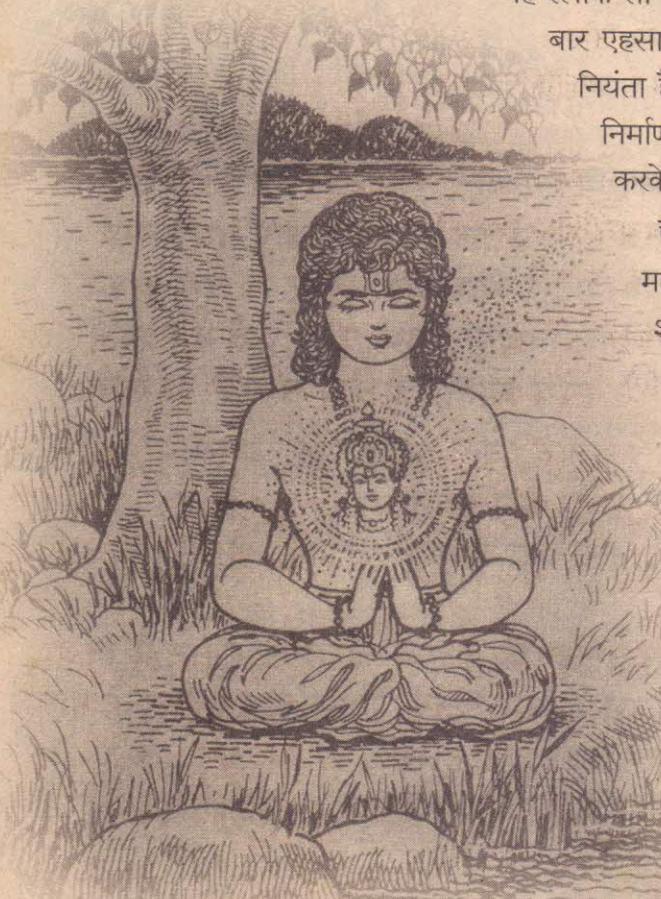
कहलाए। बहुत बाद में ब्रह्मऋषि कहलाए क्योंकि वे अपने गुरु के हृदय में उतर नहीं पाए। अपने अहंकार की वजह से, घमंड की वजह से अलग धारणाओं की वजह से ब्रह्म ऋषि नहीं कहला पाए और बहुत बाद में जब गुरु के हृदय में उतर सके तो ब्रह्म ऋषि कहलाए।

इसका तात्पर्य यह है कि जो गुरु को हृदय में उतर सकता है चाहे जो भी हो, चाहे मैं ही हूँ और उनका इतना प्रिय बन सकूँ कि उनके हृदय में उतर सकूँ, उनके होठों पर अपना नाम लिखवा सकूँ, गुरु को याद रहे, कि यह कौन है। हजारों लाखों शिष्यों के नाम होठों पर नहीं खुदते और होठों पर नाम अंकित करने के लिए गुरु के हृदय में उतरना आवश्यक होता है और उसके लिए असीम प्यार की आवश्यकता होती है। समर्पण की आवश्यकता होती है और प्राणों से प्राण जुड़ने की जब क्रिया होती है तो प्राणों में उतारा जा सकता है। जब उसके बिना रह नहीं सके तो हृदय में उतारा जा सकता है। जिसके बिना संसार सूना-सा लगे उसके हृदय में उतारा जा सकता है।

हृदय में उतरने के लिए आपकी परसनैलिटी आपकी सुन्दरता, आपकी महानता, आपकी विद्वता, आपका ज्ञानता वे सब अपने आप में गौण हैं। इसलिए श्वेतश्वेतारोपनिषद् ने भाग्य और दुर्भाग्य की बिल्कुल नयी व्याख्या की। उसने सब कुछ आपके हाथ में सौंप दिया कि आप स्वयं ब्रह्म हैं, आप स्वयं भाग्य निर्माता हैं, आप स्वयं दुर्भाग्य के निर्माता हैं, आप स्वयं उपनिषदकार हैं और आप स्वयं उपनिषद हैं। आप स्वयं गुरु के हृदय में उतरने की क्षमता रखते हैं, आप स्वयं गुरु के हृदय में न उतरने की क्षमता रखते हैं। सारी बागडोर आपके हाथ में सौंप दी उस उपनिषदकार ने और मैं समझता हूँ कि 108 उपनिषदकारों में से इसने बिल्कुल यथार्थ चिंतन किया है।

यह श्लोक सोने के अक्षरों में लिखने के योग्य है। इसलिए कि पहली बार एहसास हुआ कि हम सामान्य मनुष्य नहीं है, हम स्वयं नियंता हैं, निर्माणकर्ता हैं। मैं बहुत कुछ हूँ और मैं स्वयं का निर्माण करने वाला हूँ और मैं सामान्य शरीर से प्रारम्भ हो करके बहुत ऊँचाई तक पहुँचने वाला हूँ।

पैदा होते समय व्यक्ति महापुरुष नहीं होता। एक भी महापुरुष पैदा नहीं हुआ। आगे जाकर के महापुरुष बने। शुरू में राम अपने आप में महापुरुष थे नहीं। न कृष्ण महापुरुष थे, न बुद्ध महापुरुष थे। राजा के पुत्र थे वे सब। शुरू में सामान्य बालक थे वैसे ही दौड़ते थे, घूमते थे, खेलते थे। वैसे ही थे जैसे हम और आप हैं। बाद में जाकर उन्होंने उस चीज को समझा जिसका मैंने अभी उल्लेख किया कि मुझे अगर कुछ निर्माण करना है और कुछ बनना है तो मेरी बागडोर मेरे हाथ में है। जब यह भाव आपके मन में रहेगा तो यह भाव भी रहेगा कि कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। यह भाव हो कि मैं तो अपना खुद का हूँ नहीं, मैं किसी के हृदय में उतर चुका हूँ।



जब उतर चुका हूँ तो यह उनकी ड्यूटी है कि वह मुझे  
उस जगह पहुंचाए। पत्नी शादी करने के बाद निश्चित  
हो जाती है कि यह पति की ड्यूटी है कि झौपड़ी में  
रखें, महल में रखें, गहने पहनाए या नहीं पहनाए,  
मारे या प्यार करे। वह अपना हाथ उसके हाथ  
में सौंप देती है।

इसलिए कबीर ने कहा कि मैं राम की  
बहुरिया हूँ। इसीलिए सूर ने कहा कि मैं कृष्ण  
की प्रेयसी हूँ। इसलिए जायसी ने कहा कि मैं  
तो सही अर्थों में नारी हूँ, ईश्वर की चेरी हूँ,  
दासी हूँ।

ये सब पुरुष हैं जिन्होंने ये बातें कहीं और  
इसलिए कहा कि इन्होंने अपने आप को ईश्वर के  
हाथों में सौंप दिया है और आप गाते हैं कि अब  
सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। है  
जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।

मगर जीवन में यह भाव उतारने की क्रिया होनी चाहिए  
केवल बोलने की क्रिया नहीं होनी चाहिए। बोलने से आप अपने  
आप में ही रहेंगे। करने की क्रिया से आप उनके हृदय में उत्तर सकेंगे।  
अंतर यहीं पर आता है। जब आप अपने आपको पूर्ण रूप से समर्पित कर  
ब्रह्म बन पाएंगे।

देंगे तो

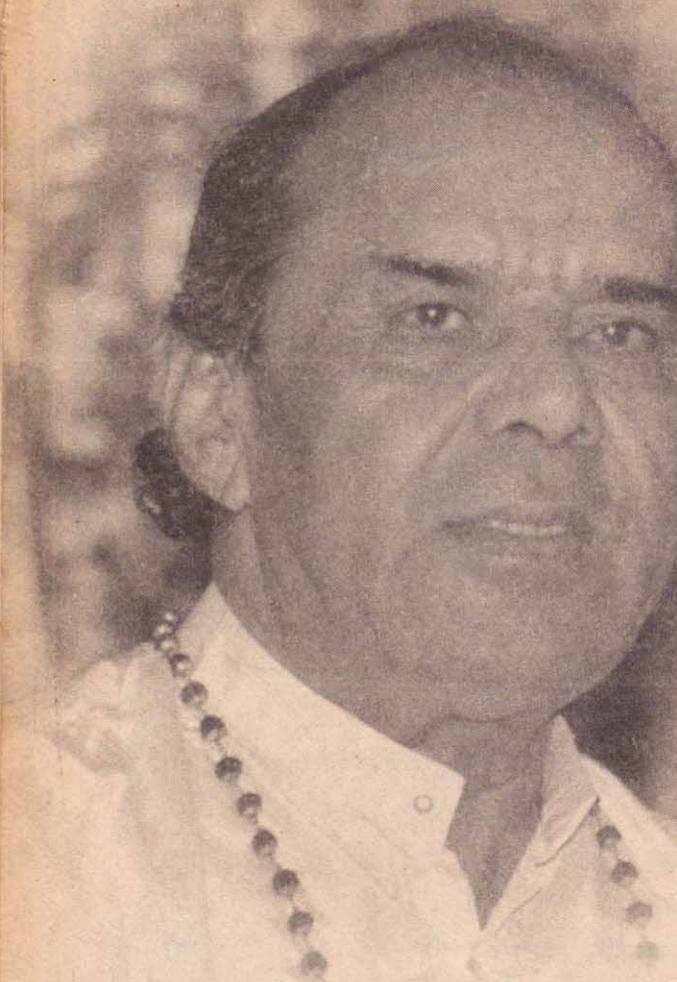
पूर्ण रूप से समर्पित करने का मतलब है कि आप अपना अस्तित्व खो दें, यह भूल जाएं कि मैं क्या हूँ तो  
आप कुछ प्राप्त कर पाएंगे और जिसने खोया है उसने सब कुछ प्राप्त किया है। मैं शिष्यों के पास बैठता हूँ तो  
एक घण्टा खोता हूँ। मगर यह नहीं खोता तो आपका प्यार, आपका समर्पण नहीं पाता।

बिना खोए कुछ प्राप्त नहीं किया जा सकता और खोने के लिए चिंतन नहीं किया जाता। उसके लिए तो अंदर  
का भाव होना चाहिए और अंदर के भाव के लिए संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है। संकल्प शक्ति ही व्यक्ति  
को पूर्ण ऊँचाई तक पहुंचा सकती है।

हम द्रंद में जीते हैं और पूरा जीवन द्रंद में बिता देते हैं। चाहे गृहस्थ हैं या सन्न्यासी हैं पूरा जीवन द्रंद में बिताते  
हैं जीवन के अस्सी साल की उम्र में सोचते हैं क्या करें, क्या नहीं करें। प्रतिक्षण आपके मन में तर्क-वितर्क  
चलता ही रहता है और आप निर्णय नहीं कर पाते। लोग जहां आपको ठेलते हैं आप ठेल जाते हैं क्योंकि आप  
अपने हाथ में नहीं होते।

ऐसे व्यक्ति असाधारण होते हैं, मुट्ठी भर व्यक्ति, लाख में से एक दो व्यक्ति अपना जीवन अपने हाथ में रखते  
हैं। औरंगजेब जब राजा बना तो उसको हाथी पर बिठाया गया कि हमारे यहां पर यह परंपरा है कि हाथी पर  
बैठकर राजतिलक किया जाता है। औरंगजेब पहली बार हाथी पर बैठा सीढ़ी लगा करके बैठने के बाद उसने  
कहा मुझे लगाम दीजिए जिससे कि मैं ऐसे चलाऊं, जैसे घोड़े की लगाम होती है, ऊंट की होती है।

उसने कहा - शहशांह-ए-आलम हाथी की लगाम नहीं होती।



करते

बनूंगा, वीर विक्रमादित्य बनूंगा, तो आप एक कदम आगे बढ़ जाते हैं। विक्रमादित्य भौतिक दृष्टि से एक पूर्णता प्राप्त राजा और नानक एक फक़ड़ साधु दोनों की तरह जीना चाहें तो राजा की तरह जीएं। मगर गधे की तरह काम करेंगे तो राजा की तरह जी पाएंगे। शेक्सपीयर ने कहा है कि दिन में गधे की तरह जीना चाहिए और रात में राजा की तरह जीना चाहिए।

श्वेतश्वेतारोपनिषद में कहा है कि वह चाहे बालक हो, पुरुष हो या स्त्री हो जो जीवन अपने हाथ में रखता है या गुरु के हाथ में रखता है वही सफल हो सकता है। सिक्के को हम दो भागों में नहीं बांट सकते कि यह सिक्का अगला भाग है और यह पिछला भाग है। सिक्के के दो भाग अलग-अलग होते नहीं। एक ही सिक्के के दो भाग होते हैं।

इसी तरह एक ही परसनैलिटी के दो भाग होते हैं जिसमें एक को गुरु कहते हैं, एक को शिष्य कहते हैं। दोनों को मिलाकर एक पूरा सिक्का बनता है यही जीवन में चलता है।

जब शिष्य गुरु में मिल जाता है, प्रसन्नता के साथ में तो यह मिलना एक निष्ठता की वजह से होता है। एक निष्ठता का अर्थ है निरंतर गुरु कार्य में संलग्न और सचेष्ट रहना। मेरा मतलब यह नहीं है कि आप मेरा काम करें। मैं तो केवल श्लोक का अर्थ स्पष्ट कर रहा हूँ।

वह एकदम से नीचे उतर गया, उसने कहा कि मैं इसकी सवारी नहीं करूँगा जिसकी लगाम नहीं होती। मैं यह सवारी नहीं कर सकता, यह सवारी मेरे काम की नहीं है।

वह जीवन भी काम का नहीं है जिसकी लगाम आपके हाथ में नहीं है। आपका अर्थ है कि शिष्य और गुरु का एकात्म क्योंकि आप तो अपने को समर्पित कर चुके। वह जीवन जीना बेकार है जो आपके हाथ में नहीं है, वह जीवन सार्थक है जिसमें गुरु से सामीप्यता हो, पूर्णता के साथ सामीप्यता हो, प्रेम के साथ सामीप्यता। मजबूरी के साथ सामीप्यता नहीं हो सकती, छल, कपट और झूठ के साथ सामीप्यता नहीं हो सकती।

यदि आप कोई गाली दें तो कोई उसे सुने या नहीं सुने, गुरु उसे सुने या नहीं सुने मगर वातावरण में वह बात तैरती है और आपको नीचे के धरातल पर उतार देती है। आप जब भी ऐसी कोई बात करते हैं, निन्दा करते हैं या गाली देते हैं तो अपने आप में एक सीढ़ी नीचे उतर जाते हैं। जब भी आप चिन्तन हैं कि आप उन मुट्ठी भर लोगों में से एक बनेंगे, बनूंगा तो नानक

हैं कि आप उन मुट्ठी भर लोगों में से एक बनेंगे, बनूंगा तो नानक

आप गुरु को देखें या नहीं देखें परन्तु प्रतिक्षण उनके कार्य में संलग्न रहते हैं, सचेष्ट रहते हैं, निरन्तर आगे बढ़ कर उनके कार्य को करते हैं तो मन में एक संतोष होता है कि मैंने वास्तव में एक क्षण को जीया है, फेंका नहीं है इस क्षण को। इस क्षण में मैंने कुछ सृजन किया है, व्यर्थ नहीं किया है इस क्षण को। इस क्षण में कुछ रचना की है, गालियां नहीं दी हैं। इस क्षण में किसी का स्मरण किया है, किसी के हृदय में उत्तरने की क्रिया की है। क्षण आपका है, आप चाहें दो घंटे ताश में बिता दें, या चाहे आप चिंतन करके या कोई कार्य करके बिता दें।

भाग्य या जीवन तो आपके हाथ में है। सामान्य मनुष्य बस जीवन जी कर बिता लेते हैं। आप जाकर देख लें सड़क पर सब सामान्य मनुष्य है। उनमें कुछ विशेषता है ही नहीं, उन्हें पता ही नहीं कि उनके आस-पास कौन रहता है।

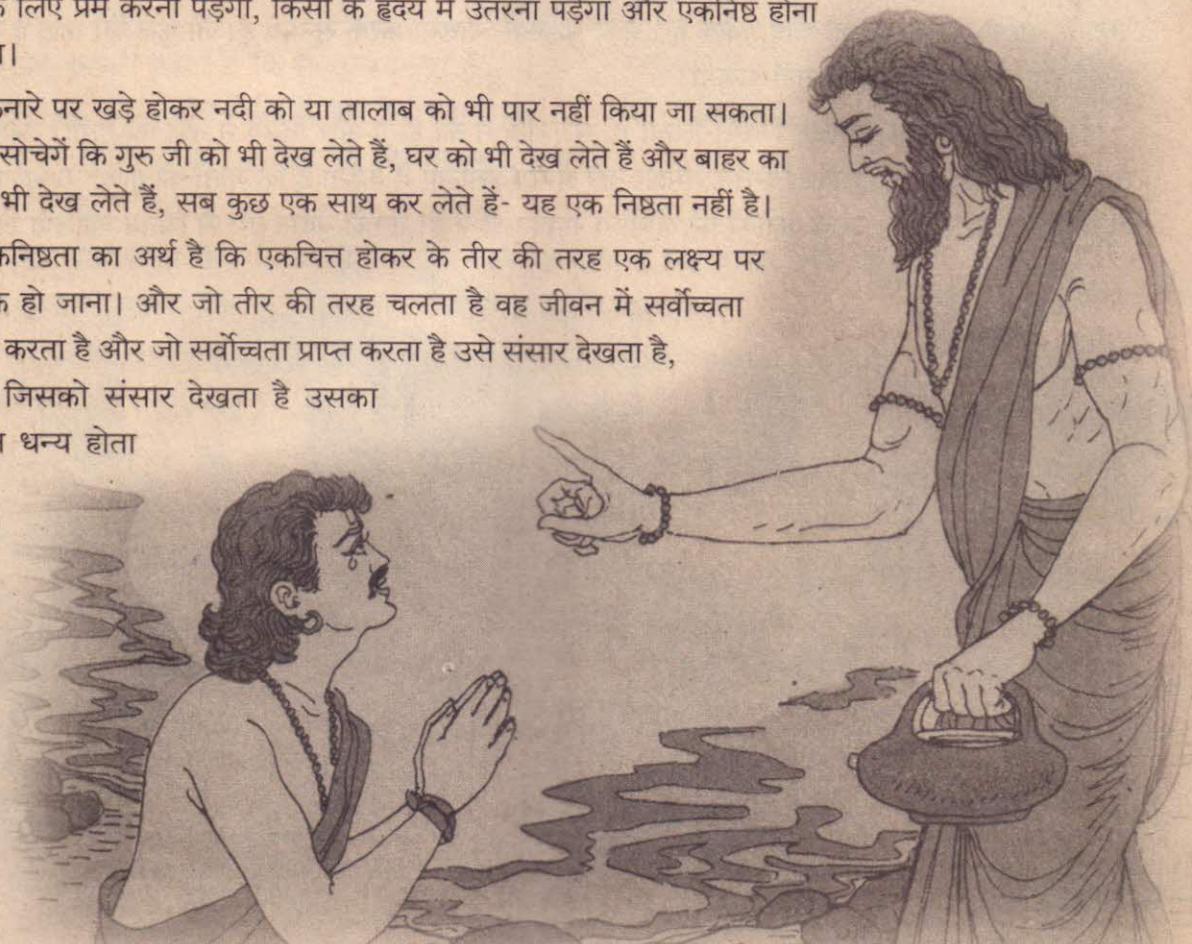
शिव कहां रहते हैं यह मुझे मालूम है क्योंकि हर क्षण मैंने सृजन किया है। इस पद को प्राप्त करने के लिए तिल-तिल करके अपने खून को जलाया है। जलाया है तो आज पूरा देश, पूरा विश्व मानता है कि यह कुछ परस्नैलिटी है। उस सृजन को करने के लिए व्यक्ति को अपने आप को जलाना ही पड़ता है।

खून जल जाता है तो वापस आ जाता है, मांस जल जाता है तो वापस आ जाता है, मगर गया हुआ समय वापस नहीं आता। अगर मैं कंकाल भी हो जाऊं, मांस भी गल जाए तो मांस वापस चढ़ जाएगा। मांस चढ़ाने वाले बहुत मिल जाएंगे जो मिठाई खिला देंगे, धी खिला देंगे, मालिश कर देंगे तो मांस चढ़ जाएगा।

मगर कोई मुझे ज्ञान नहीं सिखा सकता, धर्म शास्त्र नहीं सिखा सकता, धर्म शास्त्र का सार नहीं सिखा सकता। कोई भाग्य का निर्माण करके मुझे नहीं दे सकता। मुझे महानता कोई नहीं दे सकता। वह तो सब मुझे खुद को प्राप्त करना पड़ेगा, इसके लिए खुद को जलाना पड़ेगा। उसके लिए रचनात्मक चिंतन करना पड़ेगा। उसके लिए प्रेम करना पड़ेगा, किसी के हृदय में उत्तरना पड़ेगा और एकनिष्ठ होना पड़ेगा।

किनारे पर खड़े होकर नदी को या तालाब को भी पार नहीं किया जा सकता। आप सोचेंगे कि गुरु जी को भी देख लेते हैं, घर को भी देख लेते हैं और बाहर का काम भी देख लेते हैं, सब कुछ एक साथ कर लेते हैं- यह एक निष्ठता नहीं है।

एकनिष्ठता का अर्थ है कि एकचित्त होकर के तीर की तरह एक लक्ष्य पर अचूक हो जाना। और जो तीर की तरह चलता है वह जीवन में सर्वोच्चता प्राप्त करता है और जो सर्वोच्चता प्राप्त करता है उसे संसार देखता है, और जिसको संसार देखता है उसका जीवन धन्य होता



Wi

है।

P

और आपकी पीढ़ियां जो स्वर्ग में बैठी होती हैं वे भी धन्य अनुभव करती हैं कि हमारे कुल में कोई तो पैदा हुआ जो पूरे भारत में विख्यात है पूरा भारतवर्ष इनको स्मरण करता है, इनकी आवाज पर लाखों लोग एकत्रित हो जाते हैं। इनकी आवाज पर लाखों लोग नाचने लग जाते हैं, झूमने लग जाते हैं। उन्हें भी लगता है कि कुछ तो है इस बालक में कुछ है और उनको वह प्यारा अनुभव होता है।

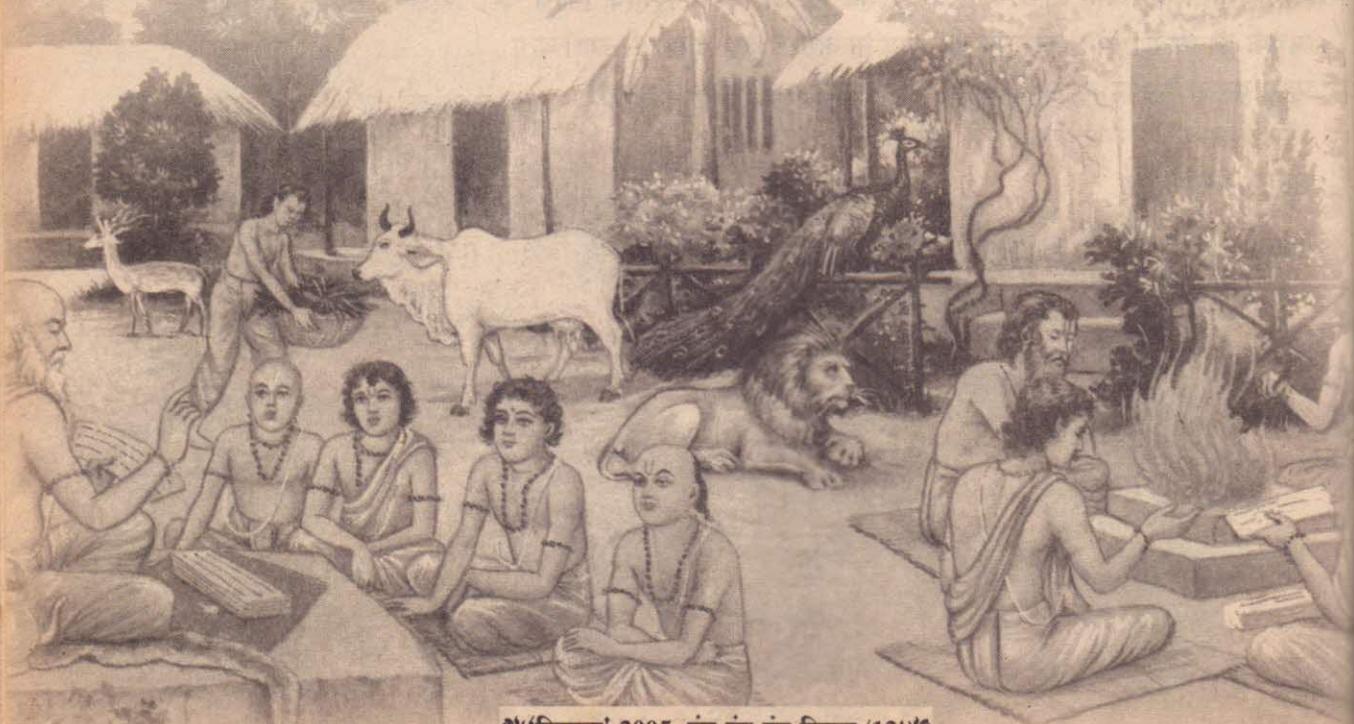
और व्यक्ति पहले दिन से लगाकर अंतिम दिन तक बालक ही रहता है यदि सीखने की क्रिया हो, निरन्तर आगे बढ़ने की क्रिया हो, यदि प्यार करने की क्रिया हो और वह क्रिया भी आपके हाथ में है।

इस उपनिषद में कहा गया है कि सब कुछ आपके हाथ में है आप कैसा जीवन जीना चाहते हैं, घटिया, रोते-झींकते हुए दुख में अपने जीवन को बर्बाद करते हुए या अपने आप एकनिष्ठता प्राप्त करते हुए जीवन में प्रत्येक क्षण आनन्द प्राप्त करते हुए मुस्कुराहट के साथ में, चिन्तन के साथ में, कार्यों में डूबते हुए और अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए।

कैसा जीवन आप व्यतीत करना चाहते हैं? वह आपके हाथ में है और यही आपके भाग्य का निर्माण करने वाला तथ्य होता है। इसलिए मैं हर क्षण को रचनात्मक बनाने की ओर अग्रसर रहता हूँ। यहाँ भी आया हूँ तो इससे पहले चार पेज लिख कर आया हूँ और भी लिखा है वह मौलिक लिखा है, जो कुछ बोल रहा हूँ वह मौलिक है क्योंकि मैं मौलिक व्यक्ति हूँ, नकलची व्यक्ति नहीं हूँ। मैं झूठन नहीं खाता हूँ, मैं झूठ नहीं बोलता हूँ।

लोग बोल चुके हैं वहीं वापस अपने शब्दों में नहीं सुनाता हूँ। जो किसी ने आज तक नहीं बोला है वह प्रवचन में बोलता हूँ और पिछले पचास वर्षों में किसी के द्वारा कही गयी बात मैंने नहीं सुनाई है। जो कुछ मैंने अनुभव किया है वह मैं सुनाता हूँ। जो कोई श्लोक है उसकी मौलिक व्याख्या करके सुनाता हूँ। जो कुछ मैंने कहा है वह कालजयी है, काल उसे मिटा नहीं सकेगा।

जो श्लोक है उसकी व्याख्या जिसने लिखा है उस क्रष्ण ने की होगी और किसी ने नहीं की होगी। उसका तथ्य समझा नहीं होगा, उसका चिन्तन समझा नहीं होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि गीता को कृष्ण के अलावा किसी ने समझा नहीं है। उनके श्लोकों को लोगों ने समझा ही नहीं। उनकी नवीन ढंग से चितंन व्याख्या होनी



आवश्यक है यह एक जीवन का मेरा लक्ष्य है, उद्देश्य है।

आपका भाग्य दुर्भाग्य, आयु पूर्णायु, अमरत्व और मृत्यु, पूर्णता और अपूर्णता सब कुछ आपके हाथ में है, मगर उसका बेस एकनिष्ठता है।

आप जीवन में एकनिष्ठ बनें ऐसा ही मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

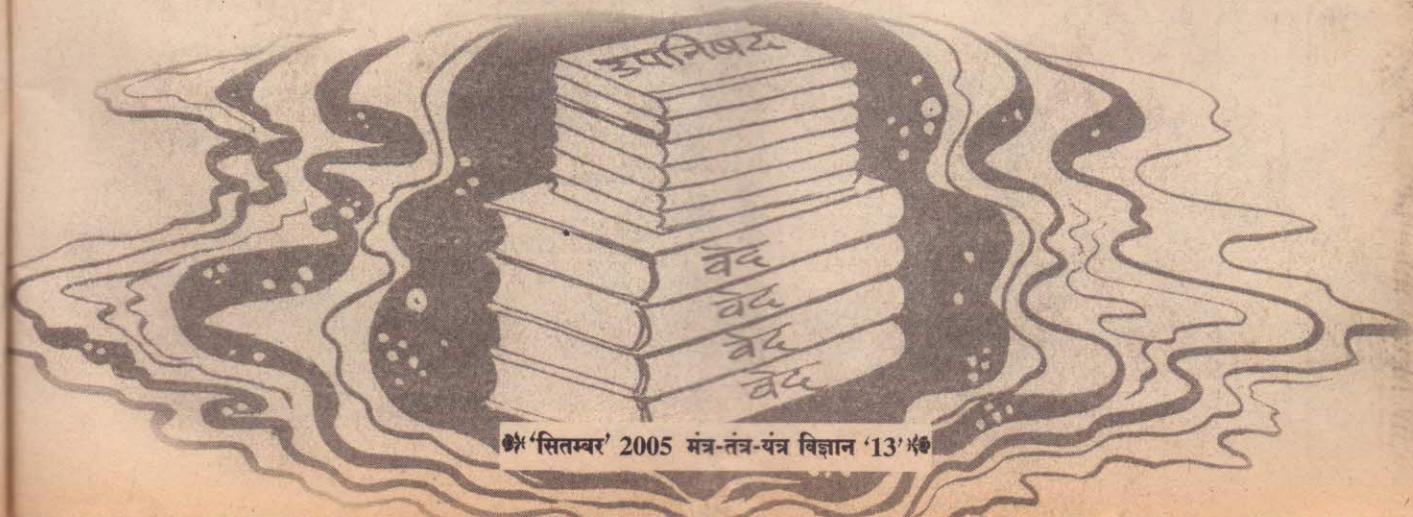
श्वेतश्वतारोपनिषद् बहुत ही महत्वपूर्ण उपनिषद् है और इसका भाव विश्व आज नहीं तो कल अवश्य ही समझेगा और जब समझेगा तो यह ग्रंथ सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा होगा। इस उपनिषद् में क्रष्ण ने अपने सारे ज्ञान को बांध कर रख दिया है और उन्होंने कहा कि व्यक्ति में कमी है ही और यह कमी रहेगी भी कि वह समझते हुए भी नामसङ्ख बना रहता है। जानते हुए भी अज्ञानता अपने अंदर स्थापित करता रहता है, प्रकाश की किरण बिखरने पर भी वापस अंधकार में स्वयं को ठेल देता है।

क्रष्ण यह कहना चाहता है कि मैं समझा रहा हूँ शिष्यों को मगर शिष्य पाँच मिनट के बाद फिर इस ज्ञान की किरण पर अपने अंधकार को ढक देंगे और मेरा कहा हुआ बेकार हो जाएगा।

जो चिंतन मैंने प्रस्तुत किया है कह दो मिनट या पांच मिनट रहेगा और वापस इसके ऊपर रेत जम जाएगी और यह चिंतन समाप्त हो जाएगा। यह व्यक्ति का स्वभाव है और रहेगा।

और जो इस स्वभाव को धक्का मार कर आगे निकल जाता है वह अपने आप में ऊँचाई की ओर पहला कदम रखता है।

तो क्रष्ण ने पहली बार यह कही कि व्यक्ति जानते हुए भी अनजान बना रहता है क्योंकि अनजान बना रहना उसकी प्रवृत्ति है। अनजान इसलिए बना रहता है कि वह सुरक्षित है, वह कहता है मुझे इसका ज्ञान नहीं क्योंकि



Wi

F

इससे कोई लाभ नहीं। परंतु ऐसा कहकर, वह अपने को छलावा देता है, दुनियां को मूर्ख नहीं, बना रहा है अपने को मूर्ख बना रहा है।

दुनियां जैसी चीज इस संसार में है ही नहीं। दुनियां जैसा शब्द है ही नहीं, संसार जैसा शब्द है ही नहीं। देश जैसा भी कोई शब्द नहीं है। क्योंकि देश या संसार या विश्व ये सब व्यक्तियों के समूह से बनते हैं। ऐसा नहीं कह सकते कि यह देश है। एक नकशा है वह देश तो हो नहीं सकता। देश के लिए आवश्यक है कि लोग हो। एक निश्चित भूभाग पर रहने वाले लोग देश के निवासी कहलाते हैं। आप भारत वर्ष के लोग हैं इसलिए भारत वर्ष है। भारत में कोई मनुष्य रहेगा ही नहीं तो भारत वर्ष होगा ही नहीं।

इसलिए देश जैसी चीज नहीं मनुष्य जैसी चीज है। चाहे वह मनुष्य लूला हो, लंगड़ा हो, ज्ञानी हो, अज्ञानी हो कैसा भी हो। और अगर किसी बात को वह नहीं समझेगा तो देश भी नहीं समझेगा। वह अंधकार में होगा तो देश भी अंधकार में होगा। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में देश है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में राष्ट्र है क्योंकि व्यक्ति मिलकर ही अपने आपमें राष्ट्र बनते हैं।

इसलिए राष्ट्र पुरुष की कल्पना की गई है श्वेतश्वेतारोपनिषद में, राष्ट्र भू भाग की कल्पना नहीं की गई। व्यक्ति राष्ट्र है, देश कोई चीज नहीं है, राष्ट्र कोई चीज नहीं है।

आप मिलकर के बैठे हैं तो समाज है। यह तेली समाज है, यह ब्राह्मण समाज है या कोई भी समाज है, तो वह समुदाय विशेष है जिसमें लोग हैं कोई। एक ही तरह के काम करने वाले हैं इसलिए वह जाति या समाज है और ये ही समाज मिल जाते हैं तो देश बन जाता तो मूलाधार तो मनुष्य है और अगर मनुष्य अपने ऊपर अंधकार की चादर ओढ़ लेगा तो ज्ञान आ ही नहीं सकता।

मनुष्य जानबूझ कर इसलिए अनजान बना रहता है क्योंकि इसमें कुछ प्रयत्न नहीं करना पड़ता इसलिए देश आगे नहीं बढ़ पाता है या तो भौतिक क्षेत्र में बढ़ जायेगा और आध्यात्मिक क्षेत्र में पीछे रह जाएगा जैसे अमेरिका है। उसके पास अणुबम है परंतु मनुष्यों को प्रसन्नता देने योग्य कोई चीज नहीं है। और आपने अमेरिकियों को देखा नहीं होगा-हरदम उदास, चिंताग्रस्त, तनावग्रस्त दुखी रहते हैं।

एक भी अमेरिकी व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं है। मुस्कुराहट केवल शब्दकोश में रह गई है वहां पर। व्यक्ति एक यंत्र बन गया है वहां पर पति पत्नी, बेटा बेटी सभी।

मैंने उनके समाज को देखा है दो दो महिने एक बार न हीं

दस बार उनके यहां रहा हूं। वे सुबह पांच बजे उठते हैं, दौड़ते हैं। स्नान करते हैं पत्नी भागती है, नौकरी की तरफ, उसे चिंता नहीं है कि पति उठा या नहीं उठा। और पति फिर उठता है, खुद चाय बनाता है और भाग जाता है, काम पर। बेटी भी खुद चाय बनाती है और चली जाती है क्योंकि हरेक की अलग-अलग नौकरी है। और हफ्ते में एक बार सब मिल पाते हैं संडे के दिन। तब मालूम पड़ता यह मेरे पिता है, इनका चेहरा, ऐसा है, ये मेरा बेटा है इसका चेहरा ऐसा है।

रात को कोई दस बजे आता है, कोई ग्यारह बजे आता है, कोई नौ बजे आता है, सब डिनर बाहर करते हैं। जीवन का वह सब आहलाद, वह खुशी समाप्त हो जाती है क्योंकि भौतिक क्षेत्र में तो वे बहुत आगे बढ़ गए परंतु उनका यह जो मूल ज्ञान है वह समाप्त हो गया।

और यह समाप्त हो गया तो जीवन का कोई अर्थ है ही नहीं। और अगर आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ गए और भौतिक क्षेत्र में पीछे रह गए तो भी बेकार हो गए।

इसलिए उस भौतिकता को आध्यात्मितकता द्वारा प्राप्त किया जाए। मैं आध्यात्मिकता को धर्म के अर्थ में नहीं ले रहा हूं। आध्यात्मिकता

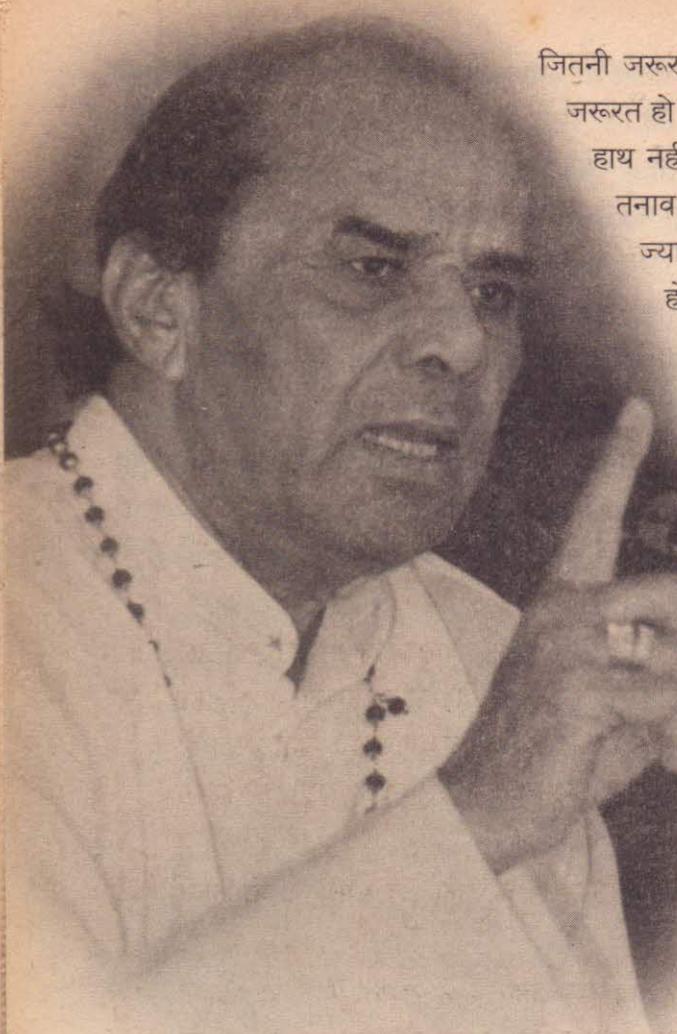
धर्म नहीं है। धर्म तो एक अलग चीज है।

आप मजबूर हैं कि आपने हिंदू के घर  
जन्म ले लिया तो आप हिंदू हैं,  
यदि आप मुसलमान के घर  
जन्म लेते हैं तो आप मुसलमान  
हैं। आपके हाथ में नहीं था  
मुसलमान बनना या ईसाई बनना  
या हिंदू बनना। यह तो एक संयोग है,  
चांस है कि हिंदू के घर जन्म ले लिया।  
आपकी चाँड़स नहीं थी।

आदमी अंधकार की चादर, ओढ़कर बहुत प्रसन्नता अनुभव कहता है और उपनिषदकार कहता है कि इसीलिए मेरा सारा कहना व्यर्थ है। आदमी समझेगा ही नहीं और समझने की कोशिश ही नहीं करेगा और कोशिश नहीं करेगा तो मेरा चीखना चिल्लाना व्यर्थ हो जाएगा। ऋषि अपने शिष्यों से ऐसा कहता है।

ऋषि कहता है कि जीवन का उद्देश्य क्या है और वह कहता है कि भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वोच्चता प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य है। ऊंचाई प्राप्त करना नहीं है, सर्वोच्चता प्राप्त करना है और उसने भौतिक आध्यात्मिक दोनों शब्द प्रयोग किए हैं।

भौतिकता का तुम्हारा अर्थ अगर बहुत विलास करना,  
दौलत, अद्याशी और फाइव स्टार होटल हैं तो  
गलत है। भौतिकता का अर्थ है कि कहीं  
किसी के सामने हाथ नहीं  
पसारना पड़े और  
ज ह।



नहीं होगा।

तो मन से हम कैसे लड़ें? मन से लड़ने के लिए धारणा शक्ति हो। ध्यान धारणा और समाधि ये तीन शब्द हैं। मन में धारणा शक्ति हो कि मुझे सर्वोच्चता प्राप्त करनी ही है। बस एक ही लक्ष्य एक ही बिंदु, एक ही जीवन का चिंतन, एक ही विचारधारा।

और उसका आधार ईमानदारी होता है। ईमानदारी नहीं है तो सर्वोच्चता प्राप्त हो नहीं सकती। पापियों को सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती तस्करों को या वेश्याओं को सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती। झूठ बोलने वाले व्यापारियों या छल करने वाले व्यक्तियों को सर्वोच्चता प्राप्त नहीं हो सकती। वे हर दम मन में डरते हैं, सशंकित रहते हैं। हरदम मन में तनावग्रस्त रहते हैं। पैसा तो है पर नीद नहीं आती। वे सर्वोच्च नहीं हैं।

सर्वोच्च की परिभाषा ऋषि ने दी है कि भौतिकता और आध्यात्मिकता में परिपूर्णता प्राप्त करना और अपने आप में पूर्ण आनंद महसूस करना।

और जो करोड़पति है उससे तो ज्यादा करोड़पति है उससे तो ज्यादा करोड़पति अमेरिका के सफाईकर्ता है। बीस लाख की गाड़ी में सफाईकर्ता आती है, और सफाई कर के घर की चली जाती है अपनी आंखों से मैंने देखा है। जब मैं न्यूयार्क में था तो उसके घर में जो सफाईकर्ता थी वह कैडिलैक गाड़ी में आती थी। मैं बालकनी में बैठा था। उसने झाड़ू की बर्तन साफ किए और गाड़ी में बैठकर चली गई। मेरे आंखों देखी घटना है।

जितनी जरूरत हो मुझे प्राप्त हो जाए उसे भौतिकता कहते हैं। जितनी जरूरत हो उतना प्राप्त हो जाए लड़की की शादी के लिए किसी के आगे हाथ नहीं पसारना पड़े। उससे ज्यादा तो अपने आप में तनाव ही तनाव है। उसका कोई तनाव नहीं है। क्योंकि आवश्यकता से ज्यादा होते ही तृष्णाएं आरंभ हो जाएंगी। एक पंखा नहीं दो पंखे होने चाहिए। कूलर लगना चाहिए, ए.सी. लगना चाहिए।

फिर तृष्णाएं बढ़ जाएंगी और वापस चादर आ जाएंगी अंधकार की।

ऋषि ने कहा सर्वोच्चता प्राप्त करना जीवन का लक्ष्य है और सर्वोच्चता का प्रारंभ अंदर से होता है। इसलिए यजुर्वेद में कहा गया है -

**तस्मै मनः शिव संकल्पमस्तु।**

जीवन की सर्वोच्चता मन है। जीवन की सर्वोच्चता मन में धारण करने की शक्ति है। जीवन की सर्वोच्चता मन में उस चिंतन को बिठाने की शक्ति है। जीवन की सर्वोच्चता उस अंधकार को परे धकेलने के क्रिया है और वह अंधकार धकेल कर ही दूर किया जाता है। निश्चय कर लिया जाता है कि मुझे ऐसा करना है जब अंधकार आए उसे धकेल दिया फिर मन में विचार आए कि यह गलत है, मुझे तो करना यह है। यह संघर्ष व्यक्ति को करना पड़ेगा तो मन से लड़ना पड़ेगा। पड़ोसियों से लड़ने से और आस पास के लोगों से लड़ने से वह मामला हल नहीं होगा।

मैं यहां एक डाक्टर के घर में ठहरा था। मैंने कहा यह कौन है। वे बोले यह नौकरानी है। मैंने कहा- यहां की नौकरानी अगर कैडिलैक में चलती है तो हम तो कहीं खड़े ही नहीं हैं। वे बोले यहां तो सब ऐसा ही होता है। नाली साफ करने वाला अपनी गाड़ी में आता है और साफ करके चला जाता है।

अब कहां तुलना करोगो आप उस वैभव की। सफाईकर्ता की स्टेज यह है तो व्यापारी की स्टेज क्या होगी मगर उनके मन में फिर भी संतोष नहीं है। तो फिर वह जीवन का संतोष या आनंद नहीं है। जीवन का आनंद प्रेम है। जीवन का आनंद ईमानदारी है।

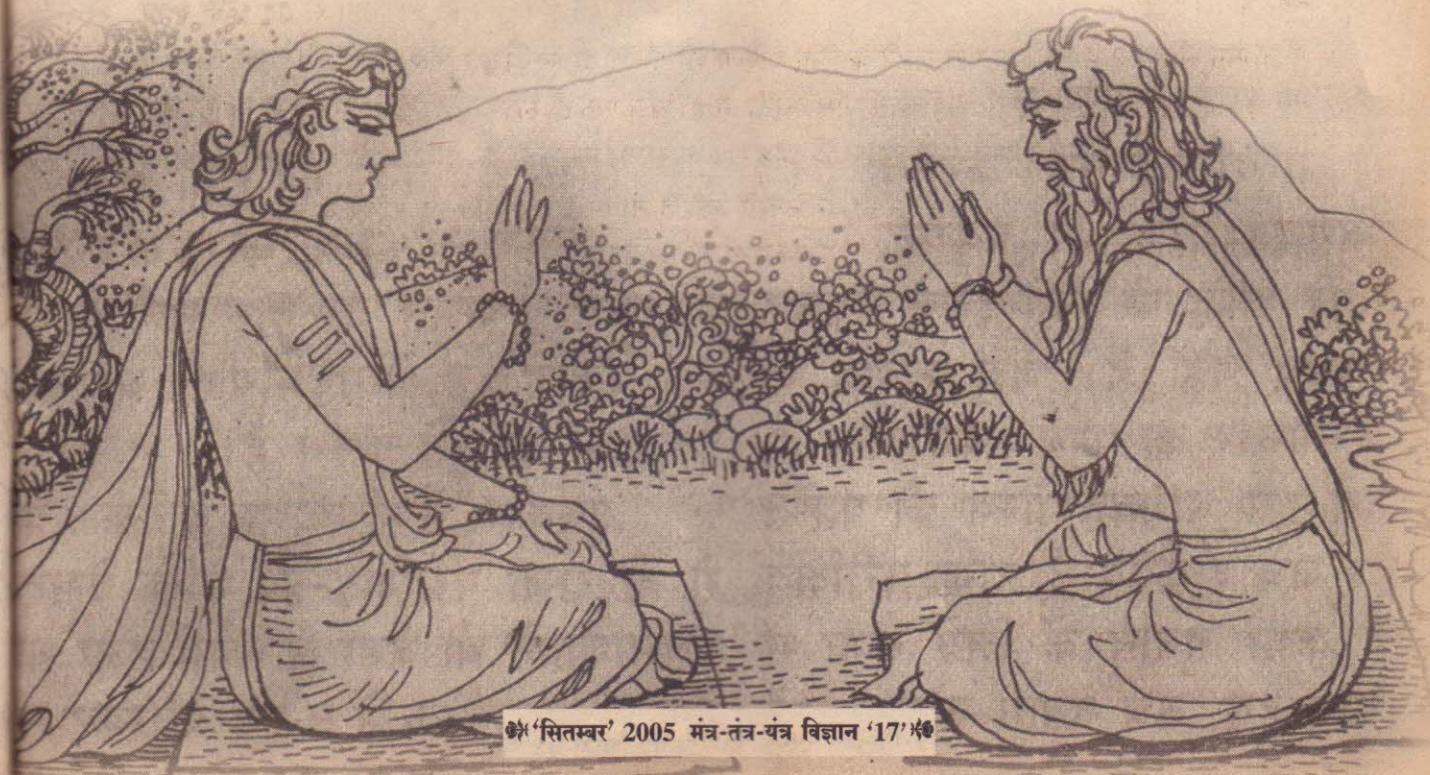
जब तक कार्य करे ईमानदारी के साथ करे। रात को सोएं तो मन में पूर्ण संतोष हो कि आज का दिन पूर्ण ईमानदारी के साथ व्यतीत हुआ। चोरी न करने को ईमानदारी नहीं कहते हैं, यह परिभाषा गलत है।

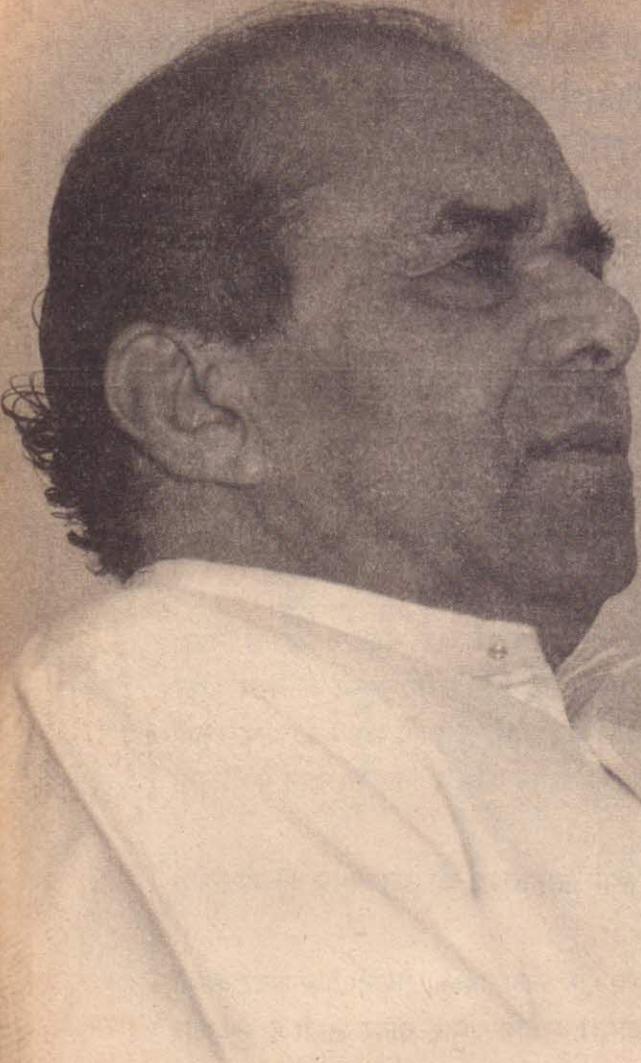
ईमानदारी का अर्थ है कि आपने आज अगर चार रोटी खाई हैं तो चार रोटी का हक अदा कर दिया है, चार रोटी खाई तो आठ का हक अदा कर दिया चाहे अपने घर में ही सही। मैं अपने घर में हूं और छ: रोटी का हक अदा कर दूं सलाह से, कार्य से या प्रेम से। जो मेरी इयूटी है उस प्रकार से। अगर अस्सी साल का हूं तो किसी न किसी तरह क्रियाशील बन कर के।

नौकरी कर रहा हूं, व्यापार कर रहा हूं तो पहली बात ईमानदारी है। और दूसरी बात ऋषि ने कही है निष्ठा। निष्ठा का अर्थ है कि पूर्ण लगन के साथ यह मुझे कार्य करना है। यह तनाव नहीं रहे कि मैंने समय को बरबाद कर दिया। क्योंकि समय वापस नहीं प्राप्त हो सकता। तुम करोड़ रुपये खर्च कर के भी बीते हुए समय को वापस नहीं प्राप्त कर सकते। आपकी आने वाली पीढ़ियां भी ऐसा नहीं कर सकती। आपने कल के दिन जो काम कर लिया वह कर लिया, उसको वापस नहीं ला सकते।

समय तो अपने आप में मूल्यवान है ही। निष्ठा का तात्पर्य है कि हमने उस इच्छा को उस समय को जी लिया और ईमानदारी के साथ निष्ठा के साथ काम करके जी लिया।

और तीसरी चीज ऋषि ने बताई है सर्वोच्चता का प्राप्त करने के लिए एक आह्लाद की रोशनी पैदा अंदर करनी पड़ेगी और पहली दो चीजें नहीं होंगी तो अंदर आह्लाद भी नहीं होगा। क्योंकि अगर चादर ओढ़ी है अंधकार की, आलस्य की तो कुछ नहीं हो सकता।





है कि  
माध्यम से।

तो तीसरी बात कि अंधकार भगा सकते हैं आहलाद के साथ, प्रसन्नता के साथ, कोई यह सोचे कि आज बहुत काम किया कल आराम करेंगे, चार दिन यात्रा करके आया अब तान करके सोऊंगा यह आलस्य के अंधकार को और बढ़ाएगा।

हम बार-बार घुसते हैं उस अंधकार में। ऋषि कह रहा है मैं बार-बार तुम्हें धकेल रहा हूं बाहर और तुम वापस उसमें घुसते हो। तुम्हारे मेरे बीच संघर्ष बस इतना ही है। मैं तुम्हे निकालता हूं और तुम बार-बार वापस अंधकार की चादर ओढ़ लेते हो।

इसलिए

**तस्मै मनः शिव संकल्प मस्तु।**

तुम्हारा मन इस चादर को हटाएगा तो वह चादर हटेगी। और ऐसा करते रहोगे तो अभ्यास हो जाएगा फिर आपको काम करने में स्फूर्ति मिलेगी। फिर आपको थकावट नहीं होगी।

और चौथी बात उसने बताई कि आहलाद से प्रसन्नता, मधुरता पैदा होगी। जो स्वयं को प्रसन्न रखता हो जो

और ये दोनों चीजें हैं ईमानदारी और निष्ठा तो उसके लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ेगा और निष्ठा के साथ काम करना है तो मन में आहलाद का होना आवश्यक है।

मन तो आलस्य की तरफ बढ़ेगा कि यह तो कहने सुनने की बात है। ऋषि तो यही कह रहा है कि मैं कहूंगा और आप कहेंगे कि यह सब किताबों की बात है। वह पहले ही कह रहा है कि शिष्य कहेंगे कि यूं ही कह रहा है और आप इस चीज को मन में धारण करेंगे नहीं और नहीं करेंगे तो साधारण व्यक्ति बन कर रह जाएंगे।

आप इस समाज में देश में गौरवान्वित नहीं हो पाएंगे और गौरवान्वित होने के लिए कोई रास्ता है ही नहीं। लखपति बनने से गौरवान्वित नहीं हो सकते आप। क्योंकि आपसे पहले करोड़ों लखपति हैं। चांदनी चौक में कोई इतने से खोके में भी बैठा है वह करोड़पति है। क्योंकि खोके की आज जो पगड़ी है वह कम से कम दस लाख है। दस लाख में तो वह खोका मिलता है, सामान तो बाद में आता है।

अब आप सोच लीजिए कि आप कहां पर हैं। तो संपन्नता से महानता नहीं बनती तो तीसरी बात यह बनी कि निश्चिंतता से उस अंधकार को धकेलना ही है। निष्ठा से यह सोच लेना मुझे अपने जीवन में सर्वोच्चता प्राप्त करनी ही है इन तथ्य के

आस पास के लोगों को प्रसन्न रखता है, यह अपने आप में सबसे बड़ा दान है। ज्ञान दान, या लक्ष्मी दान या लंगर लगाना यह तो बहुत सेकेंडरी चीज है।

पहला दान तो यह है कि हमारे अंदर आह्लाद का ऐसा स्रोत हो कि हम आसपास के वातावरण को आनंदमय बना दें। हमारे संपर्क में जो आए और वह अंधकार की चादर ओढ़े हुए हो तो हम उसको उस जगह खड़ा कर दें जहां आह्लाद हो, आनंद हो जहां कार्य करने की लगन हो, क्षमता हो, धन हो।

आप सोचे कि मुझे यह काम करना है, रात को सोते समय हिसाब देना है, या तो मेरा मन मुझे धिक्कारेगा या मेरा मन कहेगा कि यह कार्य पूरा कर लिया आज का दिन सार्थक हो गया। यह परीक्षा तो आपको स्वयं करनी होगी।

और पांचवीं चीज उसने कहीं है गुरु की आज्ञा। क्रष्ण यह नहीं कह रहा कि शिष्य मेरा काम करे। वह कह रहा है कि फिर कौन समझाएगा यह सब आपको। कौन बताएगा कि अंधकार की चादर तुम्हारे ऊपर आ गई है, कौन बताएगा कि आह्लाद आया या नहीं आया। तुम्हारी कौन सी परिभाषा है आह्लाद की?

क्या थोड़ा सा हंसने से, या मुस्कराने से आह्लाद फूट गया अंदर से? उस आह्लाद की परिभाषा क्या हुई? दिन भर जो आपने कार्य किया उसका मूल्यांकन कौन करेगा।

तुम उस अंधकार की चादर को धकेल कर आगे बढ़ गए उसका मूल्यांकन करेगा कौन?

इसके लिए कोई न कोई व्यक्ति होना ही पड़ेगा। उस व्यक्ति को गुरु कहते हैं। यदि वह गुरु है तो वह समझाएगा कि तुम इस रास्ते पर हो, वह बताएगा कि जिंदा रहना है तो आह्लाद के साथ जिंदा रहिए नहीं तो फिर तुम्हारे ऊपर कोई दुनिया टिकी नहीं है। तुम्हारे बिना भी दुनियां चल सकती हैं। आप मर जाएंगे तो कोई दुनियां स्केगी नहीं। दुनियां तो चलेगी ही। मगर आप आह्लादित हैं और पांचों गुणों के साथ जीवित हैं तो इस



दुनियां में आप सर्वोच्चता के साथ हैं और आप प्रत्येक जीवनी को पढ़ लीजिए उस व्यक्ति में एक आग है तड़प है, बेचैनी है, आह्लाद है। आगे बढ़ने की धून है, संघर्ष करने की क्षमता है और आठ घंटे की जगह बीस घंटे काम करने की क्षमता है। बट्रेंड रसेल काम करता था तो बीस घंटे काम करता था, आइस्टाइन काम करता था बीस घंटे, आइस्टाइन की पल्नी जब देखती है आठ बज गए हैं और वह खाना खाने नहीं पहुंचा तो वह खाना परोस कर लैबोरेटरी में उसकी टेबल पर रख देती थी और वह काम में जुटा रहता था।

सुबह आती तो भी वह काम में जुटा रहता मिलता, वह कहती क्या तुमने खाना खाया ही नहीं।

यह काम करने की क्षमता है और इसलिए वह आइस्टाइन बना यों तो सैकड़ों पैदा हुए, सैकड़ों मर गए। आइस्टाइन क्यों जिंदा रहा और दूसरे लोग क्यों मर गए।

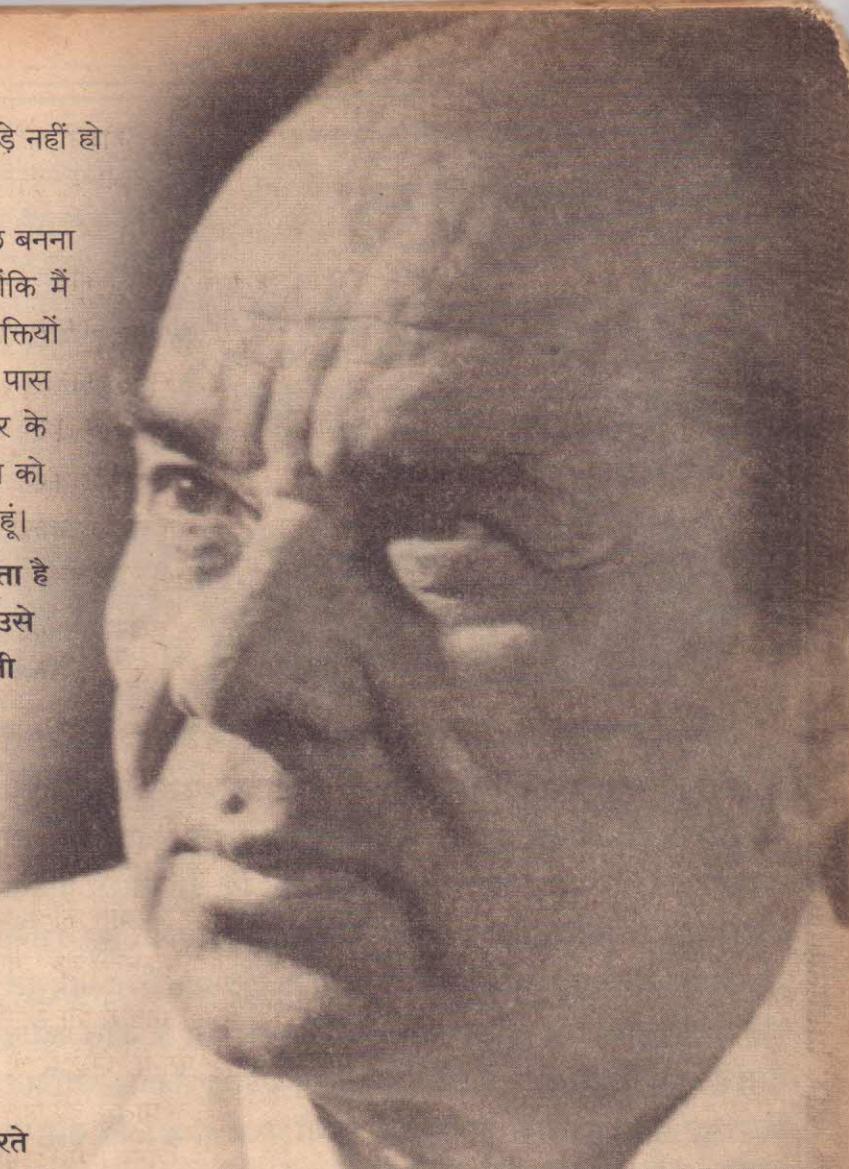
आइस्टाइन को दो बार नोबेल प्राइन क्यों मिला, लोगों को तो एक बार भी नहीं मिलता। इसलिए क्यों उनके अंदर ये पाचों बिंदु थे।

और आइस्टाइन से सैकड़ों हजारों साल पहले क्रषि ने बता दिया था कि यह वह रास्ता है जिस पर चलकर हम वहां पहुंच सकते हैं। यही हमारी मूल शक्ति है। और मैं वापस क्रषि की पहली बात को दोहराता हूं कि एक मिनट बाद आप वापस उस अंधकार में ढूब जाएंगे, मेरा कहना बेकार हो जाएगा।

आप में भी उतनी ही क्षमता है जितनी आइस्टाइन में थी। जितनी रसेल में थी, शेक्सपीयर में थी, मिल्टन में थी। आपने उस प्रतिभा को पहचाना नहीं। इस प्रतिभा के लिए पांच सीढ़ियां हैं जिनको मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया। प्रसन्नता और प्रसन्नता के साथ काम करना और पूर्ण ईमानदारी के साथ काम करना। लगन और एकनिष्ठता के साथ काम करना। और गुरु के चरणों में समर्पित होना तो पूर्णता के साथ समर्पित होना जिससे कि रास्ता बराबर दिखाई देता रहे ऐसा नहीं हो कि हम अंधकार में चलते रहें और सोचते रहे कि हम रोशनी में हैं यह बाहर सूर्य की रोशनी रोशनी नहीं। रोशनी का अर्थ है।

### तस्मै मनः शिव संकल्प

मन के संकल्प से रोशनी पैदा होनी चाहिए और इसका मूल आधार प्रसन्नता है। एक वातावरण को बनाना है। जहां भी रहें, परिवार में रहें घर में रहें। समाज में रहें, कहीं भी जाएं, चाहे राक्षसों के बीच जाएं हमें आह्लाद बिखेरना है। और यह तब होगा जब मन बिल्कुल शुद्ध और पवित्र और दिव्य होगा कांच की तरह। अगर उस पर धूल होगी, धूल की व्यभिचार की, बदमाशी की तो यह व्यर्थ होगा। और वह नुकसान आपका



होगा क्योंकि आप पहली सीढ़ी पर भी खड़े नहीं हो  
पाएंगे, पांचवीं सीढ़ी तो आगे की बात है।

और हम यह कर सकते हैं यदि हमें कुछ बनना  
है तो और ऐसा आप बन सकते हैं क्योंकि मैं  
आपकी प्रतिभा को जानता हूं। मैंने सही व्यक्तियों  
का चयन किया है। मैं सही व्यक्ति अपने पास  
रखता हूं। मैं घास, पतवार को काट कर के  
अलग खेत से फेंक देता हूं। गेहूं की बाली को  
जिंदा रखता हूं उसे खाद पानी देता रहता हूं।

किसान घास फूस को इसलिए काट देता है  
क्योंकि पृथ्वी की जो असली चीज है उसे  
घास फूस खा जाएगी और गेहूं की बाली  
ऊपर उठेगी ही नहीं। और गेहूं की बाली  
को उठाने के लिए खरपतवार को काटना  
ही पड़ेगा।

मैं भी जो शिष्य आते हैं उनकी  
निराई करता रहता हूं। मैं देखता हूं  
यह खरपतवार है इनको हटा दो नहीं  
तो यह फालतू शोषण मेरा करेगी।  
और फिर जिन गेहूं की बाली को मुझे  
उठाना है उन्हें कुछ नहीं दे पाऊंगा। क्योंकि  
ये सब शोषण कर लेंगे। आप मुझे प्यार करते  
हैं तो उतना ही प्यार मैं आपको करता हूं क्योंकि  
मैं तुम्हें जीवन में सर्वोच्चता तक पहुंचाना चाहता हूं।

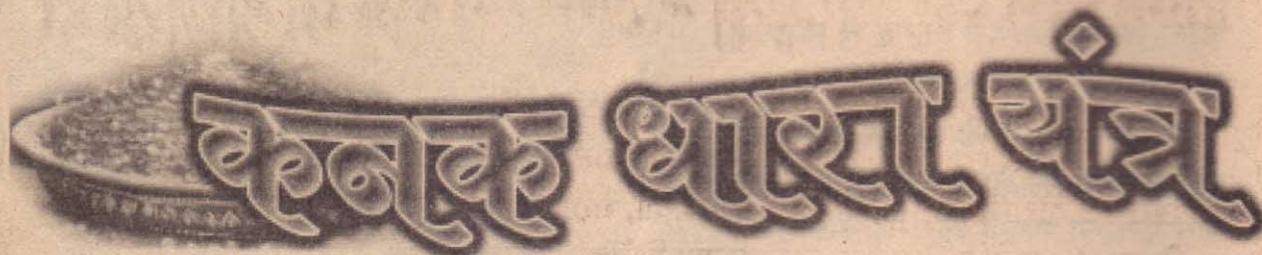
इस श्वेतश्वेतारोपनिषद के रचनाकार ने हमें सिखा दिया कि  
जमीन पर पड़े रहकर आसमान में छेद कैसे कर सकते हैं। जमीन पर खड़े  
समान पूरे विश्व में कैसे वंदनीय हो सकते हैं, जमीन पर खड़े रहकर कैसे अपने माता पिता का नाम रोशन कर  
सकते हैं।

ह म  
होकर देवताओं के

उस ऋषि की वाणी को मैं आपके हृदय में उतार रहा हूं जिससे आपके हृदय का अंधकार दूर हो और आपने  
प्रकाश बिखेरा तो प्रकाश बिखरेगा ही, ऐसा ही मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूं।

श्री सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी

# वार्षिक सदस्यता



वर्तमान सामाजिक परिवेश के अनुसार जीवन के चार पुरुषार्थों में अर्थ ही महत्ता सर्वाधिक अनुभव होती है। परन्तु जब भार्या या प्रारब्ध के कारण जीवन में अर्थ की व्यूनता व्याप्त हो, तो साधक के लिए यह आवश्यक हो जाता है, कि वह किसी ऐचिक सहायता का सहारा लेकर प्रारब्ध के लेख को बदलते हुए उसके स्थान पर मनचाही रचना करें कनकधारा यंत्र एक ऐसा अद्भुत यंत्र है, जो गरीब से गरीब व्यक्ति के लिए भी धन के स्रोत खोल देता है, यह अपने आप में तीव्र स्वर्णकर्षण के गुणों को समाविहृत किए हुए है। लक्ष्मी से सम्बन्धित सभी ब्रंथों में इसकी महिमा गायी गई है। शंकराचार्य ने भी निर्दिष्ट ब्राह्मणी के घर स्वर्ण वर्धा हेतु इस यंत्र की ही चमत्कारिक शक्तियों का प्रयोग किया था।

आधिक विधि- आधिक को चाहिए कि इस यंत्र को किसी बुधवार को अपने पूजा ठथाव में ठथापित कर दें। नित्य इसका कुंकुम, अक्षत एवं धूप से पूजन कर देने अमृत 'उं' हीं सहस्रदने करके श्वरि शीघ्र अतर्व उरगच्छ उं फट स्वाहा' मंत्र का 21 घाट जप करें। ऐसा 21 बुधवार तक करें, फिर यंत्र को तिजोरी में 22 लें।

पत्रिका की एक वर्षीय सदस्यता ग्रहण करने पर उपरोक्त यंत्र आप प्राप्त कर सकते हैं। अपनी मनोनुकूल इस यंत्र का नाम पोस्टकार्ड संख्या 4 पर लिखें दें। वी.पी.पी. द्वारा सामग्री आपको सुरक्षित भेज दी जाएगी तथा वी.पी. छूटने पर वर्ष पर्यन्त पत्रिका नियमित रूप से भेजी जाएगी।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर भी प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

**Fill up and send post card no. 4 to us at :**

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)  
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India  
फोन (Phone) - 0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) - 0291-2432010

शक्ति तो जीवन का शुद्धतम् रूप है

यह भौतिक भी है, आध्यात्मिक है

यह ज्ञान स्वरूप निरन्तर प्रज्ज्वलित होती रहती है।

## शक्ति तत्व का व्याख्या - आर्य ऋषियों के श्रीमुख से

जो अंधशङ्का के रूप में शक्ति पूजा करता है, वह अज्ञान से चुक्त होकर अहंकार वश पूजा करता है, हिन्दू धर्म कहता है प्रत्येक क्रिया के पीछे कारण अवश्य होता है, जीवन इच्छा, आकांक्षा, बल विद्या ज्ञान के पीछे भी कारण तत्व है, इन्हीं तत्वों की स्पष्ट करता यह विवेचनात्मक लेख

स तस्मिन्द्वेवाकाशे श्रियमाजग्राम बहुशोभमन्ना  
मुमर्दै हैमवतीं ताँ होवाच किमेतद्यक्षमिति ॥

केन उपनिषद् में विवेचन आता है कि भगवान का शुद्धतम स्वरूप ज्ञान, क्रिया और बल (शक्ति) के रूप में प्रकट होता है। इसी विवेचन को गीता के चौदहवें अध्याय के पांचवें श्लोक इसमें स्पष्ट करते हुए कहा है कि शुद्धता, क्रिया और बल ये तीन गुण प्रकृति के स्वरूप हैं जो मनुष्य के स्वरूप को बांधे रखते हैं। इन तीन गुणों को सत्त्व गुण, रजस गुण और तमस गुण कहा गया है। ये तीनों गुण तत्व तीन प्रकार के रंगों में स्पष्ट होते हैं। सत्त्व गुण शुद्धता का प्रतीक श्वेत रंग है और यह रंग भगवती दुर्गा के सरस्वती स्वरूप में प्रकट होता है। इसीलिये सरस्वती श्वेत वस्त्र धारण किये हुए, श्वेत हंस पर विराजमान है। सत्त्व तत्व प्रसन्नता और ज्ञान से मनुष्य के साथ रहता है यह आभा युक्त एवं स्वस्था को प्रकट करता है।

रजस गुण का रंग लाल है और यह दुर्गा के लक्ष्मी स्वरूप से स्पष्ट होता है। इसीलिये लक्ष्मी को लाल वस्त्रों से सुसज्जित स्वरूप बताया गया है। रजस तत्व क्रिया, महत्वकांक्षा, कार्यपद्धति का स्वरूप है, इस स्वरूप के कारण ही मनुष्य में शारीरिक आनन्द, सांसारिक सुखों के आनन्द की भावना प्रकट होती है। रसज तत्व मनुष्य को कर्म तत्व के रूप में बांध कर रखता है। राजसिक तत्व युक्त व्यक्ति शक्ति, स्थान, नाम, सुविधा, आराम, सुख, सांसारिक धन की प्राप्ति के लिये निरन्तर क्रियाशील रहता है। लक्ष्मी की प्रार्थना केवल राजसिक

तत्व के लिये ही नहीं करनी चाहिये अपितु सांसारिक धन के

साथ-साथ आध्यात्मिक ज्ञान धन की प्राप्ति के लिये भी करनी चाहिये। तब लक्ष्मी मनुष्य में 26 दिव्य गुणों का वरदान प्रदान करती है जो मनुष्य को आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख भी प्रदान करती है।

तमस तत्व का स्वरूप श्याम है और यह भगवती दुर्गा के काली स्वरूप को स्पष्ट करता है। तमस तत्व की उत्पत्ति मनुष्य में अज्ञान के कारण होती है और यह मनुष्य को निद्रा, अक्रिया, दिशाहीनता की ओर ले जाती है। तमस तत्व घृणा उत्पन्न करता है जो कि मनुष्य को आलसी, अशुद्ध तथा गलत कार्यों की ओर ले जाता है। तमस तत्व के कारण मनुष्य एक अहम् भाव में खोया रहता है। वह शरीर की इच्छा के अनुसार कार्य करता है, ना कि मस्तिष्क की इच्छा के अनुसार। उसमें निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है। ये सारे गुण मनुष्य में पशु प्रवृत्ति के गुण कहे जा सकते हैं। जब हम शक्ति के तमस रूप मां काली की प्रार्थना करते हैं तो उसमें इन दुर्गुणों की समाप्ति की प्रार्थना होती है क्योंकि काली दुर्गा का तीव्रतम, शक्तिमान स्वरूप है जो मनुष्य के भीतर की सब अशुद्धियों को, अवशुद्धियों को, दोषों को नष्ट कर देती है। जीवन में निद्रा, आलस्य, अक्रिया, अवनति, ईर्ष्या राक्षस हैं जिन्हें काली रूप में बल द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है। मां काली ही साधक को ज्ञान और ध्यान का मार्ग बताती है जिससे व्यक्ति सांसारिक मोह बन्धनों और कुमार्ग से दूर रहता है। मां काली तीव्र एवं विस्फोटक स्वरूप है और यह काल अर्थात् समय को भी स्पष्ट करती है।

प्रकृति का यह नियम है कि वह निर्माण करती रहती है,

संरचनारत रहती है। जबकि मनुष्य के भीतर की शक्ति विभिन्न भागों में व्यक्त रहती है और वह विध्वंस के कार्यों में तीव्र गति से आगे बढ़ने के लिये तत्पर रहती है। मां भगवती की साधना से मनुष्य अपनी शक्ति का संग्रहण, संरचनात्मक रूप से कर सकता है।

केनोपनिषद् में ये विवेचन आया है कि जग-जननी मां का स्वरूप हिमालय जैसा शुभ्र एवं दिव्य है और उनका स्वरूप नाम हेमवती उमा (उमा दो अक्षरों से मिलकर बना है 'उ' और 'मा')। 'उ' का अर्थ है 'क्या' और 'मा' का अर्थ है 'नहीं'। उमा का अर्थ हुआ 'क्या नहीं'। यह तर्क का, बुद्धि का काम है, इसलिये उमा का अर्थ है - 'बुद्धि')। है। यह भगवान के ऊर्जा रूप को प्रकट करती है। इसका ही दूसरा नाम शक्ति और दुर्गा है। दुर्गा अर्थात् दिव्य मां, दुर्गा अर्थात् दुर्गति नाशिनी, दुर्गा अर्थात् दुःख नाशिनी।

यदि देवी और असुरों को संग्राम की विवेचना की जाएं तो मनुष्य जीवन में अज्ञानता, अंहकार, धूमलोचन, चण्ड मुण्ड नाम से प्रकट होते हैं जिनका नाश शक्ति के तीव्र प्रहार से, तात्कालिक प्रभाव से ही किया जा सकता है। शांत भाव से अज्ञानता और अंहकार का नाश नहीं किया जा सकता, इसके लिये एक विशेष 'विल पॉवर' की आवश्यकता पड़ती है। जिसे शक्ति कहा गया है। 'धूम लोचन' अर्थात् जिसकी आंखें धूएं से युक्त हो। मनुष्य में भी जब अज्ञानता आती है तो उसे जीवन में अंधकार के बादल दिखाई देते हैं और वह खुद में ही अपने आप को महान् समझता हुआ, विचरण करता है। मुण्ड का तात्पर्य है निम्नता। मुण्ड मनुष्य की वासना और अंहकार के निम्न स्तर को प्रकट करता है। चण्ड का तात्पर्य है तीव्रता, जब अंहकार और अज्ञानता तीव्र हो जाते हैं, तब मनुष्य स्वनाश के मार्ग पर चल पड़ता है। शुम्भ और निशुम्भ अंहकार के उच्च रूप को प्रकट करते हैं। इस स्थिति में मनुष्य दूसरों पर अपना अधिकार जमाने की चेष्टा करता है और अन्य व्यक्तियों को दुःख देने में उसे आनन्द आता है। रक्तबीज का तात्पर्य है, मनुष्य के भीतर की अनन्त इच्छाएं जिन्हें पूर्ण करने के लिये अज्ञान मार्ग पर मनुष्य भटकता रहता है और एक इच्छा के बाद दूसरी इस प्रकार लाखों इच्छाएं प्रकट होती रहती हैं और जीवन इसी प्रकार बीतता चला जाता है। इसलिये केनोपनिषद् में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि देवी-असुर संग्राम एक विशेष स्थिति को स्पष्ट करता है। यह संघर्ष हुआ है या नहीं, लेकिन मनुष्य जीवन में महिषासुर, धूमलोचन, शुम्भ-निशुम्भ रूपी दुर्गण प्रकट होते ही रहते हैं

और इनका शक्ति के तीन स्वरूप 'ज्ञान', 'क्रिया' और 'बल' (शक्ति) द्वारा ही नाश किया जा सकता है। इस प्रकार संरस्वती, लक्ष्मी और काली के समन्वित रूप को धारण कर ही मनुष्य संसार संग्राम में विजय प्राप्त कर सकता है।

इसी प्रकार देवी शक्ति का आध्यात्मिक विवेचन है जिसे संसार में माया और जगत् के रूप में जाना जाता है, क्या है माया? क्या है प्रकृति? क्या है मनुष्य का स्वभाव? क्या है इन्द्रियों की क्रिया? किस प्रकार मनुष्य इन्हें वश में कर जीवन निर्माण कर सकता है।

जब हिन्दू धर्म में यह कहा जाता है कि संसार तो एक माया स्वरूप है तो मनुष्य को यह लगता है कि संसार एक वास्तविकता नहीं अपितु भग्न की स्थिति है। माया का यह विवेचन बौद्ध विचारकों द्वारा फैलाया गया। क्योंकि वे मानते हैं कि बाह्य संसार कुछ है ही नहीं जो कुछ भी है वह भीतर ही भीतर है। लेकिन वेदांत विज्ञान के अनुसार यह संसार न तो आदर्श है, न वास्तविक है, न एक सिद्धान्त है यह तो एक धुव्रसत्य के रूप में है जो हम वास्तव में है और जो हम अपने चारों ओर देखते हैं। वेदांत शास्त्रियों ने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य के मस्तिष्क की एक सीमा है, जो कि एक काल से परे एक स्थान से परे, एक कारण से परे आगे नहीं देख सकती है। मनुष्य काल और स्थान के नियमों से बंधा हुआ है। इस कारण इन सीमाओं को पार करना उसके लिये सम्भव नहीं है। कारण तत्व, समय तत्व और स्थान तत्व इन तीनों से मनुष्य का जीवन बंधा है।

लेकिन वंदांतों में यह भी वर्णन आया है कि इस संसार का कोई को अस्तित्व नहीं है। इसका क्या तात्पर्य है? इसका यह तात्पर्य है कि कोई भी स्थिति स्थाई नहीं है, कोई भी तत्व स्थाई नहीं है। मनुष्य अपने मस्तिष्क की सीमा के अनुसार ही जगत के बारे में विचार करता है। मनुष्य अपनी पांच इन्द्रियों द्वारा संसार का अनुभव करता है लेकिन इन पांच इन्द्रियों के अलावा मनुष्य की छठी इन्द्रिय जाग्रत हो जाये तो उसे स्पष्ट होगा कि जो कुछ दिख रहा है, अनुभव हो रहा है उससे परे भी एक स्थिति है जो अनन्त की स्थिति है।

विशेष- छठी इन्द्रिय के सम्बन्ध में इसी अंक में एक विशेष लेख पृष्ठ संख्या 26 पर दिया गया है।

इस प्रकार माया केवल एक सिद्धान्त नहीं है अपितु संसार को स्पष्ट करने की विद्या है। माया का तात्पर्य है कि जहां बुराई है वहां इच्छाई भी है। मनुष्य संसार को किस रूप में देखना चाहता है वह अपने आप को उसी रूप में ढाल देता है

और उसी मार्ग पर चलता रहता है। जहां जीवन है वहां मृत्यु भी है और यह मृत्यु मनुष्य की छाया की भाँति पीछा करती रहती है। अज्ञान भी है, ज्ञान भी है, अंधकार भी है, प्रकाश भी है, सत्य भी है, असत्य भी है, जीवन भी है, मृत्यु भी है इसीलिये वेदांत ऋषियों ने संसार को 'माया' कहा है।

लेकिन क्या इस स्थिति का उपचार किया जा सकता है। यदि हम कल्पना करें कि एक ऐसा स्थान हो जहां केवल शुद्धता ही शुद्धता हो, पाप और दुःखों के लिये कोई स्थान नहीं हो। जहां केवल सदैव हम मुस्कुराते रहे, कभी रुदन नहीं हो तो यह असंभव है। क्योंकि यह प्रकृति का गुण है कि वह हमारे भीतर मुस्कान का भी गुण देती है और रुदन का भी गुण देती है। यह हमें प्रसन्नता भी प्रदान करती है और यह हमारे अन्दर इच्छाओं को भी प्रदान करती है जिसके लिये मनुष्य इस संसार में निरन्तर भटकता रहता है।

इसका कारण यह है कि मनुष्य की क्रियाएं, कर्मेन्द्रियों द्वारा संचालित होती है। ये पांच कर्मेन्द्रियां वाक अर्थात् स्वर का अंग, पानी अर्थात् हाथ, पद्म अर्थात् पैर, उपस्थ अर्थात् यौन अंग, गुदा अर्थात् मल द्वारा नियन्त्रित होती है। ये पांच इन्द्रियां संसार में व्याप पांच तत्वों, तन्मात्राओं से प्रकट होती है। वाक-वाणी आकाश तन्मात्रा से प्रकट होता है, पाणि अर्थात् हाथ स्पर्श, वायु तन्मात्रा से प्रकट है, पद्म अर्थात् पैर अग्नि तन्मात्रा से प्रकट होते हैं। उपस्थान अर्थात् यौन अंग अपस्थ तन्मात्रा जो कि जल स्वरूप है उससे प्रकट होते हैं। और गुदा अर्थात् मलद्वारा पृथ्वी तन्मात्रा से प्रकट होते हैं।

अतः जो मनुष्य अपने शरीर की पांच इन्द्रियों की क्रियाओं को नियन्त्रण करता है अर्थात् वह इन पर मस्तिष्क को बुद्धि को हावी रखता है और इन इन्द्रियों को गलत मार्ग पर जाने से रोकता है। उसे साधक और योगी कहा गया है। क्योंकि इन पांचों इन्द्रियों का विस्तार अत्यधिक है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का विस्तार असीमित है। इन पांच तत्वों को नियन्त्रण करने के लिये ज्ञान, क्रिया और बल (शक्ति) की आवश्यकता रहती हैं। इसीलिये शक्ति साधना को सर्वोपरि साधना माना गया है।

महानिर्माण तंत्र में कहा गया है कि मनुष्य को अपने मस्तिष्क की शक्ति को केन्द्रित करने के लिये तथा अपनी इच्छाओं की शीघ्र पूर्ति के लिये काल की मां, मां काली को अपनाना चाहिये। जो कालवर्णिय है अर्थात् जिसका कोई स्वरूप नहीं है। जब मनुष्य जीवन में यह काली धारण हो जाती है तब वह उच्चता की ओर अग्रसर हो जाता है।

भगवती दुर्गा की उत्पत्ति त्रिदेव ब्रह्म, विष्णु और महेश से हुई है। देवी दुर्गा की उत्पत्ति राक्षसों का नाश करने के लिये ही हुई क्योंकि भगवान् स्वयं अपने रूप में युद्ध नहीं करना चाहते थे। संसार को शक्ति रूप में देवी प्रदान करना चाहते थे। त्रिदेवों के मुख से एक विशाल अग्नि उत्पन्न हुई और तीनों दिशाओं से आकर यह अग्नि एकाकार हो गई। इस अग्नि में एक प्रकाश पुंज का रूप ले लिया। जिसका प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। इस प्रकाश पुंज ने संसार के लिये एक स्त्री रूप ग्रहण किया और वह स्वरूप दुर्गा महामाया कहलाया। भगवान् शिव ने दुर्गा को अपने त्रिशूल जैसा ही त्रिशूल प्रदान किया, विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र जैसा चक्र प्रदान किया, वरुण ने शंख प्रदान किया, अग्नि देव ने शक्ति नामक आग्नेयास्त्र प्रदान किया, वायु देव ने धनुष बाण प्रदान किया, इन्द्र देव ने वज्र और घंटा प्रदान किया, यम देव ने दण्ड प्रदान किया, समुद्र देव ने पाश प्रदान किया, ब्रह्म ने रुद्राक्ष माला प्रदान की, देवताओं ने जलपात्र प्रदान किये, विश्वकर्मा ने अन्य प्रकार के चमत्कारिक यंत्र प्रदान किये, हिमालय ने देवी के वाहन के रूप में सिंह प्रदान किया। इस प्रकार सुन्दरता एवं अरब्र-शस्त्रों से सजित होकर देवी ने एक महानाद किया, जिससे पूरा ब्रह्माण्ड हिल उठा तथा उसकी प्रति ध्वनि से राक्षसों में भय व्याप हो गया।

राक्षसों ने अपने प्रतीक स्वरूप, अपनी शक्तियों सहित महिषासुर को जो कि एक भैरो के रूप में था, उसे युद्ध हेतु भेजा। वास्तविक रूप में भैरो मनुष्य के भीतर जो पशुवृति की उग्रता होती है उसे रूपष्ट करता है। दुर्गा रूप में उच्चतत्त्व, सर्वहित भाव तीव्ररूप में प्रकट होता है। इस प्रकार देवी तथा असुरों का संग्राम देवीय प्रवृत्तियों एवं राक्षसी प्रवृत्तियों के बीच संघर्ष का प्रतीक है जिसमें अन्ततः हित चिन्तक शुद्ध देवीय भाव ही विजय प्राप्त करता है। मनुष्य में अपने जीवन काल में पाश्विक प्रवृत्तियां भी आ सकती हैं और देवीय प्रवृत्तियां भी आ सकती हैं। इनके संघर्ष में जीवन चलता रहता है। जब देवीय शक्तियां विजय होती हैं तो मनुष्य उद्धति की ओर गतिशील होता है और जब राक्षसी प्रवृत्तियां हावी रहती हैं तो वह अज्ञान, अब्धकार, धृणा, लिप्सा के भाव से युक्त हो जाता है और जीवन पशुवत हो जाता है।

# ॐ ब्रह्माण्डम्

मैं ही ब्रह्म हूं, मैं पूरे संसार को देख सकता हूं

ऋषियों द्वारा कहा गया यह वाक्य अमर वचन है क्योंकि वे पूरे जगत् को अपने तीसरे नेत्र के माध्यम से देख सकते थे क्योंकि उन्होंने जाग्रत् किया था। अपना तीसरा नेत्र और तीव्रतम् कर दी थी अपने मस्तिष्क की शक्ति

आप भी सम्पन्न कर सकते हैं यह क्रिया जिसे कहा गया है



मानव अपनी खोजी प्रवृत्ति के कारण अपने आस-पास की प्रत्येक वस्तु के बारे में जानकारी के लिए अन्वेषण करता ही रहता है और प्रकृति जन्य प्रत्येक जीवन-जन्तु, खनिज तत्व व पेड़-पौधों के अध्ययन के साथ ही साथ अपने स्वयं के शरीर के बारे में सांगोपांग अध्ययन किया है। आज से हजारों वर्ष पहले से ही अपने शारीरिक अंगों की संरचना और कार्य प्रणाली के बारे में जिजासु बन खोज कर रहा है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने काफी हद तक शरीर में निहित शक्तियों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर लिया था, जिसके फलस्वरूप कुण्डलिनी जागरण क्रिया का प्रतिपादन हुआ। धीरे-धीरे समय के साथ इस ज्ञान को लोग विस्मृत करते गये और आज स्थिति यह है, कि तमाम आधुनिक यंत्रों से अनुसंधान के पश्चात् भी आधुनिक विज्ञान इस मस्तिष्क के मात्र पांच प्रतिशत हिस्से का अध्ययन करने में ही सक्षम हो पाया है, क्योंकि

मानव मस्तिष्क इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सर्वाधिक रहस्यमय संरचना है। विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में मानव शरीर की अनेक अलौकिक क्षमताओं का वर्णन मिलता है, जो वर्तमान में लुप्त प्रायः हो चुकी है। वास्तव में मानव मस्तिष्क एक अत्यन्त ही जटिल संरचना है और इसके अन्दर बड़ी - बड़ी सम्भावनाएं सुमावस्था में हैं, जिन्हें क्रियाशील करने का ज्ञान आधुनिक विज्ञान के पास नहीं है।

आज वैज्ञानिक भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि मनुष्य अपने मस्तिष्क के कुल पांच प्रतिशत भाग ही नित्य इस्तेमाल में लेता है, बाकी 95 प्रतिशत भाग का प्रयोग किस प्रकार करें, यह उन्हें ज्ञात नहीं है। आधुनिक समाज में बुद्धिजीवी वर्ग, कवि, कलाकार, वैज्ञानिक, संगीतकार, नेता आदि अपने मस्तिष्क का मात्र दो या तीन प्रतिशत भाग ही प्रयोग में लापाने के कारण समाज में अपना स्थान उच्च बना पाने में सफल

हो पाते हैं। यदि उन्हें पूरे मस्तिष्क को जाग्रत करने की क्रिया मालूम हो जाय, तो उनकी उन्नति किस स्तर तक होगी यह वे भी नहीं सोच सकते।

प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति भूतकाल और भविष्य काल की स्पष्ट जानकारी रखता था, कारण था उसके 'तीसरे नेत्र का जागरण' या यूं कहें, कि उसका 'आज्ञा चक्र' जाग्रत रहता था, वह अपने आज्ञा चक्र का प्रयोग करना जानता था।

जिस प्रकार व्यक्ति अपने स्मृति पटल पर अपना भूतकाल एक चलचित्र की तरह देख लेता है, उसी प्रकार पूर्वकाल में लोग अपना भविष्यकाल भी देखने में समर्थ थे। 'भविष्य-दर्शन' जीवन का वह प्रकाश है, जिससे पूरे जीवन को जगमगाया जा सकता है, पूरे जीवन को उज्ज्वल बनाया जा सकता है।

आपने यह तो अनुभव किया ही होगा, कि कोई भी पशु बड़ी आसानी से अपने कानों को हिला लेता है, अपने शरीर की चमड़ी को हिला लेता है, मगर व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है। परन्तु प्राचीन काल में व्यक्ति ऐसा करने में पूर्ण सक्षम था और आज भी कहीं - कहीं ऐसे अनोखे व्यक्तित्व मिल जाते हैं, जिनके पूरे शरीर में विद्युत प्रवाहित है, उनको स्पर्श करने पर विद्युत का

क्या तुमने पंख फैलाकर आकशमें उड़ने की सौची,

पिंजरे से बिकल कर गगन मण्डल को नाप लेने का निश्चय किया, मानसरोवर में गहराई के साथ दुबकी लगाने की सौची,

दशों दिशाओं के हाथ में जयमाला देकर पंक्ति बद्ध खड़े होने की कल्पना की,

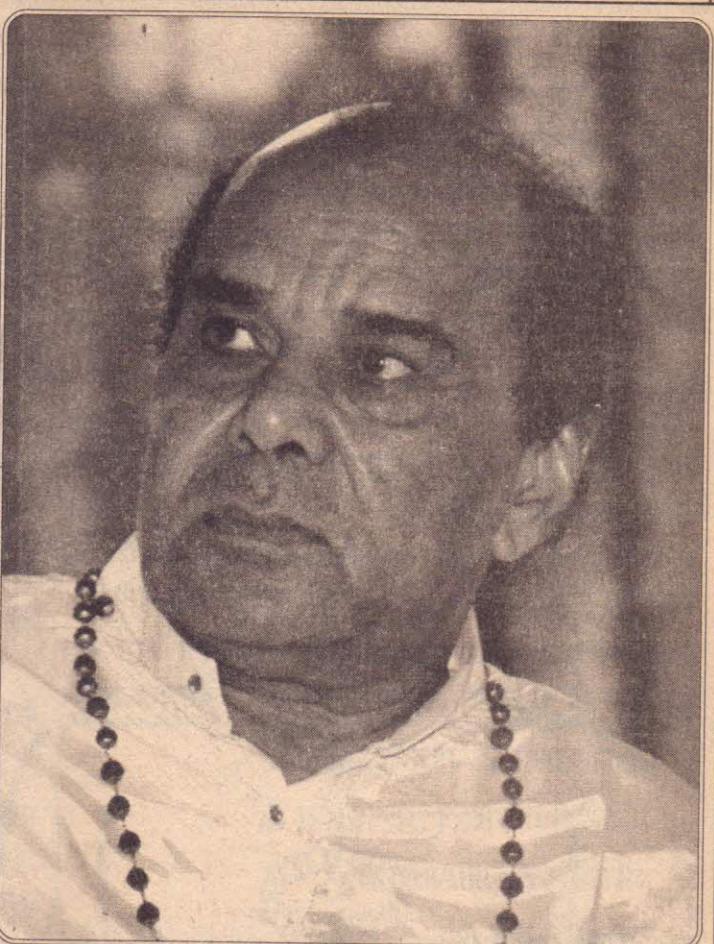
नहीं... तो क्यों?

क्या आप कमज़ोर हैं, कायर हैं, बुज़दिल हैं.... और पूरे विश्व में दुंदुभी बजाना चाहते हैं,

तो फिर यह साधना केवल आपके लिए है ... सिर्फ आप जैसे साधकों के लिए

??? आप भूत-भविष्य देख सकते हैं???

सदगुरुदेव, महाशिवरात्रि १९९७



झटका लगता है। कड़ीयों के शरीर का प्रत्येक रोम-रोम अपने आप में गतिशील होता है। इनका कारण मात्र इतना ही है, कि उनकी नाड़ियां आम आदमी की अपेक्षा अधिक क्रियाशील होती हैं।

हमने अपने तीसरे नेत्र का प्रयोग करना छोड़ दिया और धीरे-धीरे यह ग्रन्थि एकदम सुस हो गई, सुस का मतलब हमारी चेतना से, हमारी समझ से बाहर हो गई। आज इसके विषय में निश्चित रूप से कोई नहीं जानता, कि यह ग्रन्थि कहां है और किस प्रकार से अपना कार्य करती हैं?

इस ग्रन्थि के सुस होने के कारण मानव अपना भविष्य देखने में अक्षम हो गया, इस अन्तराल में उसे सक्षम और चैतन्य गुरु ही नहीं मिले जो इस क्रिया से परिचित कराते, यदि मिले भी तो लोग उस परम पुरुष को पहचान ही नहीं पाये और अक्षमता का परिणाम यह हुआ कि आज व्यक्ति डरा हुआ है, सहमा हुआ है अपने भविष्य के प्रति।

कल क्या होगा? बेटी का विवाह होगा या नहीं? बेटा आगे चलकर क्या करेगा? मेरी नौकरी लगेगी या मैं व्यापार

करुंगा? ऐसे कई सवाल जीवन में उठते हैं, जो भविष्य से सम्बन्धित होते हैं।

अपने भविष्य को लेकर व्यक्ति आज पूरी तरह से अंधकार में है, जिसका परिणाम है - तनाव, चिन्ता, अकर्मण्यता और बेबसी। अगर मनुष्य अपनी इस ग्रथि को जाग्रत कर ले, जिसे हम 'तीसरा नेत्र' कहते हैं, जो कि ललाट पर भौंहों के बीच में स्थित है, तो उसका सारा तनाव, सारी चिन्ताएं समाप्त होकर एक श्रेष्ठ प्रशस्त मार्ग प्राप्त हो जायेगा।

इस तीसरे नेत्र के माध्यम से दुर्घटनाओं से पूर्व परिचित होकर उन्हें बड़ी आसानी से टाला जा सकता है, क्योंकि जिस क्षण दुर्घटना होने वाली होगी, उस क्षण वह उस स्थान पर उपस्थित होगा ही नहीं जहां इस दुर्घटना का योग है। इस प्रकार वह भावी संकट से बड़ी ही आसानी से बच जायेगा।

जब व्यक्ति इस तीसरे नेत्र के माध्यम से अपने आगे-पीछे के कई जन्मों को देखता है, तो मृत्यु भय तो स्वतः ही समाप्त

आप सामान्य मनुष्य नहीं हैं,  
गुरुदेव निखिल के शिष्य हैं,  
परिचित हैं, आत्मीय हैं,  
रक्त के कण हैं,  
हृदय की धड़कन हैं...  
फिर निराशा क्यों?  
फिर कमजोर क्यों?  
क्यों नहीं तीसरा नेत्र जाग्रत कर  
समस्त ब्रह्माण्ड में झाँक लेते,  
क्यों नहीं पूरे विश्व को मुझी में कस कर  
झिझोड़ देते...  
क्यों नहीं 'युग पुरुष' बन जाते?  
क्यों नहीं ठोकर मार कर  
मृत्यु को परे धकेल देते?  
करिये न!  
हम आपको  
यह अवसर दे रहे हैं  
इन साधना पंक्तियों के माध्यम से ....

हो जाता है और तब उत्पन्न होती है अध्यात्म की एक उजली किरण, जिसके प्रकाश में वह अपने जीवन को पूर्णता की ओर गतिशील करने की क्रिया करता है। सामान्य जीवन में व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों से नित्य ही मिलना होता है। उनमें कौन किस प्रवृत्ति का है? कौन क्या चाहता है? किसकी भावना कैसी है?

यह अपने तीसरे नेत्र के माध्यम से आसानी से जाना जा सकता है।

भविष्य में कौन व्यक्ति किस क्षेत्र में प्रसिद्ध होगा, इसे बड़ी आसानी से जाना जा सकता है।

कुल मिलाकर बात इतनी सही है, कि आज्ञा चक्र के जागरण से जीवन पूर्ण प्रकाशमय हो जाता है, जो आज के इस वैज्ञानिक युग में एक विस्फोटक घटना है, एक क्रांतिकारी घटना है।

अब प्रश्न यह है, कि आज्ञा चक्र किस प्रकार से जाग्रत हो?

वह कौन सी विधि है, वह कौन सी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से आज्ञा चक्र जाग्रत हो?

इसके लिए एक श्रेष्ठ और सहज साधना विधि यहां प्रस्तुत की जा रही है, जिसे सम्पन्न कर कोई भी व्यक्ति अपना तीसरा नेत्र जाग्रत करने में सक्षम हो सकेगा।

यह साधना अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना है, जो आपके जीवन को जगमगाहट से भर देगी।

आज सारा संसार दुःखी है, कष्टों से पीड़ित है, जबकि दुःख जैसी कोई चीज होती ही नहीं। दुःख तो मात्र अनुभूति है उन इच्छाओं की, जो पूरी नहीं होती। जब हमें भविष्य का ज्ञान नहीं होगा, तो हम उन इच्छाओं को किस प्रकार से पूरा करेंगे?

इच्छाएं पूरी हो सकें, इसके लिए भविष्य ज्ञान होना अति आवश्यक है।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा - 'अर्जुन! तू केवल स्थितप्रज्ञ बन जा, मैं तेरे पूरे जीवन को पार कर दूँगा।'

स्थितप्रज्ञ बनने की क्रिया मात्र तीसरे नेत्र के जागरण द्वारा ही सम्भव है, जब आदमी निश्चिन्त हो जायेगा, तभी स्थितप्रज्ञ बन सकेगा।

अतः यह मात्र साधना न होकर जीवन को पूर्णता के पथ पर अग्रसर करने की श्रेष्ठतम क्रिया है।

## साधना विधान

- ❖ इसमें प्रमुख सामग्री - 'भूत-भविष्य सिद्धि यंत्र', 'भूत-भविष्य सिद्धि गुटिका' व 'कालजयी माला'।
- ❖ यह रात्रिकालीन साधना है। साधक सफेद वस्त्र धारण करें।
- ❖ इसमें तेल का दीपक प्रज्ज्वलित किया जाता है।
- ❖ इसे आप किसी भी मंगलवार से प्रारम्भ कर सकते हैं।

### गणपति पूजन

दोनों हाथ जोड़कर-भगवान गणपति से प्रार्थना करें -

ॐ लं नमस्ते गणपतये  
 त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि  
 त्वमेव के वलं कर्ताऽसि,  
 त्वमेव के वलं भर्ताऽसि,  
 त्वमेव के वलं हर्ताऽसि,  
 त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्माऽसि,  
 त्वमेव साक्षादात्माऽसि,  
 नित्यमृतं वच्मि सत्यं वच्मि।

ॐ गणाधिपतये नमः ।

एतत् प्राद्यम्, अर्द्धं, स्नानं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं  
 निवेदयामि

ॐ महामांगल्य गणाधिपतये नमः ।

अन्नेन संपूजने न संप्रीतो भव।

ॐ सुशान्तिर्भवतु ॥

### संकल्प

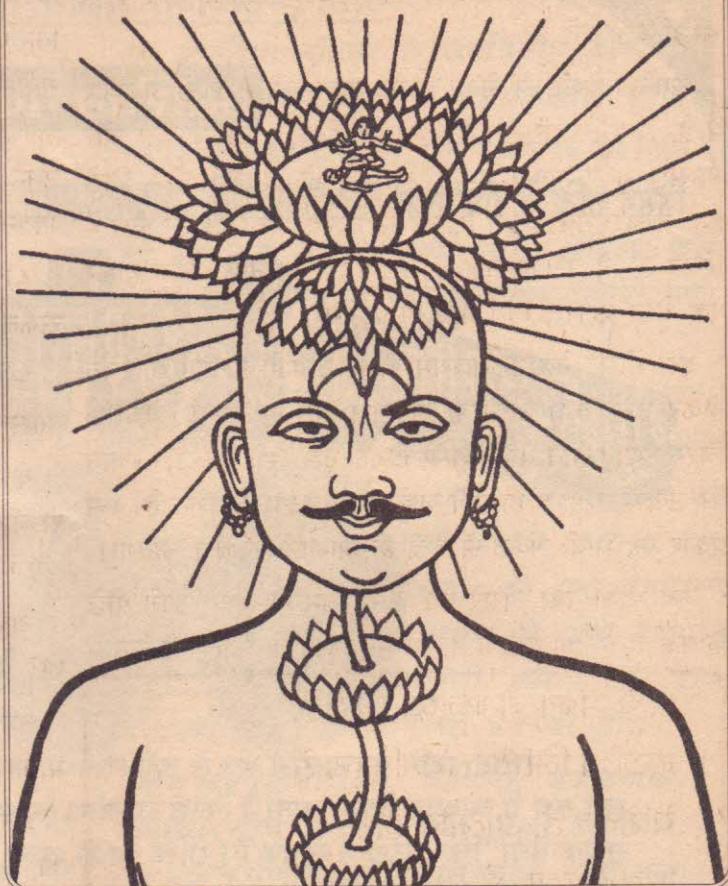
संकल्प के लिए दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न संदर्भ का उच्चारण करें -

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः श्रीमद् भगवत्तरो विष्णो  
 राङ्गया प्रवर्तमाने अमुक मासे (महीने का नाम बोलें),  
 अमुक दिने (दिने बोलें), अमुक गोत्रीयः (अपना गोत्र  
 बोलें) अमुक साधना (साधना का नाम बोलें) सिद्धि  
 लिमितं एतोऽस्मानं स कृते कल्याणं त्वं जल साक्षि  
 रूपेण त्वां संपर्ददे ।

- जल को भूमि में छोड़ दें।

### यंत्र पूजन

यंत्र पर जल चढ़ायें फिर किसी स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प चढ़ायें। यंत्र के ऊपर ही गुटिका तथा



माला रखें और इन पर भी कुंकुम, अक्षत व पुष्प चढ़ायें।

ध्यान और प्रार्थना करें -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।  
 त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

गुर चित्र के समक्ष पुष्प चढ़ा कर प्रणाम करें तथा साधना में पूर्ण सफलता प्रदान करने हेतु प्रणाम करें। इसके पश्चात् मंत्र जप प्रारम्भ करें।

नित्य 11 दिन तक निम्न मंत्र का 11 माला जप करना है -

मंत्र

// ॐ ह्रीं वलीं भूत भविष्य वर्तमानानि दर्शय  
 वलीं ह्रीं फट ॥

ज्यारह दिन बाद सभी सामग्रियों को किसी नदी, तालाब अथवा किसी जल सरोवर में प्रवाहित कर दें तथा इसके बाद नित्य 15 मिनट तक उपरोक्त मंत्र का जप प्रतिदिन करते रहें।

इससे निश्चय ही आपको अपना तीसरा नेत्र जाग्रत करने में सफलता प्राप्त होगी तथा आपका जीवन उज्ज्वल और प्रकाशमय होगा।

साधना सामग्री - 450/-

जगद्-जननी भगवती दुर्गा महापर्व

## आश्विन नवरात्रि

जिसमें शक्ति के तीबों रूपों महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की विधिवत् साधना करनी है।

# शास्त्रानुसृत शक्तिपूर्ण नवरात्रि पूजा



शक्ति-प्राप्ति का तात्पर्य बल से नहीं लगाया जा सकता यद्यपि व्यवहार में शक्ति का प्रयोग इसी रूप में व्यवहृत किया जाता है किन्तु शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार 'शक्ति' शब्द में 'श' हेर्वर्य सूचक तथा 'क्ति' पराक्रम सूचक है। शक्ति का ही अन्य पर्यायिकाची शब्द प्रकृति भी है तथा प्रकृति शब्द का 'प्र' - सत्त्व गुण सूचक 'कृ' रजोगुण सूचक एवं 'ति' तमोगुण सूचक व्योगित किया गया है। इस का स्पष्ट अर्थ यही है कि प्रकृति अर्थात् पराशक्ति त्रिगुणात्मिका स्वरूप को अपने में समाहित किए हुए हैं, जिसकी उपासना हम महासरस्वती, महाकाली एवं महालक्ष्मी के रूप में करते हैं।

नवरात्रि की मूल भूवना इन्हीं तीनों शक्तियों की आधारना, स्थाना एवं इससे भी आधिक उनके वरदायक प्रभाव की प्राप्ति की कामना ही है।

नवरात्रि का यह विशेष पर्व अपने भीतर से अज्ञानता, दोष, कमियां, निकाल बाहर कर अपने भीतर शक्ति भरने का पर्व है, यदि संसार विपत्ति सागर है, तो उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिए शक्तिमान होना ही पड़ेगा, अपने भीतर शक्ति सामर्थ्य भरनी पड़ेगी, यह शक्ति ही अपने अलग-अलग रूपों में विद्यमान हो कर साधक के कार्य सम्पन्न करती है।

मां दुर्गा के तीनों महान स्वरूपों के बारे में “श्री देव्यर्थवशीर्ष” में लिखा है कि “हे देवी! आप चित्त स्वरूपिणी महासरस्वती हैं, सम्पूर्ण द्रव्य, धन-धान्य रूपिणी महालक्ष्मी हैं तथा आनन्दरूपिणी महाकाली हैं, पूर्णत्व पाने के लिए हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं, हे! महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी स्वरूपिणी चण्डीके, आपको बारम्बार नमस्कार है, मेरे अविद्या, अज्ञान, अवगुण रूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थी काट कर मुझे शक्ति प्रदान करें।”

नवरात्रि की ये नौ रात्रियां अपने आप में तीन आदि शक्तियों अर्थात् - दुर्गा, लक्ष्मी एवं सरस्वती को शक्ति साधना द्वारा जीवन में अनुकूल करने की रात्रियां हैं। इन्हीं विशक्तियों से ही जगत की समस्त शक्तियों का उद्भव या संचरण हुआ है। नवरात्रि की प्रथम तीन रात्रियों में दुर्गा की, अगले तीन दिनों में लक्ष्मी की एवं अंतिम तीन रात्रियों में सरस्वती की उपासना की जाती है। इन तीनों शक्तियों द्वारा वह अपनी आंतरिक एवं बाह्य आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त कर सकता है। भौतिक जगत में इस शक्ति का सबसे श्रेष्ठ स्वरूप महालक्ष्मी है, जो सीमा-रहित, नित्य निवासिनी विष्णु की नारायणी शक्ति है, और इसी शक्ति के विभिन्न स्वरूप - लक्ष्मी, श्री, पद्मा, पद्मालिनी, कमला, इत्यादि है, इस “अहन्ता” शक्ति की सिद्धि ही इस शारदीय नवरात्रि में सम्पन्न करना है।

और यह विजय व्यक्ति को तभी प्राप्त हो सकती है, जब वह

आश्विन नवरात्रि के इन विशेष क्षणों में देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूप की तांत्रोक्त पञ्चति से पूजन कर साधना करे। जीवन का श्रेष्ठ निर्माण इन्हीं तीनों शक्तियों से सम्भव है।

### साधना नियमः

- प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय के साथ उठ जायें और समय पर दैनिक क्रम सम्पन्न कर पूजन सम्पन्न करें।
- यदि प्रातः पूजन सम्भव नहीं है तो स्नान इत्यादि कर गुरु मंत्र का एक माला जप कर सायं काल पूजन सम्पन्न कर सकते हैं।
- नवरात्रि के नौ दिनों में निराहार रहना आवश्यक नहीं है लेकिन सात्त्विक भोजन ग्रहण करें तो शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से चेतना रहेगी और अधिक से अधिक मंत्र जप कर सकते हैं।
- ब्रह्मचर्य नियम का पालन अवश्य करें।
- नवरात्रि में दुर्गा सप्तशती का पाठ करना विशेष फलप्रद रहता है। पूरा पाठ न कर सकें तो एक-एक अध्याय का पाठ अवश्य करना चाहिए।
- भगवती दुर्गा पर मांसादि भोग, शराब इत्यादि अर्पित करना अत्यन्त अशुभ है और जिन शास्त्रों में यह वर्णन आया है उन टीकाकारों को वास्तव में शक्ति पूजा का महत्व ही मालूम नहीं है।
- नवरात्रि में शक्ति से सम्बन्धित जितनी अधिक साधनाएं सम्पन्न कर सकते हैं उतनी अधिक साधनाएं सम्पन्न करें।
- वास्तविक शक्ति पूजन तो गुरु चरणों में ही गुरु के सानिध्य में ही सम्पन्न किया जाता है लेकिन यदि किसी कारण वश आप गुरु के पास न पहुंच सकें तो नीचे दी गई विधि से पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
- नवरात्रि में अखण्ड दीपक प्रज्ज्वतिल करना उत्तम माना गया है।

नवरात्रि पूजन में मंत्र का, तंत्र का और यंत्र का अद्भुत संयोग है और इन चीजों के संयोग से ही साधना सम्पन्न होती है।

### नवरात्रि पूजन चिधान

प्रातः स्नानादि से निवृत होकर उत्तर की ओर मुख कर बैठ जाएं, सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर गुरु चित्र एवं भगवती दुर्गा का चित्र स्थापित करें।

### पवित्रीकरण

बाएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से ऊपर छिड़के -  
ॐ अपदित्रः पवित्रो वा सर्वादिस्थां जतोयि वा  
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षां स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥  
साधक अपने दाईं ओर धूप, दीप जलाएं एवं उस निम्न मंत्र बोलकर कुंकुम, अक्षत, अर्पित करें -

भो दीप देव रूपस्त्वं कर्म साक्षि हृविघ्न कृत्  
यावत् कर्म सामाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।

### गणपति स्मरण

अपने सामने गणेश विग्रह/चित्र (अथवा प्रतीक रूप में सुपारी पर मौलि बांधें) पर निम्न मंत्र बोलकर पुष्प चढ़ाएं -

ॐ लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। ॐ उमा  
महेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणी हिरण्य गर्भभ्यां नमः।  
ॐ शक्ती पुरन्दराभ्यां नमः। ॐ इष्ट देवताभ्यो  
नमः। ॐ कुल देवताभ्यो नमः। ॐ ग्राम देवताभ्यो  
नमः। ॐ स्थान देवताभ्यो नमः। ॐ वास्तु  
देवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।  
लम्बोदरश्च विकटो विघ्न नाशो विनायकः।  
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।  
द्रादशै तानि नामानि यः पठेच्छृणु यादपि॥  
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे त्रिर्जिमे तथा।  
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥  
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके,  
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥

### आसन धूमि

अपने आसन के नीचे कुंकुम से एक त्रिकोण बनाएं तथा निम्न मंत्र बोलकर उसपर पुष्प, अक्षत, कुंकुम चढ़ाएं।

ॐ पृथिवे त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।  
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्॥

### दिव्यस्थान

बाएं हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र बोलकर सभी दिशाओं में अक्षत के दाँते फेंकें -

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः,  
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते ते नश्यन्तु शिवाङ्गया।  
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्,  
सर्वेषाम् अविरोधेन पूजा कर्म समारभे।

### भैरव स्मरण

हाथ जोड़कर भगवान भैरव का ध्यान करें -

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाव्य कल्पान्त दहनोपम,  
भैरवाय नमस्तुभ्यंमनुज्ञां दातुमर्हसि।  
ॐ भं भैरवाय नमः ।

### संकल्प

(दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य  
विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्माणो द्वितीय  
पराद्द्वे श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे  
अष्टाविंशति कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे  
भारतवर्षे आश्विन मासे शुक्ल पक्षे अमुक वासरे  
(दिन का नाम बोलें) अमुक गोत्रोत्पद्मोहं (गोत्र बोलें) अमुक  
शमाहं (नाम बोलें) भगवती दुर्गा श्रीत्यर्थं गुरोरज्ञया  
वथा मिलितोपचारे: पूजनं अहं करिष्ये ।

(जल जमीन में छोड़ दें।)

### कलश स्थापन

कलश को जल से भर कर अपनी बाईं ओर रखें, उसमें  
वरुण देवता का आवाहन करें। हाथ जोड़ कर बोलें -

सर्वे समुद्रा सरिता तीर्थानि जलदा नदाः ।  
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः ॥  
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।  
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणा स्थिताः ।  
कुक्षौ तु सागरा सर्वे समद्वीपा वसुन्थरा ।  
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदोः हृथर्वणः ।  
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।  
'वं वरुणाय नमः' मंत्र का 108 बार जप करें। फिर कलश  
में गंध, अक्षत, पुष्प डालकर तीर्थों का आवाहन करें -

जंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।  
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सम्भिं कुरु ॥  
ब्रह्मण्डोरदर तीर्थानि करैः पृष्ठानि ते रवेः ।  
तेन सत्येन मे देव, तीर्थं देहि दिवाकर ॥

निम्न मंत्र बोलकर कलश की चार दिशा में कुंकुम से चार  
बिन्दी लगाएं

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः । दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः ।  
पश्चिमे सामवेदाय नमः । उत्तरे अथर्वेदाय नमः ।

इसके बाद एक नारियल को कलश पर स्थापित करें और  
कलश पर मौलीं बांध दें। नित्य एक नए नारियल की  
आवश्यकता होती है। कलश पर तिलक, अक्षत, पुष्पादि  
अर्पित करें और दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

भो वरुण! प्रसन्नो भव, वरदो भव, अनया पूजया  
वरुणादि आवाहिता देवता प्रीयन्ताम् ।

### गणपति पूजन

ॐ गजाननं भूत गणादि सेवितं, कपित्थं जम्बू फलं चारु भक्षणं।  
उमासुतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पादं पंकजं ॥

ॐ गं गणपतये नमः स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं  
समर्पयामि नमः । तिलकं अक्षतान् पुष्पाणि  
समर्पयामि नमः । नैवेद्यं निवेदयामि नमः । (स्नान,  
वस्त्र, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य अर्पित करें)

ॐ नमस्ते गणपतये त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि,  
त्वमेव केवलं कर्तासि, त्वमेव केवलं भर्तासि, त्वमेव  
केवलं हत्तासि, त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि, त्वं  
साक्षात् आत्मासि, नित्यमृतं वच्मि, सत्यं वच्मि ।

### गुरु पूजन

(हाथ जोड़कर गुरुदेव से प्रार्थना करें)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुविष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।  
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥  
ध्यानं मूलं गुरो मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।  
मंत्र मूलं गुरोर्वर्क्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ।  
श्री पारमेष्ठि गुरुं निखिलेश्वरानन्दं  
आवाहयामि स्थापयामि नमः ।  
योजेश्वरः योगजग्म्यः योगक्षेम करस्तथा ।  
याजुष्यः योग निरतः योगानन्द समाहितः ।  
गुरु चित्र को स्नान कराकर कुंकुम, अक्षत, पुष्पदीप अर्पित  
करें -

स्नानं समर्पयामि गुरुर्देवाय नमः । जन्धं  
समर्पयामि अक्षतान् समर्पयामि । धूपं दीपं पुष्पाणि  
समर्पयामि ।

निम्न मंत्र बोलकर नैवेद्य अर्पित करें -

जगद्गुरुः जगद्वेता जगदन्तः जनार्दनः ।  
जगनेश्वरश्च जिष्णुर्जगन्मंगल दायकः ।  
श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः नैवेद्यं  
निवेदयामि ।

दोनों हाथ में पुष्प लेकर 'ॐ गुरुदेवाय नमः' बोलकर  
साधना में सफलता की प्रार्थना कर, गुरु चित्र पर चढ़ाएं।

इस प्रारम्भिक पूजन के बाद विशेष साधना करें -

साधना सामग्री : त्रिशक्ति साधना हेतु 'त्रिशक्तियंत्र',  
'त्रिशक्ति माला' के अतिरिक्त दुर्गा साधना हेतु 'महिषी', लक्ष्मी

साधना हेतु 'सिद्ध चक्र' तथा सरस्वती साधना हेतु 'प्रज्ञिका' आवश्यक है। यह सब सामग्री मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त होना आवश्यक है।

### प्रथम तीन दिवसः दुर्गा साधना

प्रथम तीन दिवस दुर्गा पूजन के लिए हैं। सामने किसी पात्र में 'त्रिशक्ति यंत्र' स्थापित करें। 'महिषी' को अपने सिर से तीन बार घुमाकर यंत्र के सामने स्थापित करें। फिर दोनों हाथ जोड़कर अपने दुरुणों के नाश हेतु दुर्गा का ध्यान करें -

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,  
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।  
दारिद्र्यं दुःखं भयं हारिणी कात्वदन्या,  
सर्वोपकारं करणात् सदार्द्धं चित्ताऽ॥

ॐ जगदम्बावै नमः आवाहयामि स्थापयामि।  
इदं पुष्पासनं समर्पयामि नमः। (यंत्र को पुष्पासन दें)  
पादं समर्पयामि नमः। (यंत्र पर दो आचमनी जल चढ़ाएं)  
अर्ध्यं समर्पयामि नमः। (हाथ में जल, कुंकुम लेकर चढ़ाएं)  
स्नानं समर्पयामि नमः। (यंत्र को जल से स्नान कराएं)  
वस्त्रं समर्पयामि नमः। (यंत्र पर मौलि अर्पित करें)  
जन्थं समर्पयामि नमः। (कुंकुम अक्षत चढ़ाएं)  
नैवेद्यं समर्पयामि नमः। (नैवेद्य अर्पित करें)  
पुष्पांजलि समर्पयामि नमः।

हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना बोलें। 'त्रिशक्ति सिद्धि माला' से निम्न मंत्र की 21 माला जप करें -

॥ ॐ वत्तीं क्रां मनोवांछितं कुरु कुरु ॐ  
फट ॥

इसके बाद हवन कुण्ड में सूखी लकड़ी स्थापित करें। उसमें कपूर से या धी की बत्ती से अग्नि प्रज्ज्वलित करें और उपरोक्त मंत्र द्वारा दशांश आहुति प्रदान करें अर्थात् तीन माला मंत्र आहुति दें। जिस मंत्र का जप किया गया है, हवन करते समय उस मंत्र के अंत में 'स्वाहा' जोड़ना चाहिए।

हवन सामग्री का पैकेट बाजार में मिल जाता है, उसे थाली में लेकर धी में मिला लें और आहुति के लिए इसका प्रयोग करें। हवन के बाद दुर्गा आरती करें, फिर हवन कुण्ड से भस्म लेकर कण्ठ, ललाट, हृदय, दोनों बाहें और नाभि में लगाएं। कलश के जल को अपने ऊपर, परिवार जनों तथा पूरे घर में रक्षा हेतु छिड़कें, कलश के नारियल को प्रसाद के रूप में लें। कलश के बचे जल को तुलसी या किसी पौधे में डाल दें।

### मृद्या के तीन दिवसः लक्ष्मी साधना

नित्य पूर्वोक्त विधि से प्रारंभिक गणेश पूजन/गुरु पूजन/कलश पूजन करें। प्रथम दिवस पर स्थापित किए गए 'त्रिशक्ति यंत्र' व महिषी का स्थान परिवर्तन न करें। यंत्र के दाई ओर समृद्धि हेतु 'सिद्ध चक्र' स्थापित कर लक्ष्मी का आवाहन करें -

सर्वं मंगलं मांगल्ये विष्णु वक्षः स्थलालये।

आवाहयामि देवि! त्वां क्षीरं सागरं सम्भवे॥

निम्न मंत्र बोलकर यंत्र पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प, दीप आदि अर्पित करें और अपनी मनोकामना का उच्चारण करें -

श्री महालक्ष्मयै नमः आवाहनं समर्पयामि। जंथं, अक्षतान्, पुष्पाणि, धूपं, दीपं समर्पयामि नमः।

निम्न मंत्र बोलकर विविध भोज्य पदार्थ, मिष्ठान, फलादि यंत्र पर चढ़ायें -

नाना मोदकं भृद्यैश्च फलं लङ्घं समन्वितं  
नैवेद्यं गृहतां देवि नारायणं कुटुम्बिनी।

श्री महालक्ष्मयै नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।  
नाना ऋतु फलानि च समर्पयामि।

इसके बाद पांच बत्तियों का दीपक जलाकर महालक्ष्मी की निम्न प्रकार से आरती या नीराजन करें-

नीराजनं समानीतं क्षीरसागरं सम्भवे,  
गृहतां अर्पितं भक्त्या गुरुङद्धवज भामिनी।

श्रीमहालक्ष्मयै नमः नीराजनं समर्पयामि।  
दोनों हाथ में खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि दें।

पुष्पांजलिं गृहणं मम पुरुषोत्तम वल्लभे।  
भक्त्या समर्पितं देवि! सुप्रीता भव सर्वदा

श्री महालक्ष्मयै नमः पुष्पांजलि समर्पयामि नमः।

अब 'त्रिशक्ति माला' से निम्न मंत्र की 21 माला जप करें -

### मंत्र

॥ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ ॐ नमः॥

फिर पहले बताई विधि अनुसार उपरोक्त मंत्र की दशांश आहुति दें। लक्ष्मी आरती कर प्रसाद ग्रहण करें।

### अंतिम तीन दिवसः सरस्वती साधना

प्रारंभिक पूजन के बाद 'त्रिशक्ति यंत्र' के बाई ओर समृद्धि हेतु 'प्रज्ञिका' स्थापित करें। सरस्वती आवाहन करें -

चतुर्भुजां चतुर्वर्णां चतुरानन्दं वल्लभां।

आवाहयामि वाङ्देवीं वीणा पुस्तकं धारिणीं॥

श्री सरस्वत्यै नमः आवाहनं ध्यानं च समर्पयामि।

जन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि श्री  
सरस्वत्यै नमः। (यंत्र पर कुंकुम, पुष्प, दीप, नैवेद्य अर्पित करें)

निम्न मंत्र बोलते हुए पुष्प की पंखुडियां अर्पित करें -

ॐ ऐं श्रीं नमः। ॐ ऐं श्रीं नमः। ॐ ऐं हसं नमः।  
ॐ ऐं हौं नमः। ॐ ऐं हीं नमः। ॐ ऐं अं नमः। ॐ  
ऐं कलीं नमः। ॐ ऐं चां नमः। ॐ ऐं मुं नमः। ॐ  
ऐं डां नमः। ॐ ऐं वैं नमः। ॐ ऐं वि नमः।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवती सरस्वती को  
पूष्पांजलि समर्पित कर अपनी मनोकामना बोलें -

पुष्पांजलि मया दत्तां गृहण वर्ण मालिनि।  
शरदे त्वोक् मातस्त्वां आश्रितेष्ट प्रदायिनि॥  
श्री सरस्वत्यै नमः पुष्पांजलि समर्पयामि।  
'निशक्ति माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें-

### मंत्र

// ॐ ऐं एं वार्णीश्वर्ये एं एं ॐ नमः //

फिर पहले बताई विधि के अनुसार उपरोक्त मंत्र की दशांश  
आहुति दें। गुरु आरती कर प्रसाद ग्रहण करें।

इसके अलावा नित्य दुर्गासिंशती के अध्यायों का पाठ,  
भजन इत्यादि भी संपन्न करना चाहिए। नवरात्रि में साधक को  
पूर्ण स्वाध्याय के साथ साधना संपन्न करनी चाहिए। नवरात्रि  
में की गई साधना का प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता ही है।

**बवरात्रि 24 सितम्बर 2005 से प्रारम्भ हो रही है।** आपके  
लिये बवरात्रि साधना पैकेट का दिशणि करवाया जा रहा है,  
इस बवरात्रि पर अपने दो मित्रों को पत्रिका परिवार से जोड़  
कर बवरात्रि साधना पैकेट आप उपहार स्वरूप भी प्राप्त कर  
सकते हैं। लेकिन आप किसी कारणवश अपने मित्रों को  
संदर्श्य नहीं बना सकें तब भी आप इसे कार्यालय से द्वयोधावर  
370/- में प्राप्त कर सकते हैं।

इस सारी सामग्री को प्राण प्रतिष्ठा युक्त करदे में समय  
लगता है अतः साधकों से द्विवेद्द है कि समय रहते कार्यालय  
को सूचना दे दें।

अतः विधिष्ट साधना सामग्री तो उपर्याहर स्वरूप ही है साथ  
ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को  
पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का  
पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 490/- की ती.पी.पी. ट्रास  
आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज  
देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका  
भेजी जाएगी।

### दुर्गा की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।

तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥१॥

ॐ जय अम्बे...

मांग सिन्दू विराजत टीको मृगमदको।

उज्ज्वल से दोऊ नयना, चंद्रवदन नीको ॥२॥

ॐ जय अम्बे...

कबक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।

रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥३॥

ॐ जय अम्बे...

कैहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।

सुर नरमुनि जन सैवत, तिनके दुःखहारी ॥४॥

ॐ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शौभित, नासांगे मोती।

कौटिक चब्द दिवाकर सम राजत् ज्योति ॥५॥

ॐ जय अम्बे...

शुभ निशुभ विदारे, महिषासुर धाती।

ध्युविलोचन नैना निशदिन मदमाती ॥६॥

ॐ जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड संहारे, शौणित बीज हरे।

मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥७॥

ॐ जय अम्बे...

तुम ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।

आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥८॥

ॐ जय अम्बे...

चौसठ योगिनी गावत, बृत्य करत भैरु

बाजत ताल मृदंगा और बाजत उमरू ॥९॥

ॐ जय अम्बे...

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।

भक्तन की दुःखर्ता, सुख सम्पत्ति करता ॥१०॥

ॐ जय अम्बे...

भुजा आठ अति शौभित, वर मुद्रा धारी।

मनवांछित फल पावत, सैवत नर नारी ॥११॥

ॐ जय अम्बे...

कंचन धाल विराजत अगर कपूर बाती।

श्री माल केतु में राजत् कौटि रतन ज्योति ॥१२॥

ॐ जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरती जो कई नर गावे।

कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे ॥१३॥

ॐ जय अम्बे...

जहां कर्म है, वहीं सिद्धि है

'कर्म सिद्धि' भी भाग्य का दृस्तरा स्वरूप है।

# कर्म सिद्धि बन्धुव दीक्षा

कर्म और भाग्य का संयोग ही साधक और शिष्य को जीवन में पूर्णता प्रदान करता है, ये दोनों पक्ष तराजू के दो पलड़ों की भाँति हैं, और दोनों के सन्तुलन बिना जीवन डांवाडोल हो जाता है।

पूज्य गुरुदेव यह 'मानसी दीक्षा' प्रदान करेंगे, अपने प्रत्येक समर्पित शिष्य, साधक, गृहस्थ और सन्यासी को।

यह शुभ कार्य आप अपने घर में भी बैठ कर सम्पन्न कर सकते हैं, और इसे सम्पन्न किये बिना दीक्षा क्रम की पूर्णता भी नहीं है।

**कर्म सिद्धि बन्धुव मानसी दिवस**  
जिसे सांसारिक भाषा में सज्यास दिवस कहा जाता है

)) (

मानव का इस धरती पर जन्म लेना सामान्य घटना नहीं है, स्थिति मनुष्य के साथ भी होती है, कि वह अपने जीवन में अपितु उसके जन्म का एक विशेष प्रयोजन है, एक विशेष अनुकूलता के लिए उतना ही प्रयास करता है, जितना उसमें उदाहरण है, एक विशेष लक्ष्य है। किन्तु यह विडम्बना की सामर्थ्य होता है, उससे अधिक वह कुछ नहीं कर पाता। बात है, कि वह अपने जीवन के लक्ष्य विशेष को महत्व नहीं देता है या यह भी कह सकते हैं, कि उसे जीवन पथ का ज्ञान नहीं होता है। जैसे कि बालक जब छोटा होता है तो वह यह समझ पाता, कि कल मैं बड़ा होऊँगा और मैं यह कार्य करूँगा, वह तो अपने को मात्र बालक की स्थिति में ही मानता है, उसी में मस्त रहता है, भूख, प्यास लगने पर वह ज्यादा से ज्यादा रोने लगता है, इससे अधिक वह कुछ नहीं कर पाता है। वह इसलिये क्योंकि इससे अधिक कुछ करना उसकी सामर्थ्य से बाहर है।

जब उसके माता-पिता या शिक्षक उसे कुछ देंगे या बनाएंगे, नहीं जानते, कि उनके भाग्य में क्या लिखा है, कब क्या होगा, तभी वह खा-पी सकेगा या प्राप्त कर सकेगा। ठीक यहीं वह किस क्षेत्र में सफल होगा, किस व्यवसाय को सम्पादित

करने से उसे अनुकूलता प्राप्त हो सकेगी? वह तो रात दिन अपने भविष्य के प्रति चिंतित रहता है, पारिवारिक समस्याएं, शत्रु बाधा, आर्थिक अभाव, पति-पत्नी में मतभेद, संतान सुख में न्यूनता, राज्य बाधा, शारीरिक कष्ट आदि अनेकों समस्याएं, शत्रु बाधा, आर्थिक अभाव, पति-पत्नी में मतभेद, संतान सुख में न्यूनता, राज्य बाधा, शारीरिक कष्ट आदि अनेकों समस्याएं उसके जीवन में बनी रहती है, जिससे उसे जितनी प्रगति करनी चाहिए, उतनी नहीं कर पाता है और जीवन का अधिकांश भाग उसे इन समस्याओं से जूझने में लग जाता है।

**प्रायः** देखने में आता है, कि व्यक्ति जीवन में यौवनावस्था की प्रथम सीढ़ी पर पांव रखते ही कर्तव्यों के भार से लद जाता है, स्वयं के पालन-पोषण के साथ माता-पिता, भाई-बहिन आदि का परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप में भार व उत्तरदायित्वों का निर्वहन आदि लगभग 70-80% लोगों के जीवन की कहानी है। शेष बहुत कम लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें पैतृक सम्पदा व सुविधाएं प्राप्त होती हैं।

युवा अवस्था में आते ही व्यक्ति को अपने जीवन एवं भविष्य की चिंताएं आकर घेर लेती हैं, स्वयं के व्यवसाय अथवा नौकरी इनमें किसका चयन किया जाय, इस प्रकार के छन्द उसके मस्तिष्क में उभरने लगते हैं। व्यवसाय चयन के बाद स्वयं का विवाह, स्वास्थ्य, घर की सुख-शांति, शत्रु बाधा निवारण आदि अनेक विषयों पर प्रति पल द्वन्द्वात्मक विचार एवं चिंताएं उसे घेरे रहती हैं।

जीवन के कर्तव्यों और इन आवश्यक प्राथमिक पक्षों को यदि क्षण भर के लिए परे रखकर देखें, तो व्यक्ति का अपनी इच्छा और भावनाओं का भी संसार होता है, और वह संसार ही उसके दैनिक जीवन में सरसता तथा गति का आधार होता है, लेकिन कब जीवन कर्तव्यों, भावना और वास्तविकताओं के बीच शीघ्रातिशीघ्र बीत जाता है, इसका पता ही नहीं चलता है और जब पता चलता है, तब जीवन में कुछ ठहराव आ जाता है उसकी संतान बड़ी हो जाती है। कर्तव्यों का अधिक भार उसके कंधों पर लद जाता है और जब तक वह मृत्यु शय्या पर नहीं सो जाता, तब तक वह चैन नहीं ले पाता और जाते-जाते वही भार अपनी संतान के ऊपर लाद देता है।

यही प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है, उसमें कोई भी नवीनता या उनके जीवन में कोई भी नवीन क्रान्ति घटित नहीं होती है। वह जीवन के मूल्य को भी नहीं समझ पाता और उसे अपने जीवन में कुछ सोचने-समझने का अवसर भी नहीं मिल पाता है। उसकी आशाएं, तृष्णाएं अन्दर ही

अन्दर ज्यों की त्यों दबी रह जाती हैं। यहां तक कि वह अपने जीवन में कभी भी चैन की सांस नहीं ले पाता है।

### **कर्म सिद्धि नहीं है तो भाग्य का साथ कैसे?**

भाग्य बाधा के साथ अन्य महत्वपूर्ण कारण भी जुड़े होते हैं, जिससे व्यक्ति की पूर्व जन्मकृत दोष, ग्रह बाधा, पितृ बाधा, तंत्र बाधा दोष या स्थान दोष जिसे भू-भवन दोष भी कह सकते हैं आदि महत्वपूर्ण कारण हो सकते हैं। कर्म का प्रभाव तो व्यक्ति के जीवन पर निश्चित तौर पर पड़ता ही है। आज हम जैसा कार्य सम्पादित करते हैं, उसका फल उसी अनुरूप आज नहीं तो कल मिलता ही है और इस कर्म के अनुसार व्यक्ति का भविष्य बनता है। यही कर्म उसके शरीर त्यागने के उपरान्त उसका भाग्य बनता है। इससे स्पष्ट है, कि जिन व्यक्ति के जीवन में पूर्व जन्म कृत दोष होते हैं, भाग्य बाधा उनके जीवन में बराबर बनी रहती है। उन्हीं कर्मों के अनुरूप उनका जन्म उन ग्रह नक्षत्र तथा योग में होता है, जिससे उनके जीवन में उन बाधा कारक ग्रहों का प्रभाव घटित होता है।

इसका मुख्य कारण यह है, कि भाग्य उसका पूरा साथ नहीं देता है, जितना परिश्रम वह करता है, उसका फल उसे पूर्ण रूप से नहीं मिल पाता है, उसके जीवन में जो अनुकूलता आनी चाहिए, वह नहीं आ पाती है और इसका मुख्य कारण है, कि उसके भाग्य में वह सुख-सुविधा नहीं है; और इसके अन्य कई कारण भी हो सकते हैं। इसलिए भाग्य के साथ व्यक्ति के कर्म की नींव मजबूत होनी आवश्यक है अन्यथा भाग्य का उचित फल नहीं मिल पाता है।

‘कर्म सिद्धि युक्त भाग्योदय’ का तात्पर्य यह है, कि हम जितना परिश्रम करें उससे अधिक ही हमें अर्थ लाभ, ऐश्वर्य प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति मिले। शास्त्रों में भाग्योदय के तात्पर्य को स्पष्ट किया है, कि अल्प प्रयत्न से ही कार्य सिद्ध हो जाय, उसे भाग्योदय कहते हैं। शास्त्रों में कहा गया है, कि कर्म सिद्धि के प्रभाव से भाग्योदय होने से जीवन में निम्न 14 स्थितियां अपने आप बनने लगती हैं और उनके लाभ व्यक्ति को प्राप्त होने लगते हैं और वह निरंतर उन्नति करता रहता है, जिससे उसे भाग्यशाली माना जाता है।

1. स्वस्थ सुन्दर देह, 2. पूर्ण रोग रहित जीवन, 3. पूर्ण मात्रा में धन एवं ऐश्वर्य, 4. पूर्ण पराक्रम, पौरुष एवं बल प्राप्ति, 5. भूमि एवं भवन सुख, 6. सन्तान सुख, 7. शत्रु मर्दन, 8. सुयोग्य एवं सुन्दर पत्नी प्राप्ति एवं सफल गृहस्थ जीवन, 9. अकाल मृत्यु निवारण, 10. राज्य में सम्मान एवं

निरन्तर उन्नति, 11. आय के विभिन्न स्रोत एवं अनायास धन प्राप्ति, 12. तीर्थ यात्रा, पुण्य कर्म एवं समाज में सम्मान, 13. विदेश यात्रा एवं विविध स्थानों का भ्रमण तथा 14. मन में पूर्ण शांति एवं मृत्यु के उपरांत मोक्ष प्राप्ति।

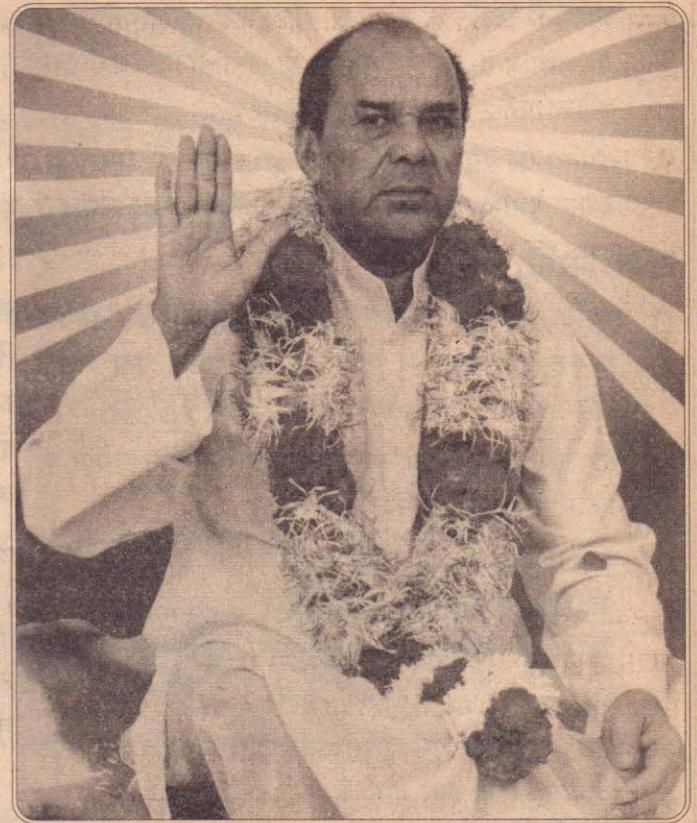
व्यक्ति के जीवन में भाग्योदय होने पर उक्त स्थितियां स्वतः ही निर्मित होने लगती हैं। जिनके जीवन में ये स्थितियां नहीं घटित होती और जीवन यात्रा कष्टमय व्यतीत होती है, तो निश्चित ही समझ लीजिए, कि भाग्य साथ नहीं दे रहा है और इसका एकमात्र समाधान साधनात्मक प्रक्रिया अपनाने से ही सम्भव है। साधना के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की उन बाधाओं का शमन कर लेता है, जो निरन्तर उसकी प्रगति में रोड़ अटकाएं रहती हैं।

सद्गुरुदेव सदैव अपने प्रवचनों में कहा करते थे कि 'केवल भाग्य के सहारे उन्नति नहीं हो सकती और केवल कर्म के सहारे भी उन्नति नहीं हो सकती। लेकिन जब कर्म और भाग्य का सहयोग बनता है तो कर्म प्रधान हो जाते हैं और वे श्रेष्ठ भाग्यकारी स्थिति लाते हैं। मनुष्य अपने जीवन में केवल भाग्य के भरोसे बैठा नहीं रह सकता। उसे जीवन में कर्म तो सम्पन्न निरन्तर करना ही पड़ेगा। गीता में सार रूप में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को यही कहा कि 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मां फलेषु कदाचन' है! अर्जुन तु कर्मरत रहेगा तो उसका फल तुझे अवश्य प्राप्त होगा। जब कर्म में उच्चता, वर्चस्व की स्थिति आयेगी तो सोए हुए भाग्य को भी जागना ही पड़ेगा।

भाग्यशाली व्यक्ति वे ही कहे जाते हैं जो निरन्तर कर्म में रत रहते हैं। वे अपने पूर्वजन्म के कर्मों के दोष को मिटाकर भाग्य को जाग्रत कर देते हैं। इसीलिये संसार में कर्म को प्रधानता दी गई है। भगवान् श्रीकृष्ण ने भी शिष्य रूप में अर्जुन को अपनाकर उसे कर्म का ही ज्ञान दिया, उसे जो दीक्षा प्रदान की वह कही गई "कर्मवर्चस्व सिद्धि दीक्षा"।

योग्य गुरु केवल द्वापर में ही नहीं हुए। गुरु परम्परा तो निरन्तर चली आ रही है और कोई भी श्रेष्ठ गुरु अपने शिष्य को कर्म से वंचित कर जीवन से भागने के लिये प्रेरित नहीं करता, अपितु गुरु तो उसे संसार रूपी महासंग्राम में खड़ा कर निरन्तर बल और शक्ति प्रदान कर जीवन संघर्ष में जितने की प्रेरणा प्रदान करता है। जब सद्गुरु यह क्रिया सम्पन्न करते हैं तो वह क्रिया "कर्मवर्चस्व सिद्धि दीक्षा" कहलाती है।

इस बार कई वर्षों बाद पुनः ऐसा अवसर आया है कि गुरु द्वारा मानसिक रूप से शिष्य को कर्मवर्चस्व सिद्धि दीक्षा



प्रदान की जायेगी। इस दीक्षा को प्राप्त करने का शुभ मुहूर्त कार्तिक पूर्णिमा (15 नवम्बर 2005) है। साधक इस दिवस को सन्न्यास दिवस के रूप में जानते हैं। लेकिन गुरुदेव ने कहा है कि सन्न्यास का तात्पर्य जीवन से भागना नहीं अपितु जीवन में संघर्ष करना है और जो गुरु आशीर्वाद, गुरु दीक्षा प्राप्त कर संघर्ष करता है उसे आत्मबल, दैविक बल और देहिक बल प्राप्त होता ही है और उसे हर स्थिति में श्री अर्थात् विजय की प्राप्ति होती है। यही कर्मवर्चस्व सिद्धि दीक्षा का स्वरूप है।

## कर्म और जीवन

- ★ कर्म के दो भेद हैं, प्रथम तो ईश्वर प्रदत्त है, जैसे शरीर में रक्त प्रवाह, हृदय धड़कना, इन्द्रियों का ज्ञान।
- ★ दूसरा स्वप्रयास से किया गया कर्म, जैसे चलना, खाना, पीना, दिनचर्या-निर्धारण।
- ★ स्वप्रयास के बिना व्यक्ति का जीवन, जीवन नहीं है, अपने जीवन को विशेष बनाने के लिए प्रयास करना ही पड़ेगा और यही वास्तविक कर्म भी है।
- ★ भाग्य प्रबल हो लेकिन कर्महीन हो, तो भाग्य से प्राप्त लाभ भी नष्ट हो जाता है, स्थायी नहीं रहता।
- ★ कर्म ही व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है उसके

जीवन में उन्नति के नये द्वार खोलता है, और यदि भाग्य भी साथ न दे, तो जीवन ऐसा हो जाता है जैसे कर्म रूपी मुद्रिका पर भाग्य रूपी हीरे जड़े हों।

- ★ दुर्भाग्य को सौभाग्य में कर्म से ही बदला जा सकता है, केवल दुर्भाग्य का रोना-रोने से कोई पूर्ति नहीं होती।

## कर्म सिद्धि

- ★ व्यक्ति प्रथम तो इच्छा करता है और फिर उस पर अपनी बल-बुद्धि से कार्य करता है और वही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है।
- ★ केवल इच्छाएं करना स्वप्न में किले बनाने के समान है, कि नींद टूटी और सब कुछ समाप्त।
- ★ कर्म सिद्धि भी प्रत्येक को प्राप्त नहीं होती, ऐसे एक दो नहीं हजारों उदाहरण आप लोगों के सामने होंगे, कि अपनी पूरी बुद्धि लगा रहे हैं, परिश्रम कर रहे हैं, लेकिन परिश्रम का फल प्राप्त नहीं होता।
- ★ कर्म सिद्धि भी गुरु कृपा, आशीर्वाद, शुभ कार्य, श्रेष्ठ विचारों से ही प्राप्त होती है।
- ★ गुरु कृपा से तो दुर्भाग्य का घटाटोप अन्धकार भी दूर हो सकता है, और उसमें शुभ्र, श्वेत, दिव्य प्रकाश आ सकता है, जो जीवन का स्वरूप ही बदल देता है।
- ★ कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा - गुरु द्वारा अपने प्रत्येक शिष्य को सही समय पर प्रदान की जाती है।
- ★ कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा - प्राप्त कर शिष्य जो भी कर्म अपने पूरे प्रयत्नों से सम्पन्न करता है, उसमें सफलता मिलती ही है।
- ★ कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा - प्राप्त किये बिना जीवन में अन्धी राह पर चलना ही है, जिसमें कुछ भी स्पष्ट नहीं है।
- ★ कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा - प्राप्त शिष्य को यह ज्ञान रहता है, कि मैं यह कर्म एक निश्चित उद्देश्य हेतु कर रहा हूँ और मुझे इसमें सफलता मिलेगी ही और उसका यह विश्वास हर बार पूर्ण होता ही है।
- ★ दिनांक 15 नवम्बर 2005 कर्म सिद्धि वर्चस्व दिवस है और इस दिन पूज्य गुरुदेव अपने प्रत्येक शिष्य को यह महामति, महामाया, मानसी दीक्षा प्रदान करेंगे, पूरे भारतवर्ष में बैठे अपने शिष्यों को।

## आपको क्या करना है?

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा गुरु कृपा से, गुरु आशीर्वाद से

सम्पन्न होती है, और इसी से भाग्योदय सम्पन्न होता है।

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा का समय दिनांक 15 नवम्बर 2005 को प्रातः 6.48 से 9.24 बजे तक ही है। इसके अतिरिक्त यदि कोई शिष्य यह महत्वपूर्ण दीक्षा लेना चाहता है, तो इसे पूज्य गुरुदेव के समक्ष उपस्थित होकर भी प्राप्त कर सकता है।

इस दिन पूज्य गुरुदेव अपने सभी शिष्यों को यह मानसी दीक्षा प्रदान करेंगे, आप जैसे प्रत्येक शिष्य को अपने घर बैठे पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार कार्यक्रम सम्पन्न करना है।

यदि आप दीक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो यह अंक प्राप्त होते ही, पूज्य गुरुदेव के नाम व्यक्तिगत पत्र लिख दें, कि 'मैं आपका शिष्य यह 'कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा' प्राप्त करना चाहता हूँ।'

इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री 'कर्मसिद्धि मुद्रिका', पूर्व जन्म कृत दोष निवारण 'कलीं गुटिका', कमल गद्वा स्वरूप 'श्री बीज', संसार स्वरूप 'रत्न गर्भ', प्राण प्रतिष्ठा युक्त गुरु चित्र सम्मिलित है, की व्यवस्था यहां से की जायेगी।

प्रातः स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर शांत मुद्रा में बैठ जाय, और गुरु मंत्र का जप प्रारम्भ कर दें, प्रत्येक गुरु मंत्र की माला के जप के साथ ही चार सामग्री में से एक सामग्री सामने रख गुरु चित्र अथवा गुरु यंत्र के सामने अर्पित कर दें, इस प्रकार चार माला मंत्र जप सम्पन्न करना है।

तत्पश्चात् शांत मन से अपने दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र से गुरु नमस्कार सम्पन्न करें -

नमो नमो निरञ्जन नमस्कार गुरुदेवतः ।  
वन्दनं सर्व साधना परन्नाम परांगतम् ॥

उसके पश्चात् हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प करें -

'सर्व कर्मा सर्व काम सर्व जन्थ सर्व रस सर्व मिदम सर्व सिद्धि एव मम आत्मा हृदय प्रत्यभिसंभविता नमो गुरुदेव !'

यह संकल्प कर्म सिद्धि का सर्वोत्तम स्वरूप है, इस मंत्र का जप कर शांत भ्राव से बैठ जाये और 'ऐं' बीज मंत्र बिना माला जप करते रहें, शरीर को बिल्कुल ढीला छोड़ दें और पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रवाहित तरणों को अपने भीतर समाहित होने दें।

इस दीक्षा को प्राप्त करने वाला सौभाग्यशाली शिष्य अपने जीवन में उसी क्षण से एक परिवर्तन होता अनुभव करेगा, उसके कर्म और उसके भाग्य का संयोग शुद्ध रूप में, श्रेष्ठ रूप में होकर पूर्ण फल प्रदान करेगा।

**जीवन है तो कर्म है**

कर्म प्रधान व्यक्ति ही पुरुष कहलाता है

कर्म हीन व्यक्ति का भाग्योदय भी नहीं होता

इस हेतु आपके लिये सौभाग्य का एक अवसर आया है

**गुरुप्रदक्षिण श्रैष्ठदाम्**

**कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा**

आप घर बैठे हैं या यात्रा में हैं यह मत सोचिये की गुरुदेव आपके साथ नहीं हैं। गुरु तो दिव्य तरंगों के माध्यम से सदैव अपने शिष्य के साथ रहते ही हैं। शिष्य अपनी तरंगें जाग्रत कर वह भाव ग्रहण कर सके यह क्षमता, यह भावना, यह श्रद्धा, यह विश्वास उसमें उत्पन्न होना ही चाहिये।

कर्मवर्चस्व सिद्धि दीक्षा प्राप्त करने का श्रेष्ठ मुहूर्त है, संन्यास महोत्सव इस दिन आप अपने जीवन में आलस्य, निद्रा को त्याग करने का संकल्प लेते हैं। इस दिन आप अपने जीवन में ऋषि बनने का संकल्प लेते हैं। जिस दिवस पर आप अपने जीवन में भोग और मोक्ष की प्रार्थना करते हैं। जिस दिवस पर गुरुदेव ने संन्यास तत्व ग्रहण कर नारायण से निखिल की यात्रा प्रारम्भ की। यह दिवस गुरुपूर्णिमा, निखिल जयन्ती जितना ही महत्वपूर्ण, सौभाग्यशाली दिवस है। इस दिन प्राप्त की हुई दीक्षा पूरे योग-रोम में व्याप्त हो जाती है।

जीवन की दुर्लभ तेजस्वी

और

अद्वितीय

**कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा**

दिनांक : 15 नवम्बर 2005

## नियम

- ❖ आप इस प्रपत्र को भर कर आज ही लिफाफे में भेज दीजिए, हम आपका प्रपत्र गुरुदेव के समक्ष प्रेषित कर देंगे।
- ❖ गुरुदेव की आज्ञा से आपको “कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा” एवं दो सौ चालीस रूपयों की वी.पी. से भेज रहे हैं, जिसे आप पोस्ट मैल को देकर वी.पी. छुड़वा लें, और “कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा हेतु सामग्री” पहले से ही मंगवा कर अपने पास सुरक्षित रख लें।
- ❖ वी.पी. छूटने पर आपने जो मित्र का पता दिया है, उसे एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे।
- ❖ 15 नवम्बर 2005 को लेख में दी गई साधना विधि अनुसार पूजन सम्पन्न करें और अपने आपको ऊर्जा प्राप्ति के लिए तत्पर करें।
- ❖ पूज्य गुरुदेव 15 नवम्बर 2005 को दीक्षा मुहूर्त में विशेष ऊर्जा प्रवाहित करेंगे। प्रत्येक साधनारत साधक विशेष गुरु वेतना अनुभव भी करेंगे, और आपके पूरे शरीर में नारायण शक्ति स्थापित हो सकेगी। इस काल में निम्न मंत्र का उच्चारण करना है। यदि ध्यान भंग भी होता है तो कोई विंता नहीं करें, गुरुदेव के वित्र की ओर देखते रहें -

मंत्र : // ऐं //

- ❖ मंत्र जप के पश्चात् शांत भाव से अपने आसन पर बैठे रहें, आपके शरीर में कम्पन होने लगे तो होने दे। मन को शान्त रखकर ऊर्जा प्रवाह ग्रहण करते रहें। यह प्रवाह मन्द और तीव्र हो सकता है। उसके पश्चात् ‘कर्म वर्चस्व मुद्रिका’ को दायें हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण कर लें।

आपके जीवन का सौभाग्य

### कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को सिद्धि प्रदान करने एवं जगमगाहट देने में समर्थ है।

#### \* प्रपत्र \*

आप “कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा सामग्री” 240/- रु की वी.पी. से निम्न पते पर भेजें। वी.पी. आने पर मैं छुड़ा लूँगा।

मेरी पत्रिका सदस्या संख्या .....

मेरा पूरा नाम .....

मेरा पूरा पता .....

वी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बना दें और रसीद मुझे भेज दें।

मेरे मित्र का नाम .....

मेरे मित्र का पता .....

# शिव्य धर्म

प्राण तोषिणी तंत्र से

तदोपरोधाद् देवेशि! गुरु तंत्र सु दुर्लभं।  
तंत्राणां सारभूतं यत् कथयामि महेश्वरि॥१॥  
कैलाश पर्वत के शिखर पर भगवान् शंकर ने  
कहा- हे महेश्वरि! तुम्हारे आग्रह से तंत्रों के सार-  
भूत अति दुर्लभ 'गुरु-तंत्र' को बताता हूं, जिसके  
पढ़ने व समझने से दिव्य ज्ञान मिलता है।

न गुरोरधिकं शास्त्रं न गुरोरधिकं तपः,  
न गुरोरधिकं मंत्रं न गुरोरधिकं फलं।  
न गुरोरधिकं देवो न गुरोरधिकं शिवः,  
न गुरोरधिका मुक्तिर्न गुरोरधिकं जपः॥२॥  
गुरु से बढ़कर न शास्त्र है, न तपस्या, न मंत्र  
और न ही स्वर्णादि फलक। गुरु से बढ़कर न देवी  
हैं, न शिव ही गुरु से बढ़कर हैं और न ही मोक्ष या  
मंत्र जप। पुक्तमात्र सद्गुरु ही सर्वश्रेष्ठ हैं।

गुरु सेवां प्रकुर्वाणो शिव लोकं स गच्छति,  
समुक्तः सर्व पापेभ्यः शिव लोकं स गच्छति॥३॥  
गुरुदेव की सेवा करता हुआ जो जन्म मरण के  
बंधन से मुक्त होता है, वह समस्त पापों से छूटकर  
शिव-लोक में जाता है।

अज्ञानात् पामरो लोके विश्वासं न गुरो भवेत्,  
तस्य कल्याणि! मंत्रादौ मम वाक्ये कथं रतिः॥४॥  
हे देवेशि! अज्ञान के कारण इस संसार में लोगों  
की बुद्धि भ्रम में पड़ जाती है और उन्हें कोई सिद्धि  
नहीं मिल पाती। उन्हें गुरु की बातों पर विश्वास नहीं  
हो पाता, ऐसी दशा में उन्हें मेरे वचनों और मंत्रों पर  
भी विश्वास नहीं होता।

गुरु सेवामकृत्वा तु ये भक्ताः कुल सेविनः,  
तेषां मंत्राश्च देवाश्च प्रसीदन्ति न सर्वदा॥५॥  
गुरुदेव की सेवा किए बिना जो भक्त कुल धर्म का  
पालन करते हैं, उनसे मंत्र और देवता श्री प्रसन्न नहीं  
होते। अतः वाणी, मन और शरीर तीनों से ही सदा  
गुरु कार्यों में तत्पर रहना चाहिए।

क्रोश मध्ये स्थितो नित्यमेक वारं समाचरेत्,  
योजनान्तः स्थितः शिष्यो वर्षे वार त्रयं नमेत्॥६॥  
जो शिष्य गुरु स्थान के निकट रहता हो (एक  
कोस की ढूरी पर), उसे प्रतिदिन एक बार जाकर  
गुरुदेव को प्रणाम करना चाहिए। परन्तु यदि कोई  
शिष्य अनेक योजन अथवा काफी ढूर रहता हो, तो  
श्री उसे वर्ष में तीन बार और नहीं तो एक बार तो  
गुरुदेव के पास जाकर आवश्य प्रणाम करना चाहिए।

देवी पूजा गुरोः पूजा तृप्तिश्च गुरु तर्पणम्,  
गुरोः पदाब्जयोरादौ वद्यत् पृष्ठाभ्यलित्रयम्॥७॥  
गुरु की पूजा करने से ही इष्ट की पूजा हो जाती  
है, गुरु का तर्पण करने से और गुरु अक्ति करने से  
ही इष्ट का तर्पण व अक्ति हो जाती है। गुरु वन्दना  
करने से ही सर्व देव-देवियों की स्तुति सम्पन्न हो  
जाती है। ऐसा ही शिष्य को समझना चाहिए।

नष्टाय च महा देवि! मलिनाय न दाययेत्,  
गुरु भक्ति विहीनाय क्रोध लोभ रतात्मने॥८॥  
हे महादेवि! मलिन बुद्धि और गुरु अक्ति से रहित  
तथा क्रोध, लोभादि से घ्रस्त, नष्ट आचार-विचार  
वाले व्यक्ति के समझ गुरु तंत्र के इन दुर्लभ पवित्र  
रहस्यों को स्पष्ट नहीं करना चाहिए।

# शुद्ध वाची

- ☆ प्रेम का तात्पर्य है ईश्वर, और जब तक प्रेम के रस में भीगेगा नहीं, ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती, गुरुदेव से साक्षात्कार नहीं हो सकता... और यह अन्दर उतर कर प्रभु से साक्षात् करने की क्रिया ही तो प्रेम है।
- ☆ तुम नदी बन जाओ, क्योंकि प्रेम की कल्पना, प्रेम की भावना नदी जानती है। वह नदी गंगोत्री से रवाना होती है, जहां पत्थर की बड़ी-बड़ी चट्टानें हैं... मगर नदी को उसका एहसास नहीं होता, नदी तो बस आगे की ओर गतिशील होती है, उसका लक्ष्य, उसका चिन्तन, धारणा एक ही है, कि मुझे समुद्र नें जाकर लीन हो जाना है।
- ☆ समुद्र खुद आगे चलकर गंगोत्री के पास नहीं जाएगा, कि गंगा तुम आओ मुझे मिल लो, गंगोत्री से गंगा खुद उतर कर समुद्र तक जाएगी। उस गंगा को जाना है समुद्र तक, यदि गंगा नहीं जाएगी, बीच में सूख जाएगी, तब भी समुद्र अपनी जगह को नहीं छोड़ेगा। समर्पण तो शिष्य को ही करना पड़ेगा।
- ☆ मनुष्य की दुर्धर्ष प्रवृत्तियां स्वतः अपने आप में जन्म लेती हैं, उनको समन्वय करने के लिए सिद्धाश्रम कुछ विशिष्ट योगियों, कुछ विशिष्ट महात्माओं को इस गृत्यु के प्राणियों के बीच भेजता है, जो अपनी पवित्रता और द्विव्यता के सन्देश के माध्यम से उन लोगों में आध्यात्मिक चेतना पैदा करते हैं।
- ☆ समर्थ और योग्य गुरु का मतलब है - उसको सिद्धियां प्राप्त हों, ऐसा सामर्थ्य प्राप्त हो, जो आपको ले जा सके अपने साथ और सिद्धाश्रम को दिखा सके, उन योगियों को दिखा सके, उनके पास बिठा सके।
- ☆ प्रत्येक युग में प्रत्येक परिस्थिति में सिद्धाश्रम के योगी अलग-अलग नामों से, अलग-अलग रूपों में पृथ्वी तल पर अवतरित हुए हैं, और आम लोगों की तरह रहकर ही उन्होंने जीवन यापन किया है, चाहे वे कृष्ण हो या राम हो या शंकराचार्य।

- ☆ सिद्धाश्रम के योगियों ने अपने जीवन में कोई विशिष्टता नहीं सरकी, क्योंकि समाज का भाग बनकर ही समाज को चेतना दी जा सकती है, परन्तु यदि ऐसे युग पुरुष को पहचान न सके, ऐसे सद्गुरु के पास न पहुंच सके, तो यह युग का ही दुर्भाग्य है।
- ☆ ईश्वर ने तुम्हारा जन्म एक विशेष उद्देश्य के लिए किया है, क्योंकि प्रभु की यह विशेष स्थिति है कि वह एक घास का तिनका भी बेकार में पैदा नहीं करता... और तुम्हें भी यदि ईश्वर ने जन्म दिया है, तो जस्तर इसके पीछे कोई हेतु है, कोई कारण है, कोई चिन्तन है।
- ☆ मैं तो तुम्हें आवाज दे रहा हूं युगों-युगों से, मैं तो तुम्हें बुला रहा हूं जन्म-जन्म से, मैं तो निमंत्रण दे रहा हूं दोनों भुजाएं फैलाकर तुम्हें सीने से लगाने के लिए, दिल में पूरी तरह उतार देने के लिए।
- ☆ मैं तो काफी समय से आवाज दे रहा हूं तुम्हें, निमंत्रण दे रहा हूं तुम्हें, स्वीकृति दे रहा हूं, अपने पास आने की, आकर मिलने की, मिलकर एकाकार हो जाने की, एकाकार होकर समर्पण हो जाने की, और समर्पित होकर अपने अस्तित्व को मिटा देने की।
- ☆ जीवन में तुम्हें रुकना नहीं है, निरन्तर आगे बढ़ना है और इस आगे बढ़ने में जो आनन्द है, जो तृप्ति है, वह जीवन का सौभाग्य है।
- ☆ समुद्र तो बांहे फैलाए खड़ा रहता है, नदी वेग में आती है... और बीच में रुकावट आती है, पर वह नदी रुकती नहीं, गांव आते हैं, तो गांव को बहा देती है... समाज, किनारों के अन्दर नदी को बांधने की कोशिश करता है, तो नदी उन किनारों को तोड़ देती है। नदी तो तेजी से भागती है, अपने प्रियतम से मिलने... और जिस क्षण समुद्र में लीन हो जाती है, बिल्कुल शांत हो जाती है, तब उसकी लहरों से संगीत फूट पड़ता है, जिसे साधना और शिष्यता की पूर्णता कहा है, ब्रह्म की उपलब्धि कहा है।

भगवान् श्री कृष्ण ने सम्पन्न की षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना  
महर्षि वेद व्यास ने सम्पन्न की षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना  
ब्रह्मर्षि विश्वामित्र ने सम्पन्न की षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना  
जगद्गुरु शंकराचार्य ने सम्पन्न की षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना

क्योंकि षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना आधार साधना है  
जो भोग और मोक्ष, भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति देने में समर्थ है

॥ श्री सुन्दरी साधना तत्परणं ॥  
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

इस बार नवरात्रि के नौ दिवसों में

## भगवती त्रिपुर सुन्दरी की साधना बौ रूपों में करें

त्वदन्यः पाणिभ्याभयवरदो दैवतगण  
स्त्वमेकानेवासि प्रकटितवराभीत्यभिनवा  
भयात् त्रातुं वतुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं  
शरण्ये लोकानां तवहि चरणावेव निपुणौ॥

‘मां! तुम्हारे अतिरिक्त सभी देवगण अपने हाथों से बर एवं अभय प्रदान करने वाले हैं। केवल तुम ही तो एक ऐसी हो जिसे बर तथा अभय प्रदान करते समय उसे हस्तों से प्रगट करने की आवश्यकता ही नहीं, क्योंकि जहां अन्य देवतागण अपने भक्तों को उसका अभिष्ट हाथों से देते हैं, भक्तों का भय से रक्षण करने वाली मां! तुम उन्हें बहीं अपने चरणों से देदेती हो।’

त्रैलोक्य पावनी मां भगवती जगदम्बा का मातृ स्वरूप भी अपने अन्दर शक्ति की कैसी चैतन्यता समाहित किये हैं, इसे पहिचानने के लिए पूरे वर्ष में नवरात्रि के पर्व रचे गए, साधनाओं इस सामान्य बुद्धि और इन सामान्य चर्म चक्षुओं से जाना भी कैसे जा सकता है? मां भगवती जगदम्बा के भीतर कैसा मुहूर्त प्राप्त किया गया। चैत्र नवरात्रि एवं आश्विन नवरात्रि, इन ममतामय अनुग्रह, इसका सहज अनुमान लगाना कठिन ही है। दो प्रगट नवरात्रियों के अतिरिक्त दो गुप्त नवरात्रियां भी होती हैं।

इस चराचर जगत में मां भगवती जगदम्बा की ही शक्ति सर्वत्र क्रियाशील है। वे ही आनन्दरूपा हैं, वे ही पालनकर्ता हैं और वे ही अपने भक्तों का उद्धार करने में समर्थ हैं। केवल इस धरा के भक्तों का ही नहीं वरन् रुद्र, वसु, मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि, अश्विनी कुमारों, विष्णु, ब्रह्मा और प्रजापति का भी पोषण करने वाली आद्या शक्ति मां भगवती जगदम्बा ही है। कहीं महाकाली के रौद्र रूप में अशुभ का विनाश कर सहायक होती हुई, कहीं महालक्ष्मी के विविध आभूषणों से युक्त श्रृंगारमय स्वरूप में ऐश्वर्य देती हुई और कहीं महासरस्वती के पावन स्वरूप में जीव को आध्यात्मिक उच्चता की ओर ले जाती हुई, पल-पल गतिशील रहती हुई, पल-पल मुखरित और चैतन्य रूपा बन कर। जिस प्रकार यह प्रकृति प्रतिपल नूतन होती हुई सौन्दर्यमयी है, पालन करने में समर्थ है। तभी तो प्रकृति को भी स्त्री रूपा ही माना गया।

अश्विन नवरात्रि मां भगवती की विशेष उल्लास का पर्व है। नवरात्रि का तात्पर्य ही है कि साधक या भक्त के जीवन में नवरसों का संचार हो सके, विविधता आ सके और वह भी प्रतिपल नूतन हो सके।

इस वर्ष आश्विन नवरात्रि का महत्व इस बात से और भी अधिक बढ़ गया है कि यह पूरे नौ दिवसों की पूर्ण नवरात्रि घटित हो रही है, जिसमें तिथियों का क्षय नहीं है, अतः साधक के लिए तो एक ऐसा अवसर उपस्थित हो रहा है, जबकि इस चैतन्य काल का प्रत्येक क्षण उपयोग में लाते हुए वह प्रत्येक दिवस को एक नए ढंग से साधना के साथ जोड़ते हुए न केवल अपने भौतिक जीवन की वरन् शक्ति प्राप्ति के द्वारा आध्यात्मिक जीवन को भी ऊँचाईयों तक ले जा सकता है।

यह एक मिथ्या धारणा है कि आध्यात्मिक सफलता की प्राप्ति के लिए गतिशील साधक को जीवन में शक्ति साधना की आवश्यकता नहीं पड़ती और वहीं दूसरी ओर गृहस्थ साधक शक्ति प्राप्ति को केवल साधु, संन्यासियों के जीवन की ही विषय वस्तु मानता है। इस विरोधाभास का सही हल यही है, कि प्रत्येक साधक अपने जीवन में शक्ति- साधना को एक महत्वपूर्ण स्थान दे तथा स्वयं अनुभव कर सके कि किस प्रकार शक्तिमयता के द्वारा ही जीवन के समस्त सुख-वैभव और भोग-विलास प्राप्त किए जा सकते हैं।

जहां भौतिक जीवन एवं आध्यात्मिक जीवन, दोनों को ही सन्तुलन में रखते हुए जीवन को सफल बनाने की बात आती है, वहां स्वयमेव त्रिपुर सुन्दरी साधना का महत्व निर्विवाद रूप से सर्वोच्च सिद्ध है ही -

यत्रास्ति भोगे नहि तत्र मोक्षरो  
यत्रास्ति मोक्षरो जहि तत्र भोगः।  
श्री सुन्दरी साधन तत्पराणां  
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव॥

अर्थात् भोग प्राप्ति के इच्छुक को आध्यात्मिक उपलब्धि कहां और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के इच्छुक साधक के लिए भोग कहां, किन्तु श्री सुन्दरी साधना के साधक हेतु भोग व मोक्ष दोनों ही सुलभ हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ में अद्वैत रूप से परम ज्योति ही अस्तित्व में थी और यही ज्योति दो रूपों में परिणित होकर शिव-शक्ति बनी। जगत की रचना का आधार अव्यौवहृत जिस रूप में बना वही है श्री यंत्र। श्री यंत्र का अर्थ लक्ष्मी प्रदायक यंत्र तक ही सीमित करना उचित नहीं। श्री यंत्र अपने आप में सम्पूर्ण विश्व-व्यवस्था का प्रतीक है। साधक का स्वयं का शरीर एवं नवयोन्यात्मक श्री चक्र वास्तव में एक ही है जिसके तादात्म्य से इस लोक एवं आध्यात्मिक जगत की सफलता प्राप्त होती है।

षट्कोणों से युक्त एवं नौ आवरणों वाला श्री यंत्र (अथवा श्री चक्र) ही मां भगवती जगदम्बा की उपस्थिति का भी प्रतीक है, उनकी अनन्त शक्तियों का एक सीमित रूप में अंकन करने का प्रयास है। तभी तो ऐसे यंत्र के दर्शन एवं उसके पादोदक पान को भी पुण्य कहा गया है - 'तीर्थ स्थल सहस्र कोटि फलदम् श्री चक्र पादोदकम्'। नौ आवरणों से युक्त श्रीयंत्र की स्थापना और साधना ही नवरात्रि पूजन की, पराम्बा की कृपा प्राप्त करने की प्राचीन व शास्त्रीय परम्परा रही है, जिसे 'श्रीविद्या साधना' की संज्ञा से विभूषित किया गया।

यद्यपि 'श्री विद्या-साधना' गृह और जटिल है, मूलतः ब्रह्म साक्षात्कार की विद्या है, किन्तु इसके सुलभ रूपों में एक सामान्य गृहस्थ व्यक्ति भी साधना करते हुए केवल अपनी दैनिक समस्याओं से मुक्त होकर भौतिक जीवन सुव्यवस्थित कर लेता है वरन् और आगे बढ़कर उन आध्यात्मिक लाभों को प्राप्त करने का पात्र भी बन सकता है, जिन्हें विशिष्ट योगी ही प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। शक्ति साधना का यही तात्पर्य है कि जो कुछ सामान्य प्रयासों से न प्राप्त कर पा रहे हो, उन्हें पराम्बा शक्ति के स्पर्श से प्राप्त कर लें। इसी से नवरात्रि का साधक के जीवन में सर्वाधिक महत्व है।

'श्री विद्या साधना' विशिष्ट रूप में त्रिपुर सुन्दरी की ही साधना है, इन्हीं की संज्ञा घोड़शी एवं ललिता भी है। ये ही शक्ति हैं, ये ही विश्व मोहिनी हैं, ये ही श्रीमहाविद्या हैं और ऐसा जानने वाला समस्त शोक से पार हो जाता है -

‘‘एषाऽत्मशक्तिः । एषा विश्वमरोहिनी ।

एषा श्री महाविद्या ।

य एवं देव स शोकं तरति ॥’’

वास्तव में ये सभी मां भगवती जगदम्बा के ही रूप हैं किन्तु जीवन की विभिन्न स्थितियों के साथ-साथ उनका स्वरूप भी बदलता रहता है। देवी के किसी विशिष्ट रूप की साधना करने पर तबनुकूल ढंग से लाभ भी विशिष्ट ही मिलता है। जहां मां भगवती जगदम्बा की साधना मूलतः भावना-प्रधान है वहीं षोडशी त्रिपुर सुन्दरी एवं ललिताम्बा की साधना प्रबल तांत्रोक्त है। इस वर्ष देवी के इन तीव्रतम् किन्तु अभीष्ट वरदायक स्वरूपों की साधना करके जीवन को नये आयाम और गति देना आवश्यक हो गया है, क्योंकि जिस प्रकार से सामाजिक और राष्ट्रीय परिवेश की परिस्थितियां बदल रही हैं उसमें साधक को एकदम से वैतन्य होना होगा। ‘श्री विद्या साधना’ का आधार भी केवल गुरुदेव को कहा गया है।

संकेतक स्तत्स्या ज्ञानाकारी व्यवस्थितः ।

ज्ञानामंत्रक्रमेर्णोद्य पारम्पर्येण लभ्यते ॥

अर्थात् त्रिपुर सुन्दरी के मंत्र का रहस्य केवल परम्परा द्वारा ही ज्ञात किया जा सकता है और यहां परम्परा का अर्थ है - नुरु परम्परा।

### श्री चक्र साधना

पूज्यपाद गुरुदेव ने ही सर्वप्रथम इस तथ्य को स्पष्ट किया कि श्रीचक्र साधना का जहां एक ओर विशद गूढार्थ है, वहीं इसके सामान्य जीवन में भी ऐसे प्रयोग हैं, साधनाएं हैं, जिनके द्वारा साधक भोग व मोक्ष दोनों ही प्राप्त कर सकता है। जिस प्रकार से इस विद्या का आध्यात्मिक अर्थ गूढ़ रखा गया, उसी प्रकार इसके भौतिक जीवन से सम्बन्धित प्रयोग भी गोपनीय रखे गए। बौद्ध मठों की सम्पत्ति और साधना जगत में उनकी विलक्षण प्रगति का रहस्य भी यहीं श्री चक्र साधना है जिसके द्वारा उन्हें कभी भी किसी के समक्ष याचक बनने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी।

इस साधना में, इसा साधना से सम्बन्धित श्रीचक्र के नौ आवरणों में ही रहस्य निहित है। श्रीविद्या, अर्थात् षोडशी के नौ आवरण-ललिता, त्रिपुर-सुन्दरी, त्रिपुराम्बा, त्रिपुरासिद्धा, त्रिपुरालिनी, त्रिपुराश्री, त्रिपुरवासिनी, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरा एवं त्रिपुरा हैं। जो उन्हीं पराम्बा की नौ विशिष्ट शक्तियों के नाम हैं। ये शक्तियां मनुष्य की नवरन्धात्मक काया से पूर्ण तादात्मय रखती हैं। जब साधक इन्हीं नौ स्वरूपों का तादत्म्य

अपनी देह से कर लेता है, या दूसरे शब्दों में कहा जाए कि उन्हें इन विविध रूपों के साथ समाहित कर लेता है तभी उसे जीवन की पूर्णता मिल सकती है।

इन नौ स्वरूपों में ही जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति का मंत्र भी निहित है। यदि विचार-पूर्वक देखा जाए तो मानव जीवन में भी नौ स्थितियां ही महत्वपूर्ण हैं। सर्व प्रकारेण तनावमुक्त जीवन, प्रत्येक मनोकामना की पूर्ति, जीवन में रोग-शोक का अभाव, शत्रु बाधा से मुक्ति, राज्य पक्ष से अनुकूलता एवं सम्मान, जीवन में पूर्ण भाग्योदय, प्रत्येक अनिष्ट का समाप्त, पूर्ण गृहस्थ सुख एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व - भौतिक रूप से मानव जीवन में इतना ही आवश्यक होता है।

आध्यात्मिक पक्ष तो इसके बाद ही आरम्भ होते हैं और आध्यात्मिक जीवन में इसी प्रकार नौ इच्छाएं ही प्रमुख होती हैं।

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी इन दोनों ही स्थितियों का समावेश अपने अन्दर किए हैं। वे ‘श्री’ भी हैं और ‘विद्या’ भी अर्थात् ‘ऐश्वर्य-युक्त’ भी हैं और ‘ज्ञानयुक्त’ भी, अतः इस अश्विन नवरात्रि में इन्हीं की साधना करना प्रत्येक दृष्टि से सौभाग्यदायक है।

इस वर्ष नवरात्रि का प्रारम्भ दिनांक 4-10-2005 को हो रहा है। यह प्रस्तुत साधना क्रम नौ दिवसीय साधना क्रम है जो अपने आप में एक सम्पूर्ण क्रम भी है और पृथक भी, अर्थात् साधक चाहे तो सम्पूर्ण क्रम को, सभी नौ प्रयोगों को भी अपना कर उन्हें सम्पन्न कर सकता है और सूचि के अनुकूल अथवा जीवन की समस्या से सम्बन्धित किसी एक विशेष दिवस की साधना का भी चुनाव कर सकता है।

यह पूजन मूलतः त्रिपुर सुन्दरी का ही पूजन है और प्रथम दिन इन्हीं का विशेष पूजन करना है, साथ ही आने वाले अन्य आठ दिनों में भी प्रारम्भिक पूजन इन्हीं का कर फिर उस दिवस विशेष का प्रयोग सम्पन्न करना होगा, जिससे साधक को प्रत्येक दिवस का पूर्ण लाभ प्राप्त हो सकें।

### साधना विधान

दिनांक 4-10-2005, मंगलवार से आरम्भ होने वाली इस साधना का आधार केवल गुरु चरण है और उसके प्रतीक रूप में चांदी की चरण पादुका अथवा लघु चरण पादुका यंत्र स्थापित पूजन किया जाता है। भगवती षोडशी की उपस्थिति श्रीचक्र के माध्यम से प्रकट की जाती है, जो कामेश्वर व कामेश्वरी मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठित तथा पंच लक्ष्मी, पंच कोशाम्बा, पंच कल्पलता एवं पंचरत्नाम्बा के पूजन से युक्त

हो। ऐसे यंत्र का चैतन्यीकरण दक्षिणामूर्ति मत द्वारा होना आवश्यक है। इन दो प्रमुख यंत्रों के अतिरिक्त प्रत्येक प्रयोग में अन्य साधना सामग्री की आवश्यकता प्रयोग की प्रकृति के अनुरूप होगी।

नवरात्रि के प्रथम दिन सूर्योदय से कुछ पूर्व उठकर स्नान आदि से स्वच्छ होकर अपने पूजन कक्ष में बैठ जाएं तथा शुद्ध वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुँह कर अपने सामने नाभि पर्यन्त ऊँची चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर उसके मध्य में एक ताम्र पात्र में चरण पादुका अथवा पादुका यंत्र की स्थापना करें। सामने पांच चावलों की ढेरी बनाकर प्रत्येक पर एक गोल सुपारी रखें। इन ढेरियों के दाहिनी और एक अन्य ताम्र पात्र में 'श्रीचक्र' का स्थापन पुष्प की पंखुड़ियों पर करें। वाम भाग में तेल का दीपक तथा दाहिनी ओर धी का दीपक स्थापित करें। पूजन की अन्य सामग्रियों में लाल पुष्प, श्वेत पुष्प, कुंकुम, अक्षत, श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, केसर, कपूर एवं नैवेद्य आदि आवश्यक हैं। लाल रंग के ऊनी आसन पर बैठकर दीपक व अगरबत्ती प्रज्ज्वलित कर प्रथमतः आत्म शुद्धि करें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वविस्थां जतोऽ पिवा।  
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाहाम्यान्तरः शुचिः॥  
तदुपरांतं आचमन करें -

ॐ आत्म तत्वं शोधयामि स्वाहा,  
ॐ विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा,  
ॐ गुरुतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

एक गोल सुपारी में मौली बांधकर उसमें गणपति की भावना करते हुए संक्षिप्त गणपति पूजन करें, चन्दन व अक्षत समर्पित करें -

शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।  
प्रसङ्गवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

आत्मरक्षार्थ भैरव प्रार्थना करें -

हीं अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम्।  
भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुजां दातुमर्हसि॥

प्रारम्भिक पूजन क्रम के बाद संक्षिप्त रूप से गुरु पादुका पूजन करें। पादुकाओं को जल, गंगाजल व दूध से स्नान कराकर व पोंछकर केसर व श्वेत चन्दन से तिलक करें तथा श्वेत पुष्प चढ़ाते हुए निम्न प्रकार से गुरु चिन्तन करें -

आनन्दमान्दकरं प्रसङ्गं ज्ञानस्वरूपं निजबोधस्त्वम्।

देवी को हिन्दू धर्म में सबसे उच्चतम स्थान प्राप्त है यह शिव की सहयोगी शक्ति मानी जा सकती है। इसकी एजा सौम्य रूप में और तीव्र रूप में सम्पूर्ण की जाती है। अपने उमा रूप में यह प्रकाश देने वाली है। गौरी रूप में पीत वर्णिय आभा प्रदायक है। पार्वती रूप में पर्वत निवासिनी है। जगदम्बा रूप में यह पूरे जगत की माता है। अपने उग्र रूप में यह काली स्वरूप है। अपने चण्डी रूपरूप में तीव्र प्रभाव देने वाली अग्नि रूपा है। अपने भैरवी रूप में यह भयानक एवं शत्रुओं को डराने वाली है। त्वक्ति अपनी-अपनी मान्यता के अनुसार दुर्गा के सौम्य अथवा उग्र रूप की साधना कर सकता है। कन्याएं जहां गौरी रूप में साधना करती हैं, गृहस्थ जगदम्बा रूप में साधना करते हैं, तंत्र सिद्धि के लिये काली, चण्डी और भैरवी रूप में साधना की जाती है।

योगीन्द्रमीड्यं भवरोगदैवं, श्रीमदगुरुं नित्यमहं भजामि॥

पादुका के समक्ष स्थापित पांचों ढेरियों का पूजन केवल श्वेत चन्दन व केसर की पंखुड़ियों से तिलक करते हुए करें -

ॐ गुं गुरुभ्यरो नमः,  
ॐ यं परम गुरुभ्यरो नमः,  
ॐ यं परात्पर गुरुभ्यरो नमः,  
ॐ यं परमेष्ठि गुरुभ्यरो नमः,  
ॐ यं परापर गुरुभ्यरो नमः,

सम्पूर्ण गुरु-परम्परा का आवाहन, पूजन करने के पश्चात् पूज्य गुरुदेव के चित्र के सामने प्रणाम कर इस महत्वपूर्ण व दुर्लभ साधना में प्रवृत्त होने के लिए मन ही मन आज्ञा व आशीर्वाद प्राप्त करें, जिस साधना की प्राप्ति इन पत्रों के माध्यम से शिष्यों व पाठकों को सम्भव हो सकी -

हीं श्री गुरो दक्षिणामूर्ते भक्त्तानुक्रहकरक।  
अनुज्ञां देहि भगवन् त्रिपुर सुन्दर्ये अर्द्धनाय से॥

मानसिक आज्ञा प्राप्त करने के उपरान्त दाहिनी ओर स्थापित श्री चक्र से अपने सम्बन्ध स्थापित करें जिससे वह न केवल आपसे वरन् आपकी वंशपरम्परा से भी जुड़ सके और समस्त इष्ट सम्बन्धियों का कल्याण करता हुआ आगामी पीढ़ी तक के लिए वरदायक बने।

## प्राण-प्रतिष्ठा

दाहिना हाथ यंत्र पर रखते हुए तथा वामहस्त अपने हृदय पर रखते हुए निम्न मंत्रोच्चार करें -

हीं आं हीं क्रों यं रं लं वं शं शं सं हं हीं हंसः  
सोऽहं सोऽहं हंसः शिवः श्री त्रिपुर सुन्दरी यन्त्रस्य  
प्राण इह प्राणा हीं आं हीं क्रों श्री त्रिपुर सुन्दरी सामान्य पूजन करने के उपरान्त भगवती षोडशी के पंच आयुध यन्त्रस्य जीव इह स्थितः सर्वेन्द्रियाणि वाढमन्त्रशक्तुः  
श्रोत्र जिह्वा ग्राणा इहैवागत्य अस्मिन् यंत्रे सुख्खं एक माला मंत्र जप मूँगा माला से करें।

चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

यह प्राण-प्रतिष्ठा केवल एक बार ही आवश्यक है। यंत्र का पूजन लाल पुष्प, धूप, दीप, कुंकुम, एवं रक्त चन्दन से करके मूल मंत्र की एक माला का जप करें। यह मंत्र जप केवल 'कामकला माला' से ही किया जाना चाहिए।

## मंत्र

श्रीं हीं क्लरीं ऐं सौः ॐ त्रिपुर सुन्दर्ये सर्व  
शक्तिं समन्वितः सौः ऐं क्लरीं हीं श्रीं॥

यह इस साधना का मूल मंत्र है। यदिसाधक पूरी नवरात्रि में नित्य उपरोक्त क्रम का पालन करे तो अधिक उत्तम माना गया है। अन्यथा प्रतिदिन का विशेष प्रयोग प्रारम्भ करने के पूर्व संक्षिप्त पादुका पूजन, मानसिक गुरु आज्ञा की प्राप्ति तथा उपरोक्त मंत्र की एक माला मंत्र जप तो अवश्य ही करें।

श्री चक्र त्रिपुर सुन्दरी साधना सामग्री - 450/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

नवरात्रि के प्रत्येक दिवस को इस दुर्लभ साधना क्रम में जिस प्रकार से वर्णित किया गया है, वह इस प्रकार है।

## प्रथम दिवस

सम्पूर्ण जीवन को निष्कंटक बनाने के लिए

इस षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना क्रम में प्रथम दिवस में

क्षैरणी पतित्वमथर्वैकं किंचन्त्वं,  
नित्यं ददासि बहुमानमथापमानम्।  
वैकुण्ठवासमथवा नरके निवासं,  
गुरुद्वेष देव! मन्त्र नास्ति गतिस्त्वदन्या॥

गुरुदेव! आप मुझे पृथ्वीपति बना दीजिये, चाहे परम दरिद्र, बित्य सम्मान प्रदान कीजिये अथवा अपमान, वैकुण्ठ में वास दीजिये चाहे नरक में पहुंचाइये, परन्तु है गुरुदेव! आप से भिज्ज मेरी तो और कोई गति नहीं है।

सर्वानन्दमयी ललिता महात्रिपुर सुन्दरी की साधना सम्पन्न की जाती है, जो सम्पूर्ण जीवन को कंटक रहित कर आनन्द प्रदान करने में समर्थ हैं। इस साधना में मूल यंत्र तो उपरोक्त

वर्णित श्रीचक्र ही है, साथ ही माला के रूप में कामकला माला ही प्रयुक्त होनी है किन्तु प्रयोग क्रम के अन्तर है। यंत्र का सामान्य पूजन करने के उपरान्त भगवती षोडशी के पंच आयुध के रूप में पांच तांत्रोक्त फल यंत्र पर चढ़ायें तथा निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप मूँगा माला से करें।

## मंत्र

क्लरीं क्षम्यौं ऐं त्रिपुर सर्व वांछितं देहि नमः स्वाहा॥  
मंत्र जप के उपरान्त सभी तांत्रोक्त फलों को किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 250/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## द्वितीय दिवस

मनोकामना पूर्ति का सफल मुहूर्त

द्वितीय दिवस इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि मन में जो कामना बहुत समय से पूर्ण न हो रही हो, उसकी प्राप्ति सफलता पूर्वक की जा सके। इस प्रयोग में भी मूल रूप से प्रथम पूजन की ही यंत्र, माला को स्थापित कर प्रत्येक मनोकामना की पूर्ति के रूप में सर्वासिद्धि दात्री त्रिपुराम्बा को एक वज्र धारिणी चढ़ाना है। प्रत्येक मनोकामना के लिए पृथक वज्रधारिणी का प्रयोग करना आवश्यक है तथा मनोकामना पूर्ति मंत्र की एक माला मंत्र जप पीली हकीक माला से करें।

मनोकामना पूर्ति मंत्र

हीं क्लरीं हस्तोः सौः क्लरीं हीं॥

मंत्र जप के उपरान्त वज्रधारिणी को यंत्र पर ही चढ़ा रहने वें एवं नवरात्रि के अन्तिम दिवस उसे विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## तृतीय दिवस

जटिल रोगों का समाधान शक्ति साधना से

कभी-कभी शरीर में कुछ ऐसे रोग लग जाते हैं जिनका न तो कोई उचित कारण समझ में आता है और न हल। प्रायः ऐसे रोगों का कारण पूर्व जन्मकृत दोष अथवा किसी विरोधी द्वारा कराया गया तंत्र प्रयोग होता है। कारण कुछ भी हो यदि नवरात्रि के तृतीय दिवस को सर्वरोगहर्त्रीं त्रिपुरासिद्धा का पूजन इस प्रकार किया जाए तो प्रत्येक रोग-बाधा से मुक्ति

मिलती ही है।

इसके लिए आवश्यक है कि श्रीचक्र यंत्र आदि के साथ ही साथ साधक के पास नवकूटा गुटिका हो। जिसका प्रयोग इस साधना में होना है। साधक को चाहिए कि वह मूल पूजन करने के उपरान्त इस मूल यंत्र पर यह गुटिका चढ़ाते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप सफेद हकीकी माला से करें -

मंत्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं महा त्रिपुरे आरोग्यमैश्वर्यं च  
देहि स्वाहा॥

मंत्र जप के उपरान्त इस गुटिका को गहरा गड़ा खोदकर उसमें दबा दें तो कैसा भी जटिल रोग हो उसमें शान्ति आने लगती है।

साधना सामग्री - 360/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### चतुर्थ दिवस

शत्रु-बाधा जीवन का ऐसा अभिशाप है जिसके कारण व्यक्ति के जीवन में अन्य सब कुछ होते हुए भी वह उसका उपयोग नहीं कर सकता। हर समय उसके मन में अशान्ति और आशंका बनी रहती है, जिसके कारण जीवन का सहज आनन्द चला जाता है। ऐसी स्थिति में यदि वह सर्वरक्षाकारिणी-त्रिपुर मालिनी प्रयोग सम्पन्न कर लिया जाए तो प्रबल से प्रबल शत्रु भी शान्त हो जाता है। यदि गुप शत्रु भय हो तब भी यह प्रयोग लाभदायक सिद्ध होता है। मूल पूजन करने के उपरान्त यंत्र पर एक कराला चढ़ाकर अपने समस्त ज्ञात व अज्ञात शत्रुओं की बाधा समाप्त करने की प्रार्थना करते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप हकीकी माला से करें -

मंत्र

ह्रीं श्रीं वलीं परापरे त्रिपुरे सर्वमीम्पितं  
साधय स्वाहा॥

मंत्र जप के उपरान्त कराला को या तो शमशान में फेंक दें अथवा शुत्र के नाम के साथ जला दें।

साधना सामग्री - 270/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### पंचम दिवस

#### राज्यपक्ष से अनुकूलता एवं सम्मान

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी व्यवसाय या नौकरी से सम्बन्धित हो, राज्यपक्ष से कार्य पड़ता ही है और जिस व्यक्ति को राज्यपक्ष से अनुकूलता मिल जाती है अथवा

राज्याधिकारियों से सम्पर्क बन जाता है, समाज में उसका सम्मान भी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त राज्य पक्ष से सम्पर्क एवं सम्मान व्यक्ति के व्यक्तित्व में वृद्धि करता है, उसे अनावश्यक तनावों एवं बाधाओं से भी बचाता है।

इस हेतु सर्वार्थ साधनी त्रिपुराश्री की साधना करने का विधान शास्त्रों में मिलता है जिनके कृपा कटाक्ष से राज्याधिकारी भी अनुकूल व हित चिन्तक हो जाते हैं। एक लघु दक्षिणावर्ती शंख लेकर उसे पूरी तरह से केसर सं रंग देतथा यंत्र के समक्ष चावलों को ढेरी पर स्थापित कर पुष्प की पंखुड़ियों से तथा धी के दीपक के पूजन कर निम्न मंत्र का जप स्फटिक माला से करें -

मंत्र

वलीं वलीं वलीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं त्रिपुर  
सुन्दरि सर्व जगत् मम वशं कुरु कुरु महां  
बलं देहि स्वाहा॥

यह मंत्र जप केवल दो माला करें। मंत्र जप के उपरान्त दक्षिणावर्ती शंख को पीले वस्त्र में बांधकर किसी पवित्र स्थान में रख दें। ऐसा करने से निरन्तर, राज्य पक्ष से सम्मान व ख्याति में वृद्धि होती ही रहती है।

साधना सामग्री - 380/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

### षष्ठम दिवस

#### जीवन में पूर्ण भाग्योदय प्राप्त करने के लिए

प्रायः साधक के मन में भाग्योदय शब्द की जो धारण रहती है वह अधूरी ही कही जा सकती है। भाग्योदय का युवावस्था से ही सम्बन्ध नहीं होता वरन् भाग्योदय तो जीवन पर्यन्त चलने वाली घटना होती है। आयु के साथ-साथ इसके अर्थ व्यापक होते रहते हैं। नवरात्रि का सप्तम दिवस सर्व सौभाग्य दायिनी त्रिपुरावासिनी देवी का दिवस है एवं साधक इस दिन का यह विशेष प्रयोग कर जीवन में भाग्योदय का निरन्तर क्रम प्राप्त कर सकता है।

प्रारम्भिक मूल पूजन करने के पश्चात् ज्यारह गोमती चक्र लेकर यंत्र के सामने स्थापित करें तथा प्रत्येक पर केसर का टीका लगाते हुए - धन प्राप्ति, आयु प्राप्ति, तंत्र दोष निवारण प्राप्ति, विदेश यात्रा गमन, प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता, मनोवांछित विवाह, अनुकूल मित्र प्राप्ति, व्यवसाय प्राप्ति, सौन्दर्य प्राप्ति एवं सर्व प्रकारे पुष्टि प्राप्ति की ज्यारह स्थितियों का उच्चारण करें, इन्हीं से जीवन में निरन्तर भाग्योदय की स्थिति

गठित होती है। इसके उपरान्त स्फटिक माला से निम्न मंत्र प्राप्त कर कमल गड्ढे की माला से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

जप करें -

मंत्र

ऐं कलीं सौं बालाक्रिपुरे सिद्धिं देहि नमः॥

मंत्र जप के उपरान्त सभी गोमती चक्रों को एक डिब्बी में सुरक्षित रख दें। इनका भविष्य में अन्य किसी साधना में प्रयोग न करें। ये सौभाग्य के प्रतीक के रूप में निरन्तर प्रभाव देते ही रहेंगे।

साधना सामग्री - 370/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मंत्र

कलीं कलीं श्रीं श्रीं हाँ त्रिपुराललिते मदीप्सितां  
योषितं देहि वांछितं कुरु स्वाहा॥

मंत्र जप के उपरान्त साधक अपने गृहस्थ जीवन में जिन दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त करने का इच्छुक हो, उन कामनाओं का उच्चारण करता हुआ एक-एक कमलगड्ढे का बीज श्रीचक्र यंत्र पर चढ़ा दें तथा नवरात्रि के अन्तिम दिवस पर इन्हें एक पोटली बनाकर पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें।

साधना सामग्री - 210/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## सप्तम दिवस

### प्रत्येक अग्निष्ट का समापन करने के लिए

केवल प्रकट शत्रु अथवा रोग ही इस जीवन में बाधा नहीं होते वरन् कई ऐसी स्थितियां होती हैं जिनकी उपस्थिति में भी जीवन विषमय हो जाता है। इनको किसी परिभाषा या सीमा में नहीं बांधा जा सकता किन्तु जो भी स्थिति जीवन में क्लेशदायक हो या प्रगति में बाधक हो उसका समापन आवश्यक होता ही है। ऐसी ज्ञात-अज्ञात स्थितियों को समाप्त करने के लिए सप्तम दिवस का यह त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग विशेष अनुकूल होता है। एक वार्ताली चैतन्य स्थापित कर इसका पूजन केवल काजल से कर काली हकीक माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ऐं ऐं सौः कलीं कलीं ऐं सौः सौः कलीं॥

मंत्र जप के उपरान्त माला तथा वार्ताली चैतन्य को विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 270/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## अष्टम दिवस

### पूर्ण गृहस्थ सुख प्राप्ति दिवस

जीवन का यह पक्ष भी पूर्ण रूप से सन्तुलित हो यह साधक के लिए आवश्यक है, तभी वह पूर्ण चैतन्यता से आध्यात्मिक साधनाओं में अग्रसर हो सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि अष्टमी का महत्वपूर्ण दिवस प्रयोग में लाया जाय। अष्टमी ही पूरी नवरात्रि में सर्वाधिक तेजस्वी दिवस है और श्री सुन्दरी साधना क्रम में यह सर्वांशापरिपूरक-भगवती त्रिपुरेशी का दिवस है जो प्रकारान्तर से लक्ष्मी का ही तेजस्वी स्वरूप है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक सोलह कमल गड्ढे के बीज

## नवम दिवस

### प्रभावशाली व्यक्तित्व

प्रभावशाली व्यक्तित्व ही मनुष्य के जीवन का सबसे अधिक आवश्यक अंग है और व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए जहां अनेक साधनाएं प्रचलित हैं, सम्मोहन विद्या है, वहीं शक्ति साधना के क्रम में भी जीवन के इस पक्ष को अद्भूता नहीं छोड़ा गया है। भगवती त्रिपुरा जो त्रैलोक्य मोहिनी है, उनकी साधना नवरात्रि के अन्तिम दिवस पर करने से सहज ही साधक को इस पक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है। इसके लिए यह आवश्यक है कि साधक लघु मातंगी यंत्र प्राप्त कर मूल पूजन के उपरान्त उसे स्थापित कर राजराजेश्वरी माला से निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें -

मंत्र

कलीं त्रिपुरा देवि विद्महे कामरेश्वरी धीमहि  
तद्वः विलङ्घे प्रचोदयात्॥

भगवती मातंगी त्रिपुर सुन्दरी की मन्त्रिणी कही गई हैं, अतः इनकी साधना करने से व्यक्ति को केवल आकर्षक व्यक्तित्व ही नहीं वरन् बुद्धि-चातुर्य व वाक्पद्गता का भी गुण प्राप्त हो जाता है, जो उसके व्यक्तित्व को उभारने में सहायक होता है। भविष्य में भी उपरोक्त मंत्र की कुछ मालाएं मातंगी यंत्र के समक्ष करते रहना चाहिए।

साधना सामग्री - 390/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

इस प्रकार घोड़शी त्रिपुर सुन्दरी क्रम से नवरात्रि का यह दुर्लभ साधना क्रम पूर्ण होता है जिससे जीवन की किसी भी स्थिति को अद्भूता नहीं रहने दिया गया है।

मंत्र तो अनेक हैं, देवता भी अनेक है

लेकिन मंत्र महाधिराज एक है

वह है भगवती द्वर्गा का तीव्रतम् तांत्रोक्त मंत्र



# नारायण मंत्र

यह मंत्र मात्र अपने भीतर विश्व शक्तियों को समेटे हुए है। जिस प्रकार ब्रह्म, विष्णु, शिव के मुख्य से निकली अग्नि एकाकार होकर विश्व शक्ति पुंज बन गई और उसने दुर्गा महाकाली का स्वरूप धारण कर दिया। इसी प्रकार शक्ति के सभी मंत्रों का पूंजीभूत स्वरूप 'नवार्ण मंत्र' है, इसके प्रत्येक अक्षर में शक्ति के एक-एक रूप विवेचन है, नवार्ण मंत्र जपने मात्र से शक्ति जाग्रत होता है, शरीर में ऊष्मा व्यास होने लगती है। रोम-रोम जाग्रत होने लगता है। ऐसे महामंत्र की साधना कभी भी करें, शक्ति का आवाहन होगा ही -

श्रीमद्भृगुरुमंत्र

एक शिष्य एक बार अपने गुरु के पास गया और कहा कि प्रत्यक्ष दर्शन और लाभ मुझे प्राप्त हो सके। गुरु ने कहा कि मुझे कोई विशेष मंत्र और साधना दीजिये जिससे मैं सिद्धि "कलयुग में महाकाली प्रत्यक्ष देवता है और तुम महाकाली प्राप्त कर सकूँ। उसके गुरु ने भगवान नारायण की एक मूर्ति की पूजा तथा नवार्ण मंत्र का नित्य जप करो। इससे तुम्हें दी और नारायण मंत्र उस मूर्ति के सामने जपने के लिये कहा। अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होगी।"

उस शिष्य ने नियम पूर्वक मूर्ति के सामने आसन, ध्यान, धूप, दीप इत्यादि किया। नित्य मंत्र जप करता रहा। इस प्रकार मंत्र जप करते करते छः महीने बीत गये और उसे किसी प्रकार का आशीर्वाद और फल प्राप्त नहीं हुआ तो वह निराश हो गया तथा अपने गुरु के समक्ष पुनः गया और बताया कि उसे किसी प्रकार के दर्शन इत्यादि प्राप्त नहीं हो रहे हैं। उस पर गुरु मुस्कराए और उसे एक शिव की मूर्ति दी और कहा - "इनके सामने मंत्र जप करो, भोलेनाथ तो देवों के देव है वे तुम पर जरुर प्रसन्न होंगें।" शिष्य ने गुरु आज्ञा मान कर शिव मूर्ति को अपने पूजा स्थान में रख कर पूजन प्रारम्भ किया तथा पहले प्राप्त नारायण मूर्ति को ऊपर एक कोने में रख दिया।

शिव की पूजा करते करते फिर छः महीने बीत गये। लेकिन कोई प्रभाव नहीं पड़ा। फिर वह अपने गुरु के पास गया और कहा कि मुझे ऐसे देवता की मूर्ति और मंत्र चाहिए, जिसका जोई वरदान मांगों।

शिष्य ने यह बात मानकर मां काली की पूजा प्रारम्भ की तथा शिव की मूर्ति को भी उठाकर ऊपर एक कोने में नारायण मूर्ति के पास रख दिया। उसे पूजा करते हुए दो-चार दिन हुए ही थे कि और वह मां काली के आगे अगरबत्ती, धूप जला रहा था। उसने देखा कि धूप का धुआं ऊपर उठकर शिव मूर्ति तक जा रहा है। उसे बहुत गुस्सा आया और उसने सोचा कि शिव को क्या अधिकार है? मेरे द्वारा जलाए गए इस अगरधूप को ग्रहण करने का, मैं तो मां काली के समक्ष धूप कर रहा हूँ। मां काली ही इसे ग्रहण कर सकती है। ऐसा सोच कर वह ऊठा तथा शिव मूर्ति के नाक के दोनों रन्ध्रों में रुई डाल दी। अपना यह काम पूरा करता कि उसके सामने भगवान शिव आशीर्वाद मुद्रा में प्रकट हुए, भक्त एक दम आश्चर्य में पड़ गया उसने

भगवान शिव को दंडवत प्रणाम किया, भगवान शिव ने आशीर्वाद देते हुए कहा - "मैं तुम्हारी भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हूँ तुम

भक्त ने कहा - “हे भगवन! मैं अत्यन्त आश्चर्य चकित हूं कि जब मैंने आपकी छः महीने तक निरन्तर पूजा की, पंचाक्षरी मंत्र जप किया तो आप ने मुझे कोई आशीर्वाद नहीं दिया और जब मैंने आपकी मूर्ति हटा दी और मंत्र जप बंद कर दिया तो आप मुझे आशीर्वाद देने के लिए प्रकट हो गये।”

भगवान शिव ने कहा - “हे! भक्त अब तक तुम मेरी मूर्ति को केवल मूर्ति मानकर पूजा कर रहे थे उसे एक धातु का टुकड़ा मान रहे थे। लेकिन आज जब तुमने मुझे केवल मूर्ति नहीं मानकर साक्षात् देवता माना है तथा यह भी माना की शिव उपस्थित है और मेरी धूप अगर केवल मां काली के पास ही जानी चाहिए। तब मैं तुमसे अलग कैसे हो सकता हूं।”

यह कथा एक प्रतीक हो सकती है। लेकिन वास्तव में जब हम अपने पूजा स्थान में जो भी यंत्र, चित्र स्थापित करते हैं उनमें वास्तविक देव का अनुभव करें तो शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है।

भगवती मां काली का स्वरूप देखने में भयकर है लेकिन यह भयकर स्वरूप अपने भक्तों के लिये नहीं है। उनका काला स्वरूप अज्ञान, अंधकार को मिटाकर प्रकाश देने वाला है। मां काली सारे दुःख, दर्द, पीड़ा, अभाव को दूर कर प्रसन्नता एवं अमृत्यु को प्रदान करने वाली देवी है। जो सारे दुःखों का नाश कर सुख को उत्पन्न करती है। अविद्या का नाश कर परब्रह्म से साक्षात्कार करती है। ज्ञान का निरन्तर प्रकाश देती है। इसीलिये महाकाली साधना शीघ्र प्रभावकारी साधना है और उसके लिए नवार्ण मंत्र साधना सर्वश्रेष्ठ कही गयी है।

इसीलिये विद्वानों ने कहा है, कि चाहे व्यक्ति शिव उपासक हो या विष्णु उपासक, वह चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो, नवार्ण साधना तो उसके जीवन की उन्नति के लिए अनुकूल एवं सुखदायक है ही, इसके नवार्ण अर्थात् नवअक्षर अपने आप में विराट शक्ति पुञ्ज लिये हुए हैं। ‘गुप्त चामुण्डा तंत्र’ में बताया गया है, कि नवार्ण मंत्र के नव अक्षरों को सिद्ध करने पर नौ लाभ तुरन्त अनुभव किये जा सकते हैं।

‘गुप्त चामुण्डा तंत्र’ के अनुसार नवार्ण मंत्र के ये अक्षर या नौ बीज तथा उनसे सम्बन्धित फल प्राप्ति इस प्रकार से हैं-

#### 9. ऐं

यह बीज नवार्ण मंत्र का पहला और सरस्वती बीज है, इसको सिद्ध करने पर स्मरण शक्ति तीव्र होती है, यदि बालक इस साधना को या बीज का उच्चारण करे तो, निश्चय ही वह

परीक्षा में सफलता प्राप्त करता है, सिर दर्द, माझ्जेन, आधा शीशी आदि विकार और बीमारियां इस बीज के निरन्तर उच्चारण करने से ठीक हो जाती हैं, यही बीज अच्छा वक्ता बनने में, वाणी के द्वारा लोगों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से समर्थ है।

#### 2. हौं

यह लक्ष्मी बीज है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। इस बीज की साधना करने से या इसका मंत्र जप करने से दरिद्रता दूर होती है, निरन्तर आर्थिक उन्नति होने लगती है और अर्थ सम्बन्धी रूपे हुए काम ठीक हो जाते हैं। जो साधक निरन्तर केवल इसी बीज का उच्चारण करता है, उसका व्यापार बढ़ने लगता है, आर्थिक स्रोत मजबूत होते हैं और अनायास धन प्राप्ति के विशेष अवसर बन जाते हैं।

#### 3. तर्लीं

यह काली बीज है, शत्रुओं का संहार करने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने और मन के विकारों, काम, कोध, लोभ, मोह आदि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण बीज है। जो इस बीज का उच्चारण कर कोटि कचहरी में जाता है, तो उस दिन उसके अनुकूल वातावरण बना रहता है। काली को प्रसन्न करने और उसके प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए यह अपने आप में सिद्ध बीज है।

#### 8. चा

यह सौभाग्य बीज है और इसकी महत्ता शास्त्रों ने एक स्वर से स्वीकार की है। सौभाग्य की रक्षा, पति की उन्नति, पति के स्वास्थ्य और पति की पूर्ण आयु के लिए यह अपने आप में अद्वितीय बीज है। इसी प्रकार यदि पत्नी बीमार हो या उसे किसी प्रकार की तकलीफ हो, तो इस अक्षर का निरन्तर जप करने से या पत्नी को इस बीज मंत्र से सिद्ध करके जल पिलाने से उसके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक अनुकूलता आने लगती है, गृहस्थ जीवन की सफलता के लिए बीज मंत्र ज्यादा उपयोगी है।

#### 9. मुं

यह आत्म मंत्र है, आत्म की उन्नति, कुण्डलिनी जागरण, जीवन की पूर्णता और अन्त में ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार के लिए यह मंत्र सर्वाधिक उपयुक्त एवं अद्वितीय है। उच्चकोटि के संन्यासी निरन्तर इस मंत्र का जप करते हुए, अपने जीवन को पूर्णता प्रदान करते हैं, जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का

उच्चारण करता रहता है, उसकी कुण्डलिनी शीघ्र ही जाग्रत हो जाती है।

#### d. डा

यह सन्तान सुख बीज है, और भगवती जगदम्बा का सर्वाधिक प्रिय बीज है, यदि पुत्र उत्पन्न न हो रहा हो या संतान बाधा हो अथवा किसी प्रकार की पुत्र से सम्बन्धित तकलीफ हो, तो इस बीज मंत्र की सिद्धि करने से अनुकूलता प्राप्ति होती है। पुत्र के स्वास्थ्य और उसकी दीर्घायि के लिए इसी बीज मंत्र का सहारा लिया जाता है।

#### e. ऐ

यह भाग्योदय बीज है, ओर मानव जीवन में इस बीज का सर्वाधिक महत्व है, यदि दुर्भाग्य साथ नहीं छोड़ रहा हो, पग पग पर बाधाएं आ रही हों, कोई काम भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहा हो, तो इस मंत्र को विशेष महत्व दिया गया है। जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का जप करता रहता है, उसका शीघ्र भाग्योदय हो जाता है और वह अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

#### f. वि

यह सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चता, श्रेष्ठता और सफलता का बीज मंत्र है। किसी प्रकार के पुरस्कार प्राप्त करने, समाज में सम्मान और यश प्राप्त करने, राज्य में उन्नति और सफलता पाने के लिए इस बीज मंत्र का उपयोग किया जाता है। जो साधक निरन्तर इस बीज का प्रयोग करता है या इसकी साधना करता है, वह निश्चय ही राज्य सम्मान एवं राज्य उन्नति प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

#### g. च्चे

यह सम्पूर्णता का बीज है, जीवन सभी दृष्टियों से पूर्ण और सफल हो, चाहे स्वास्थ्य धन, परिवार यश, सुख, सौभाग्य, सन्तान, भाग्योदय और सफलता का तत्व हो, इसे बीज राज कहा गया है। जो साधक इस बीज मंत्र की साधना करता है, वह निश्चय ही अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

### नवार्ण मंत्र

इस प्रकार प्रत्येक बीज का अध्ययन करने से नवार्ण मंत्र इस प्रकार से बनता है -



॥ ऐं हौं क्लीं चामुंडायै विच्चे॥

शास्त्रों में कहा गया है, कि नवार्ण मंत्र का जप करते समय इसके प्रारम्भ में “उँ” या प्रणव नहीं लगाना चाहिए। शास्त्रों में कहा गया है -

वाक् चैव काम शक्तिश्च प्रणवः श्रीश्च कथ्यते।  
तदर्थेषु च मन्त्रेषु प्रणवं लैव यो ज्यवेत्॥

अर्थात् जिन मंत्रों के प्रारम्भ में १. ऐं, २ क्लीं, ३. हीं और ४. श्रीं अक्षर लगा हो, उन मंत्रों में उँ नहीं लगाना चाहिए। जिस प्रकार से मंत्र दिया गया है, उसी प्रकार से मंत्र जप करना चाहिए।

नवार्ण मंत्र की सिद्धि हेतु नौ दिन में सवा लाख मंत्र जप करने से सफलता मिलती है। सवा लाख मंत्र का तात्पर्य 1250 मालाएं जप से सवा लाख मंत्र जप हो जाता है।

इस साधना को किसी भी महीने की त्रयोदशी से प्रारम्भ कर अगले नौ दिनों में यह नवार्ण मंत्र सिद्ध किया जा सकता है। साधना काल में साधक पीली धोती पहिन, उत्तर की ओर

मुंह कर सामने भगवती महाकाली का चित्र एवं नवार्ण यंत्र स्थापित कर, काली हकीक माला से मंत्र जप करें। साधना के समय तेल का दीपक लगा रहना चाहिए, यह तेल का दीपक अखण्ड होना चाहिए।

### नवार्ण मंत्र विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग का उच्चारण करें और जल को सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें -

ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र  
ऋब्यः गायत्र्यच्छिण्नुष्टुप्छन्दांसि, श्री महाकाली-  
महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः ऐं बीजं हीं शत्तिः  
कलीं कीलकं श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती  
प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

### ऋष्यादि-न्यास

निम्न उच्चारण करते हुए बताये हुए शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करना चाहिए -

ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः।	(सिर)
गायत्र्यच्छिण्नुष्टुप्छन्देभ्यो नमः।	(मुख)
महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः।	(हृदय)
ऐं बीजाय नमः।	(गुद्धा)
हीं शत्तर्ये नमः।	(पैर)
कलीं कीलकाय नमः।	(नाभि)

### कर न्यास

कर न्यास करने से साधक स्वयं मंत्र मय बन जाता है, उसके बाहर-भीतर की शुद्धि हो जाती है तथा दिव्य बल प्राप्त करने से वह साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है।

ऐं	- अंगुष्ठाभ्यां नमः।
हीं	- तर्जनीभ्यां नमः।
चामुण्डायै	- अनामिकाभ्यां नमः।
विच्चे	- कनिष्ठकाभ्यां नमः।
ऐं हीं कलीं चामुण्डायै विच्चे	- करतत्त्व कर पृष्ठाभ्यां नमः।

### हृदयादि न्यास

ऐं	- हृदयाय नमः।
हीं	- शिरसे स्वाहा।
कलीं	- शिखायै वषट्।
चामुण्डायै	- कवचाय हुं।
विच्चे	- नेत्र-त्रयाय वौषट्।

ऐं हीं कलीं चामुण्डायै विच्चे - अस्त्राय फट्।

### आक्षर न्यास

ऐं नमः। (शिखायां)	हीं नमः। (दक्षिण नेत्र)
कलीं नमः। (वाम नेत्र)	चां नमः। (दक्षिण कर्णे)
मुं नमः। (वाम कर्णे)	डां नमः। (दक्षिण नासा पुटे)
वीं नमः। (दक्षिण नासा पुटे)	विं नमः। (मुखे)
चे नमः। (गुद्धे)	

### नवार्ण मंत्र द्यान

'वाग्' बीजं हि दीप-समान-दीपम्।  
माये ति-तेजो द्वितीयार्क-बिम्बम्।  
'कामं' च वैश्वानर तुल्य रूपम्।  
प्रतीयमानं तु सुखाय चिन्त्यम्।  
'चा' शुद्ध जाम्बू नद तुल्य कान्तिम्।  
'डां' षष्ठमुग्रार्ति हरे सुनीलम्।  
यै सप्तमं कृष्ण तरं रिपुधनम्।  
'वि' पाण्डुर चाष्टममादि सिद्धिम्।  
'वे' सप्तमं कृष्ण वर्ण नवमं विशालम्।  
एतानि बीजानि नवात्यकस्य। जपात् प्रवद्यः  
सकलार्थ सिद्धिम्।

नवार्ण मंत्र सिद्धि जीवन की श्रेष्ठ सिद्धि है, स्थूल रूप से नवार्ण मंत्र का अर्थ है - हे चित्त स्वरूपिणी महाकाली! हे आनन्दरूपिणी महालक्ष्मी! पूर्णत्व प्रदान करने वाली हे महा सरस्वती! ब्रह्म-विद्या प्राप्त करने के लिए हम साधक तुम्हारा ध्यान करते हैं, हे महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके! आपको नमस्कार है। आप मेरे अन्दर अविद्या रूपी रञ्जु की दृढ़ गांठ को खोल कर मुझे सभी दृष्टियों से पूर्ण मुक्त कर दें।

इस प्रकार न्यास प्रार्थना, ध्यान सम्पन्न कर साधक नवार्ण यंत्र का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। पूजन में नवार्ण यंत्र का कुंकुम एवं सिन्दूर अवश्य लगायें, तत्पश्चात् चामुण्डा का आह्वान कर सीधे बैठकर महाकाली चित्र के सामने निरन्तर देखते हुए मंत्र प्रारम्भ करें। एक बार मंत्र जप प्रारम्भ करने के बाद अपना स्थान नहीं छोड़े। जितनी माला मंत्र जप का संकल्प लिया है उतनी माला मंत्र जप अवश्य करें।

नित्य साधना समाप्ति के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करें।

देहि सौभाग्यमारोण्यं देहि मे परमं सुखम्।  
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विष्ठो जहि॥

साधना सामग्री - 300/-

# वास्तु कृत्या यंत्र

## उच्चकोटि के योगियों द्वारा बताया गया सी टंच खरा यंत्र

यह आप क्या कर रहे हैं? चन्द्र लोगों के घण्कावे में आ कर वास्तुकला के नाम पट अपने कीमती औट आलीशन मकान को तोड़-फोड़ क्यों रहे हैं? उसको घटक्षय औट बेढ़ंगा क्यों कर रहे हैं? अपने खूब-पसीने की गाढ़ी कमार्ड को घटावाद क्यों कर रहे हैं? क्या मकान का दृष्टाजा घदल देने से या इधट का कमटा उधट कर देने से आपको साई अमर्त्याओं का समाधान को जायेगा? फर्निचर औट पर्दे हटा देने से अघ कुछ ठीक हो जायेगा? मकान की सुन्दरता को खिंगाड़ देने से धनवान हो जायेंगे?

नहीं... नहीं... नहीं...

जो कुछ मुझी भट ये तथाकथित वास्तु शास्त्री कह रहे हैं, वह अघ अही है क्या? क्या पोथियों में छप जाने से ही वह असली वास्तु शास्त्र से सम्बन्धित ग्रंथ बन जाता है? क्या प्राचीन वास्तु शास्त्र में यह अघ कुछ है, जो आजकल घाजाट में खिकने वाली पुस्तकों में लिखा है? किसी अवन को इवट्ट कर देने से, तोड़-फोड़ कर देने से इधट का दृष्टाजा उधट खोल देने से अघ कुछ ठीक नहीं हो जाता। विशेषता तोड़-फोड़ में नहीं, सृजन में है। जबकि हमारे पास 'वास्तु कृत्या यंत्र' है, घट में उसके स्थापन मात्र से ही वह अघ कुछ प्राप्त हो जाता है, जो अवन निर्माण में वास्तु शास्त्र की दृष्टि से न्यूनता रह गई हो।

अन्यायियों औट योगियों द्वारा खोज पूर्ण प्रदत्त यंत्र, जो वास्तु मंत्रों से मंत्र खिढ़, प्राण प्रतिष्ठा युक्त, ऊर्जावित, अन्यायियों औट योगियों द्वारा खोज पूर्ण प्रदत्त यंत्र, जो वास्तु मंत्रों से मंत्र खिढ़, प्राण प्रतिष्ठा युक्त, ऊर्जावित, चैतन्य यंत्र है, जिसको घट में स्थापित करना ही पूर्णता है। यद्यपि इस अनुष्ठान पट व्यय आता है, पट उसे तोड़-फोड़ कर नये खिट से मकान निर्माण पट आये व्यय से कम.. घट्टुत कर। आप कुःखी न हों... चिन्ता न करें... पटेश्वान न हों... हमें लिखें...

विष्टवास करें, हम इस प्रकाट का श्रेष्ठ प्रदत्त यंत्र, जो कि मंत्र खिढ़ प्राण प्रतिष्ठा युक्त वास्तु मंत्रों से अनुप्राप्ति व तेजाविता युक्त है, श्रेष्ठ मुहूर्त में बना कर आपको भेजने के लिए प्रस्तुत हैं, जिससे कि आपकी गाढ़ी कमार्ड बच बक्के औट आपका मनोवृथ श्री पूरा हो सके...

इस सम्बन्ध में पूर्ण विवरण आलेख सहित मार्च 2005 की पत्रिका में दिया गया है, उसे अवश्य पढ़ें। अन्य जागकारी हेतु कार्यालय में सम्पर्क कर अक्तूर्ते हैं।

# वाक्षरों की वापरी

## मेष -

इस माह आपको हर कार्य सावधानी पूर्वक तथा बिना किसी जोखिम को लिये करना चाहिए। व्यापारी वर्ग और अधिकारियों को चाहिए कि माह के पूर्वाध में कोई नया कार्य परेशानियां रहेंगी। आपको अपने लक्ष्य की ओर गतिशील प्रारम्भ नहीं करें। अपने संगे सम्बन्धियों और मित्रों से सावधान रहे। गुप्त शत्रुओं से बचे। इस माह भवन, भूमि, वाहन आदि से सम्बन्धित क्रय-विक्रय में सावधानी बरतें अथवा आने वाले समय के लिये टाल दें। यात्रा में विशेष सावधानी बरतें। महिलाओं के लिये समय बहुत कठिन रहेगा। वे अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। आप 'शनि साधना' (अप्रैल 2005) करें। तिथियां 1, 3, 4, 7, 12, 17, 18, 20, 25, 29, 30 हैं।

## वृष-

आप अपने जीवन में प्राप्त होने वाले अवसरों को सही तरह से उपयोग नहीं ले पाते। अतः अवसरों का सही उपयोग करें। इस माह आपको अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपका सम्बन्ध समाज के उच्चकोटि के लोगों के साथ होगा, जिससे आपकी प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में विशेष वृद्धि होगी। फिर भी नये कार्यों को यथा संभव टाल दें। अपने इष्ट में पूर्ण निष्ठा रखते हुए समय का सदुपयोग करें। परिवार में मांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। आप 'जया दुर्गा साधना' (मार्च 2005) करें। तिथियां - 3, 7, 8, 11, 15, 17, 19, 20, 24, 27 हैं।

## मिथुन-

आप जो भी नया काम करने जा रहे हो, उसका लाभ आप भविष्य में ही ले सकते हो। आपके किसी स्वजन से आपको हानि उठानी पड़ सकती है। इस माह आकस्मिक धनहानि का योग भी बन रहा है, अतः आप आर्थिक मामलों में संभलकर ही कार्य करें। वाणी का संयम भी आपके लिये श्रेष्ठकर सिद्ध होगा। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद से स्वयं को दूर रखें तथा कागजातों पर हस्ताक्षर करने तथा किसी की गांरटी देने में सावधानी बरतें। विद्यार्थियों को संघर्ष से ही सफलता प्राप्त हो सकती है। आप 'पारद गणपति साधना' (जनवरी 2005) करें। तिथियां - 1, 5, 9, 10, 11, 16, 19, 23, 26, 29 हैं।

## कक्ष -

इस माह आपको हर प्रकार से नये सु-अवसरों का योग प्रदान होगा। कार्य की अधिकता से मानसिक और शारीरिक अधिकारियों परेशानियां रहेंगी। आपको अपने लक्ष्य की ओर गतिशील करने के लिए यह माह सर्वोत्तम है। संघर्ष आपकी क्षमताओं को उभारेगा ही साथ ही आपके क्षेत्र में आपको विशालता प्रदान करेगा। मित्रों से विशेष सतर्कता बरतें। इस माह आपको नई उपलब्धियां मिलेंगी। महिलाओं को परिवारिक मामलों में विशेष सफलता प्राप्त होगी। आप 'बदुक भैरव साधना' (मई 2005) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 2, 3, 5, 8, 12, 17, 20, 23, 27, 29, 30 हैं।

## सिंह-

माह के पूर्वाध की अपेक्षा उत्तरार्ध सफलतादायक उन्नतिदायक रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य को मह के अंत में सम्पन्न करें। वाद-विवाद और किसी भी तरह के पत्र व्यवहार अथवा कागजी दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले सावधानी बरतें या भविष्य के लिए टाल दें। व्यापारियों को विशेष लाभ और सफलता के योग है। अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से विशेष सावधान रहें। दूर दराज की यात्रा टालें। अनुकूलता हेतु आप 'शत्रु स्तम्भन साधना' (मई 2005) करें। तिथियां - 1, 3, 9, 10, 14, 16, 19, 20, 23, 26, 29 हैं।

## कन्या-

भविष्य में होने वाली घटना का पूर्वाभास होना या निराकरण होना इष्ट की विशेष कृपा से प्राप्त होता है। अपने इष्ट में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखें। आपको सफलता अवश्य ही प्राप्त होगी। वर्तमान में ऐसा कोई कार्य ना करें जो भविष्य के लिए खतरनाक साबित हो। किसी नये कार्य की अपेक्षा, अपने वर्तमान कार्यक्षेत्र में ही विस्तार करते हुए उस पर ध्यान दें। आर्थिक परेशानियां आपको नहीं डगमगा सकती। व्यर्थ के व्यय, वाद-विवाद से बचे, गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। आप 'ज्येष्ठा लक्ष्मी साधना' (जुलाई 2005) करें। तिथियां - 2, 7, 8, 9, 13, 16, 19, 23, 27, 30 हैं।

सर्वोत्तम अमृत,

त्रिपुष्टकर, शिर्ट योग

सिद्ध योग 6, 8, 9, 17, 20, 22, 23 सितम्बर/5, 11, 19 अक्टूबर ☆ सर्वोत्तम सिद्ध योग 15, 24 सितम्बर/2, 9, 13, 18 अक्टूबर ☆

अमृत सिद्ध योग 1, 24 सितम्बर/18 अक्टूबर ☆ गुरु पुष्य योग 1 सितम्बर ☆

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से : इस मास देश में राजनीतिक अशान्ति तो बनी ही रहेगी, राज्य पक्ष इतना अधिक मजबूत नहीं हो पायेगा। भारत में उत्तम कृषि योग है, जनजीवन में खुशहाली आयेगी। कर्नाटक, महाराष्ट्र में राजनैतिक उथल-पुथल तेज होगी। राष्ट्र के नियांत में वृद्धि होगी, मंहगाई कम होगी। कशमीर में आंतककारी घटनाएं बढ़ सकती हैं।

### तुला -

आप अपनी ही क्षमता पर विश्वास रखें। किसी मित्र या सहयोगी से सहायता नहीं मिलती तो भी आपको अपने ही धैर्य से काम लेना चाहिए। निराशा को टालते हुए, अपने कार्य क्षेत्र पर विशेष ध्यान देवें। व्यर्थ के कार्य ना करें। अर्थ की सुविधा के लिये विशेष प्रयत्न करने पड़ेंगे, काफी संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होगी। प्रणय सम्बन्धों में मधुरता बढ़ेगी। महिलायें गृहस्थ जीवन में विशेष सुख प्राप्त करेगी। विद्यार्थी वर्ग एवं बेरोजगारों के लिए विशेष योग है। आप अनुकूलता हेतु 'बगलामुखी धूमावती सायुज्य साधना' (फरवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 3, 7, 8, 11, 13, 17, 20, 21, 25, 26, 28 हैं।

### वृश्चिक -

यह माह विशेष उत्साह पूर्वक और नई उपलब्धियों भरा होगा। आपका अपने क्षेत्र में विशेष प्रभाव रहेगा। अर्थ की विशेष अनुकूलता प्राप्त होगी। नये-नये सम्बन्धों के निर्माण से आपका जीवन में उच्चता आयेगी। अपने मित्रों तथा स्वजनों से सावधान रहें, विवाद की स्थिति में धैर्य बनायें रखें। घर में मांगलिक कार्यक्रम सम्पन्न होने से मन में प्रसन्नता का भाव होगा, संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। प्रणय सम्बन्धों में नई ऊर्जा प्राप्त होगी। आप 'कामदेव अनंग साधना' (मई-जून 2005) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियाँ - 1, 5, 9, 10, 13, 15, 20, 22, 23, 24, 27, 30 हैं।

### धनु -

नवीन कार्य योजना आपके आर्थिक पक्ष को मजबूत करेगी। आप इस माह अधिक से अधिक अपने कार्य विस्तार पर ध्यान देवें। ईष्ट की कृपा से आपको अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। समाज में आपके मान-सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, पराक्रम में विशेष वृद्धि होगी। आपमें संघर्ष करने की क्षमता है, अतः परिस्थितियों से घबराये नहीं संघर्ष में ही उत्तरि के योग है। स्त्रियां अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। विद्यार्थीओं व बेरोजगारों के लिये भाग्योदय कारक समय रहेगा। आप 'शत्रु स्तम्भन साधना' (मई 2005) अवश्य करें। तिथियाँ - 2, 7, 8, 9, 13, 17, 22, 23, 27, 28, 30 हैं।

### मकर -

आपको पिछले समय से प्राप्त हो रही सफलताएँ, आपके यश-धन-वैभव-कीर्ति में वृद्धि करेगी। समाज में आपकी प्रतिष्ठा, मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आपको सफलता हेतु कोई विशेष प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान समय नये भवन, भूमि, जमीन-जायदाद आदि के क्रय-विक्रय के लिये बहुत श्रेष्ठ है। परिवार में मांगलिक कार्यक्रमों के आयोजनों से मन प्रसन्न होगा। किसी धार्मिक यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। गृहस्थ सुख का पूर्ण आनन्द प्राप्त होगा। आप 'पारदेश्वर शिवलिंग साधना' (फरवरी 2005) करें। तिथियाँ - 3, 7, 8, 11, 13, 17, 20, 21, 25, 26, 28 हैं।

### कुम्भ -

आलस्य और कार्य की कार्य की दुर्लक्षता आपको मानसिक परेशानी में डाल सकती है। हर कार्य को समय पर करना ही आपको समाधान दिला सकता है। कार्य की अधिकता में कोई गलत निर्णय न लें। आप अपनी क्षमता और अपने ईष्ट पर विश्वास रखें। हर नये काम, मित्र या व्यक्ति से बचकर ही रहें। यात्राओं से विशेष लाभ हो सकता है। महिलाओं की मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। विद्यार्थीयों को सफलता हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। आप 'वशीकरण साधना' (जनवरी 2005) सम्पन्न करें। तिथियाँ - 2, 3, 8, 10, 14, 17, 20, 22, 24, 29 हैं।

### मीन -

किसी के दबाव या व्यंग्यों में आकर कोई गलत निर्णय ना लेवें, समय के अनुसार कार्य करें। आर्थिक मामलों में बचकर ही कार्य करें। आपको अधिक परिश्रम करने पर भी असंतोष की स्थिति बनी रहेगी। फिर भी आप में वह क्षमता है, आप विजयश्री प्राप्त करेंगें ही। जीवन में आने वाला संघर्ष आपका विकास करेगा। महिलाओं के लिये समय मिला-जुला ही रहेगा। धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत करना श्रेष्ठ कर होगा। आप 'उन्मत भैरव साधना' (फरवरी 2005) करें। तिथियाँ - 4, 5, 9, 10, 13, 18, 21, 24, 27, 28, 30 हैं।

### इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

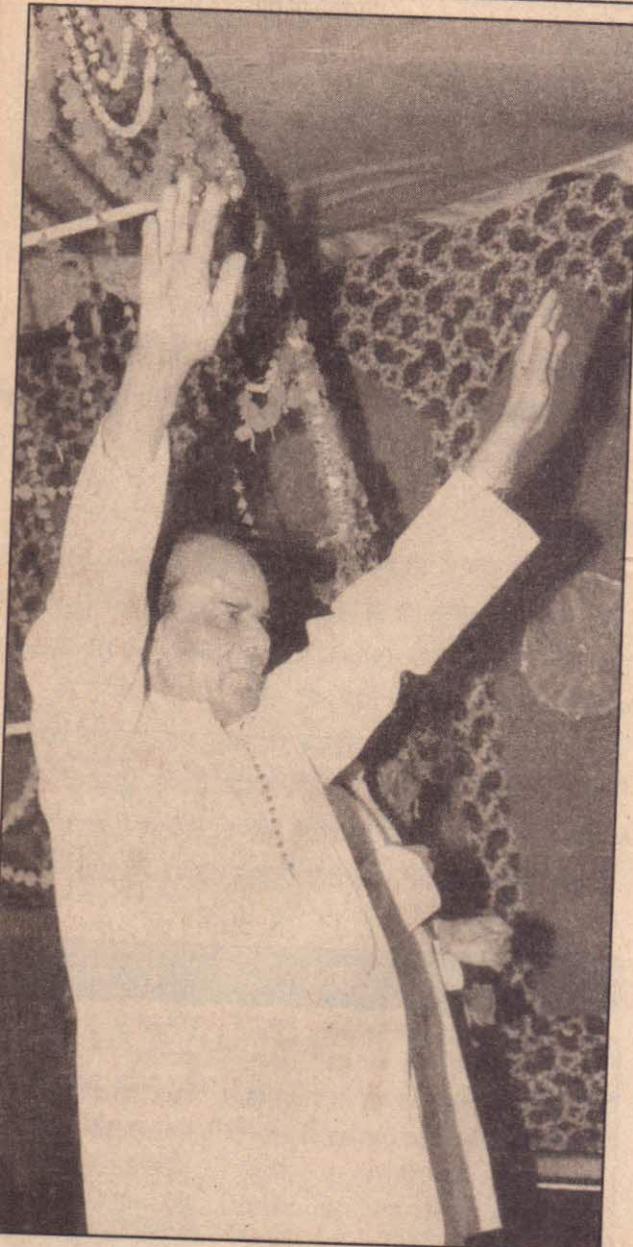
08	सितम्बर	भाद्र शुक्ल पक्ष-05	गुरुवार	ऋषि पंचमी
11	सितम्बर	भाद्र शुक्ल पक्ष-08	रविवार	राधाष्टमी
14	सितम्बर	भाद्र शुक्ल पक्ष-11	बुधवार	पद्ममा एकादशी व्रत
17	सितम्बर	भाद्र शुक्ल पक्ष-11	शनिवार	अनन्त चतुर्दशी व्रत
18	सितम्बर	भाद्र शुक्ल पक्ष-11	रविवार	पूर्णिमा व्रत/पूर्णिमाशी श्राद्ध
26	सितम्बर	आश्विन कृष्ण -09	सोमवार	मातृ नवमी श्राद्ध
03	अक्टूबर	आश्विन कृष्ण -30	सोमवार	सर्वपितृ अमावस्या श्राद्ध
04	अक्टूबर	आश्विन शुक्ल -01	मंगलवार	शारदीय नवरात्रि आरम्भ

# ॐ सामाया हूँ

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहाँ प्रस्तुत हैं, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः: 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।**



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर 25) (अक्टूबर 2, 9, 16)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक  रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (सितम्बर 19, 26) (अक्टूबर 3, 10)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक  रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (सितम्बर 20, 27) (अक्टूबर 4, 11)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक  रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (सितम्बर 21, 28) (अक्टूबर 5, 12)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (सितम्बर 22, 29) (अक्टूबर 6, 13)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक  रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (सितम्बर 23, 30) (अक्टूबर 7, 14)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक  रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (सितम्बर 24) (अक्टूबर 1, 8, 15)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक  रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

# यह हमने नहीं बगाह मिहिरने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द द्वारा बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

## अकद्वबर

1. कुंकुम से पीपल के पत्ते पर स्वस्तिक बनाकर शनि मंदिर में चढ़ा दें।
2. प्रातः सूर्योदय के समय जल में अक्षत, पुष्प, कुंकुम डालकर उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दें।
3. निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण कर ही घर से बाहर जाए - 'ॐ हाँ हाँ हूँ नमः'
4. आज प्रातः काल भगवती जगदम्बा का शास्त्रोक्त पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
5. आज पूर्ण सफलता हेतु 11 बार निम्न मंत्र का जप करें - 'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ज्लीं गं गणपतये वर वरदाय नमः'
6. सदगुरु को सफेद पुष्प अर्पित करते हुए, 'ॐ निन्दित्वित्वराय निन्दि ओऽ' मंत्र का 21 बार जप करें।
7. 'प्रज्ञा गुटिका' (न्यौछावर 75/-) को जेब में रखकर कार्य पर जाएं। सफलता प्राप्त होगी।
8. विपत्तियों से रक्षा हेतु 'ॐ ब्रह्मकाय नमः' मंत्र का 21 बार जप करें।
9. 'ॐ ह्रीं दिवाकराय नमो नमः' मंत्र का पांच बार जप करते हुए उगते सूर्य को जल अर्पित करें।
10. शिव मंदिर में काले उड़द का दान करें।
11. भगवती जगदम्बा का पूजन सम्पन्न कर नौ कन्याओं को भोजन कराएं।
12. 'हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा' मंत्र का 21 बार जप करें एवं भगवान राम का स्मरण करें।
13. प्रातः काल 15 मिनट गुरु ध्यान व चिंतन करें।
14. विष्णु को धी का दीपक लगाकर, 'ॐ ह्रीं वासुदेवाय सर्व सिद्धिप्रदाय नमः' मंत्र का 5 मिनट जप करें।
15. आज दही खाकर ही घर से बाहर निकलें।

16. अनुकूलता हेतु 'साफल्य गुटिका' (60/-) धारण करें।
17. आज प्रातः काल शिवलिंग पर बिल्व पत्र अर्पित करते हुए 'ॐ नमः शिवाय' का 21 बार जप करें।
18. 'हनुमान बाण' का ही पाठ कर 'हनुमान यंत्र' (120/-) को जेब में रख कर ही घर से निकलें।
19. आज भगवान गणपति को लहू का भोग लगायें।
20. 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः' मंत्र का प्रातः काल 21 बार जप करें।
21. निखिलस्वतन का पाठ कर, गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. 'ॐ ऐं ह्रीं महाभैरवाय' मंत्र का 5 मिनट तक जप करें।
23. आपद निवारक भैरव गुटिका (75/-) को परिवार के सभी सदस्यों को स्पर्श करा कर दक्षिणा दिशा में फेंक दें।
24. प्रातः काल पीली सरसों को अपने सिर पर 5 बार घुमाकर बाहर फेंक दें।
25. हनुमान जी के चित्र के समक्ष तेल का दीपक जलाकर हनुमान चालीस का पाठ करें।
26. प्रातः काल 15 मिनट ओऽ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा मंत्र का जप करें। धन लाभ होगा।
27. प्रातः श्रीगुरु चरणों में निम्न श्लोक का उच्चारण करें - शुकारो भवरोऽः स्वात् रुकारः तद्विरोधकृत्। भवरोऽ वरत्वाच्च गुरु रित्यभिधीयते ॥
28. आज बगलामुखी गुटिका (न्यौछावर 80/-) को धारण करें, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।
29. एक गिलास पानी लेकर, उसमें 'ऐं' बीज का 11 बार उच्चारण कर जल को अभिमंत्रित कर जल पी लें।
30. प्रातः काल गुंजरित वेद ध्वनि आडियो कैसेट का श्रवण कर घर से बाहर जाएं।
31. चेतना मंत्र की 4 माला जप कर कार्य आरम्भ करें।



# जीवन साधिता



यों तो किसी भी समस्या के समाधान हेतु अनेकों उपाय हैं। परंतु मंत्रों के माध्यम से समस्या के निवारण के पीछे धारणा यह है कि मंत्र शक्ति एवं दैवी शक्ति द्वारा साधक को वह बल प्राप्त होता है जिससे कि किसी भी समस्या का समाधान सहज हो जाता है।

उदाहरण के लिए माना जाता है कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों से यदि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से शान्त हो जाते हैं। उसी प्रकार मन को सुधृद करके किसी भी समस्या पर आप विजय प्राप्त कर सकते हैं।

1. अप्सरा को इस विधि से भी प्रत्यक्ष किया 2. क्या आप स्वयं को हर स्मय अस्वस्थ है... कुछ साधकों ने.... आप भी यह विधि अनुभव करते हैं।

**आजमा स्कते हैं।**

अप्सरा साधना सिद्ध करना अब कठिन नहीं है, क्योंकि बहुत से ऐसे साधक हैं, जिन्होंने इस विधि से अप्सरा को प्रत्यक्ष किया है और अपने जीवन में उसे सहचरी बनाया है। अप्सरा सिद्ध होकर साधक को धन, यौवन, सम्पदा, उल्लास, मस्ती और उनन्द देती है।

अप्सरा सिद्ध साधक के चेहरे का ओज बदल जाता है, उसका यौवन चिर स्थाई बन जाता है। आप भी अप्सरा को प्रत्यक्ष कर सकते हैं।

‘अप्सरा प्रत्यक्ष यंत्र’ को गुलाबी रंग के वस्त्र में गुलाब के पुष्प पर स्थापित करें। किसी भी माह में चतुर्दशी से तीन दिन तक नित्य रात्रि को नौ से दस के मध्य ‘अप्सरा माला’ से 11 माला निम्न मंत्र का जप करें -

**मंत्र**

// ॐ श्रीं अप्सरायै श्रीं ॐ फट //

मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात् उसी आसन पर सो जायें। तीन दिन के पश्चात् यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 280/-

+++++

**मंत्र**

// ॐ ह्रीं एं ब्लूं ॐ फट //

यह प्रयोग 6 दिन तक करें। छठे दिन ही किसी दुर्गा मन्दिर में सिन्दूर तथा नैवेद्य के साथ ‘आर्जुनी’ चढ़ा दें।

साधना सामग्री - 60/-

+++++

### 3. सम्मोहन प्रयोग

सम्मोहन का अर्थ है - व्यक्ति स्वयं में इतना आकर्षक बन जाय, कि जो भी उसे देखे, वह देखता ही रह जाय, उसके अतिरिक्त किसी अन्य के बारे में सोच ही न सके। ऐसे व्यक्तित्व का स्वामी अपना कोई भी कार्य जिस व्यक्ति से भी करवाना चाहेगा, वह उसके व्यक्तित्व के समक्ष कुछ विरोध कर ही नहीं सकेगा और उसका प्रत्येक कार्य करता चला जायेगा।

इसे सम्पन्न करने के लिए 'सम्मोहन गुटिका' को लाल वस्त्र पर स्थापित करें तथा स्वयं श्वेत वस्त्र धारण करें। सम्मोहन गुटिका पर पुष्प, कुंकुम तथा अक्षत चढ़ा कर उसकी ओर देखते हुए सम्मोहन माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ सं सम्मोहन आदिपुरुषाय उ॒३०॥

प्रयोग समाप्त होने पर माला को धारण कर लें व गुटिका यथा सम्भव शीघ्र ही नदी में प्रवाहित कर दें। 21 दिन बाद माला को भी प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 175/-

+ + + + + + + + +

### 4. आप सौन्दर्य के परिणाम पर पूर्ण खड़ा उत्तर स्फूर्ती हैं।

जहां स्त्री सौन्दर्य की चर्चा होती हैं वहां पर सुडौलता लिए देह यष्टि, उन्नत उरोज, गौर मुख, हरिण की तरह नेत्र चपलता लिए हुए कोमलांगी अपने आकर्षण के साथ ही चित्रित होती है। ऐसा सौन्दर्य प्राप्त आप भी कर सकती हैं, क्योंकि यह सिर्फ पुस्तकों में वर्णित नहीं है, आप इसे ग्रहण कर इसके माध्यम से स्वयं को सौन्दर्य के परिणाम पर पूर्ण खरा उत्तर उत्तर सकती हैं।

इसके लिए आपको किसी प्रसाधन का उपयोग नहीं करना है और न ही किसी प्रकार का अन्य सामान प्रयोग करना है, सिर्फ आपके कुछ समय देने मात्र से ही आप इस सौन्दर्य को प्राप्त कर लेंगी, जो कि आपका स्वप्न है।

आप 'आकर्षणी गुटिका' को लाल रंग के वस्त्र में केसर से स्वस्तिक बनाकर स्थापित करें। गुटिका के समक्ष धूप लगा दें। पांच दिन तक नित्य 31 बार निम्न मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं हेम कल्पं सौन्दर्यं श्री ॐ स्वाहा॥

जिस दिन प्रयोग समाप्त हो उसी दिन 'आकर्षणी गुटिका' को उसी वस्त्र में बांध कर किसी भी वृक्ष की जड़ में डाल दें।  
साधना सामग्री - 60/-

+ + + + + + + + +

### 5. मन की चंचलता पर काढ़ा पा स्फूर्ते हैं

मन जिस गति से विचरण करता है, यदि उसे नापने का प्रयत्न किया जाय, तो यह सम्भव नहीं हो सकेगा; लेकिन इसकी तीव्रगमी गति पर यदि नियन्त्रण प्राप्त कर लिया जाय, तो यह व्यक्ति के श्रेष्ठता को द्विगुणित कर देता है। साधक के लिए तो मन पर नियन्त्रण प्राप्त करना साधना का प्रथम चरण माना गया है। सिर्फ साधक ही नहीं, जो भी व्यक्ति अपने जीवन में अद्वितीय बनना चाहते हैं, उन सभी के लिए यह आवश्यक है। गुरुवार के दिन प्रातः काल स्नान कर पीले वस्त्र धारण करें तथा गुरु चित्र के समक्ष दीपक जला कर अपने आसन पर खड़े हो कर 'सफेद हकीकी माला' से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं गुं स्फुरदमृत रुचये गुं श्री ॐ नमः ॥

जप के पश्चात् माला को धारण कर लें। यह प्रयोग 21 दिन तक करें, 21 दिन के बाद माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 150/-

+ + + + + + + + +

### 6. अपने महितष्क की क्षमता को पूर्ण विकसित करिये

आज का भौतिक युग प्रतियोगिताओं का युग है, जीवन के प्रत्येक क्षण में आपको अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिये विभिन्न प्रकार की प्रतियोगी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। जिस व्यक्ति का मस्तिष्क जितना अधिक क्रियाशील, क्षमतावान होता है, वह उतनी ही श्रेष्ठता अर्जित कर लेता है आप भी अपने मस्तिष्क की क्षमता को पूर्ण विकसित कर सकते हैं इस प्रयोग के माध्यम से - 'चैतन्य यंत्र' को किसी भी श्रेष्ठ समय में धारण कर लें एवं नित्य प्रातः काल अपने इष्ट का स्मरण कर निम्न मंत्र का 15 मिनट तक जप करें -

मंत्र : ॥ ॐ श्री चैतन्यं चैतन्यं सदीर्घः ॐ फट ॥

यंत्र को 40 दिनों तक धारण किये रहें। 40 दिन के पश्चात् उसे नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

+ + + + + + + + +

॥ चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि ॥

भगवती देवी दुर्गा कलियुग चामुण्डा नाम से विख्यात होकर  
साधकों को अभय प्रदान करेगी।

चामुण्डा भगवत्ती द्वादशी द्वा तीव्रदूष स्फूर्त्य है

इसलिये अमृता कीजिए

# सिद्ध महाप्रसादी विद्या अनुष्ठान

वर्ण प्रवर्ण तंत्र से उद्घाटित यह दिव्य अनुष्ठान

जो शक्ति के साधक है, साधना द्वारा जीवन में निरन्तर उच्चता की ओर अग्रसर है

वास्तव में ही जो सही अर्थों में साधक है, जो अपने जीवन विशाल सेना थी, ऐसे समय में पूर्ण विजय प्राप्ति के लिए में साधना क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, उनके लिए यह भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गुफा में ले जाकर इस साधना आवश्यक है कि वे कुछ ऐसी श्रेष्ठ साधनाएं सम्पन्न करें जो को सम्पन्न करवाया और उसके बाद ही महाभारत का युद्ध कि हजारों हजारों वर्षों से प्रचलित रही हो, जिसे कई-कई प्रारम्भ किया, अर्जुन स्वयं आगे चल कर कहते हैं, कि मैंने वर्षों से आजमाया हो और जो हर बार प्रमाणिकता की कसौटी और मेरे भाईयों ने विजय प्राप्ति की, पर युद्ध में मैं देख रहा पर खरी उतरी हो।

यह प्रयोग भी अत्यन्त प्राचीन और महत्वपूर्ण है, तंत्र ग्रन्थों के अनुसार यह भगवान शिव द्वारा प्रतिपादित सिद्ध प्रयोग है, जिसे समुद्र मंथन के अवसर पर हलाहल को पचाने के लिए वर्तमान में भी इस साधना रहस्य की प्रशांसा शंकराचार्य ने तो कही ही है, उन्होंने एक स्थान पर उल्लेख किया है, कि स्वयं भगवान शिव के मुंह से उच्चरित हुआ था।

तांत्रिक ग्रन्थों के अनुसार पूर्ण सिद्धि प्राप्ति करने के लिए स्वयं दुर्वासा ने इस प्रयोग को सिद्ध कर उस समय के त्रिष्णु होने की संज्ञा प्राप्ति की थी। जब दशरथ का कैक्य नरेश से युद्ध हुआ, तो उनके कुलगुरु वशिष्ठ ने इस प्रयोग को सम्पन्न कर उन्हें विजय दिलाई, वाल्मीकि के आश्रम में महर्षि वाल्मीकी ने जब लव-कुश को तंत्र साधना सिखाने का उपक्रम किया, तो सबसे पहले इसी साधना को सिखाया था जिससे कि वे हनुमान से भी युद्ध कर सके, और सफलता अर्जित कर सकें।

द्वापर युग में भी जब महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने की स्थिति में था, इधर मात्र पांच पाण्डव ही थे और उधर कौरवों की

वर्तमान में भी साधना रहस्य की प्रशांसा शंकराचार्य ने तो कही ही है, उन्होंने एक स्थान पर उल्लेख किया है, कि मेरे पास जितने भी तांत्रिक रहस्य है, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण “सिद्ध महाचण्डी दिव्य अनुष्ठान” प्रयोग है, जिसके माध्यम से जीवन में असंभव कार्यों को भी संभव किया जा सकता है। गुरु गोरखनाथ तो इस साधना के बाद ही ‘गुरु’ शब्द से विभूषित हुए और विश्व में प्रसिद्धि प्राप्ति की। वर्तमान में भी स्वामी अरविन्द, कपाली बाबा, स्वामी विशुद्धानन्दजी आदि योगियों ने इस साधना को सम्पन्न कर जीवन में पूर्णता प्राप्ति की।

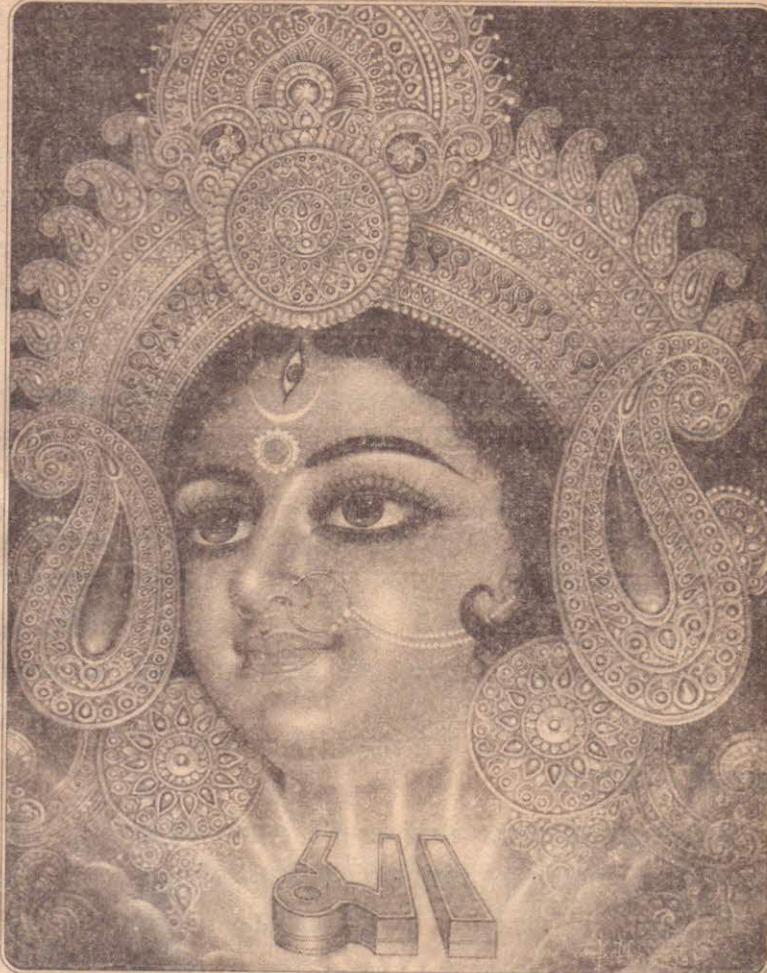
दुर्गा साधना के सम्बन्ध में कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, लेकिन विशेष बात यह है कि ‘चण्डी प्रचण्ड तंत्र’ सर्वाधिक महत्वपूर्ण तांत्रोक्त ग्रन्थ है, इस ग्रन्थ की थाह पा लेना असम्भव है। पूज्य गुरुदेव के शिष्यों में दुर्गा महाकाली के साधक विशेष

रूप से हैं, उन सबके अनुरोध पर पूज्य गुरुदेव ने महाकाली चण्डी साधना का विशेष अनुष्ठान प्रदान किया वह अक्षरशः प्रस्तुत किया जा रहा है।

जब तक साधक साधना में लीन नहीं हो जाता अपने आपको पूर्ण समर्पण भाव से ढूबा नहीं लेता, तब तक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती है, कुछ अनुभूतियां साधकों को बीच-बीच में होती हैं और प्रभाव भी देखने को मिलता है, लेकिन यह अनुभूतियां इतनी क्षीण होती हैं कि साधक शका आशंका से घिरा रहता है।

भगवती दुर्गा को साधना में समर्पण भाव और जिस रूप से अनुष्ठान सम्पन्न करना है उसी रूप में होना आवश्यक है, मंत्र शुद्धि, प्राण प्रतिष्ठा, मंत्र संख्या, पूजन क्रम सभी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। जो साधक साधना में सिद्धि हेतु 'शॉटर्कट' मार्ग चाहता है, वह कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। जीवन की कुछ विशेष भौतिक बाधाएं, ग्रहों का दोष, दरिद्रता, मुकदमा, विवाह में रुकावट, रोजगार, कारोबार में बाधा इत्यादि जीवन को कष्टमय बना देते हैं और मेरी यह बात निश्चित मान लीजिए कि जीवन में बाधाओं को हटाने के लिए महादुर्गा का अनुष्ठान व साधना करने के अलावा निश्चित कोई उपाय नहीं है। दुर्गा तो बाधाहारिणी, शक्ति प्रदायक है, और जहां शक्ति है वहां जान लीजिए कि सब कुछ है।

- ◆ कितनी भी दरिद्रता हो, कैसा ही दुर्भाग्य हो, फिर भी इस साधना को सम्पन्न करने पर उनका दुर्भाग्य समाप्त होता है, और वह आर्थिक वृष्टि से उन्नति की ओर अग्रसर होने लगता है।
- ◆ इस प्रयोग से लक्ष्मी आबद्ध होकर कई-कई पीढ़ियों के लिए लक्ष्मी का निवास घर में हो जाता है।
- ◆ व्यापार वृद्धि के लिए वह अपने आप में श्रेष्ठतम् प्रयोग है, यदि इस मंत्र को भोज पत्र पर लिख उसे किसी फ्रेम में मढ़वा कर दुकान में स्थापित कर दें, तो आश्चर्यजनक उन्नति होने लगती है।
- ◆ रोग शान्ति के लिए यह संसार का सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है, यह प्रयोग सिद्ध करने के बाद पानी का गिलास भर कर उस पर यह मंत्र पढ़ कर, फूंक देकर, यह पानी रोगी को



पिला दे, तो आश्चर्यजनक रूप से उसका स्वास्थ्य लाभ होने लगता है।

- ◆ यदि इस मंत्र के द्वारा ज्ञाहा दिया जाये तो जिसको भूत-प्रेत बाधा हो, और उसके सामने इस मंत्र का उच्चारण किया जाय तो भूत-प्रेत उपद्रव समाप्त है और घर में अनुकूलता प्राप्त होती है।
- ◆ यदि पानी के गिलास पर यह मंत्र पढ़ कर उस जल को घर में छिड़क दें तो घर का कलह नित्य होने वाले उपद्रव पूर्ण रूप से समाप्त हो जाते हैं और जीवन में अनुकूलता तथा सुख सौभाग्य बढ़ने लगता है।

शत्रु नाश के लिए यह अमोघ कवच है, जो साधक इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद इस मंत्र को भोज पत्र पर लिख कर उसे ताबीज में भर कर अपनी बांह पर बांध ले तो वह शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करता है।

चाहे मुकदमा कितना ही विपरीत हो रहा हो, मंत्र उच्चारण कर यदि कोटि कचहरी जाता है तो वह तुरन्त सफलता और बदलते हुए वातावरण को अनुभव कर सकता है।

- ◆ चाहे कितनी ही कठिन राज्य बाधा आ गई हो, और उससे निकलने का कोई उपाय दिखाई नहीं दे रहा हो तो घर में तेल का दीपक लगा कर साधक किसी भी दिन या किसी भी रात्रि को 101 पाठ स्वयं करें, या किसी ब्राह्मण से करवा दे तो उसी क्षण में राज्य बाधा समाप्त होती है, और स्थिति अनुकूल अनुभव होने लगती है।
- ◆ इस प्रयोग के द्वारा ग्रह पीड़ा, सभी प्रकार के विघ्न अपने ऊपर किये हुए तांत्रिक प्रयोग आदि समाप्त हो जाते हैं, यदि दुकान पर या घर पर किसी ने तांत्रिक प्रयोग किया हो तब भी इस प्रयोग से अनुकूलता अनुभव होने लगती है।
- ◆ यदि किसी चित्र के सामने संकल्प लेकर इस मंत्र का जप सम्पन्न करें, तो चित्र वाला व्यक्ति या स्त्री तुरन्त वशीकरण युक्त हो जाता है, इसी प्रकार इसके द्वारा सम्मोहन वशीकरण विद्रेषण आदि प्रयोग भी सम्पन्न होते हैं।

## चण्डी साधना

चण्डी साधना जो साधक सम्पन्न करता है, उस साधक का स्वरूप ही बदल जाता है, उसकी विचार शक्ति सकारात्मक रूप से कार्य करने लग जाती है और जैसे-जैसे मंत्र जप अनुष्ठान बढ़ता है, वैसे-वैसे वह नवीनता, दिव्यता, अनुभव करता है। चण्डी साधना का यह विशेष अनुष्ठान किसी भी पक्ष की अष्टमी के अतिरिक्त जब भी रवि पुष्य हो, नवरात्रि हो, ग्रहण योग हो, दीपावली का पर्व हो तब भी इसे सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना का विशेष ध्यान है और उसे उसी रूप में सम्पन्न करना चाहिए, मूल प्रयोग 11 दिन का है, कुछ पुस्तकों में इसे बढ़ कर 21 तथा 41 दिन का कर दिया गया है। साधना में मूल मंत्र के अलावा ग्यारह दिन प्रतिदिन, साधना के दौरान संयमित जीवन सात्विक भोजन और भूमि निश्चित रूप से आवश्यक है।

चण्डी साधना अनुष्ठान में विशेष ध्यान रखने योग्य बात यह है कि साधक अपनी साधना तथा अपनी मनोकामना दोनों को ही गुप्त रखें।

इस साधना में नवार्ण मंत्र सिद्ध 'चण्डी यंत्र' जो कि ताम्र पात्र पर अंकित होता है, की स्थापना आवश्यक है, इसके साथ यंत्र के दोनों ओर 'गणपति चक्र' तथा 'शक्ति चक्र' की स्थापना अवश्य करें।

साधक को जो प्रतिदिन नवीन यंत्र बनाना है, उसका चित्र दिया हुआ है जो ताम्र पत्र पर अंकित चण्डी यंत्र स्थापित है वह तो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त स्थापित है वह तो मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त है लेकिन साधक को अपेन बनाये गये यन्त्रों की नित्य प्राण प्रतिष्ठा करना आवश्यक है।

इसके साथ ही जलपात्र, गंगाजल, धूप, दीप, दूध, धी, पुष्प, शहद, चन्दन, अक्षत, मिष्ठान प्रसाद, सुपारी, फल आवश्यक हैं।

## साधना विधान

अपने सामने एक लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर लाल वस्त्र बिछा दें और उसके मध्य में दो थाली रखें। एक थाली में ताम्रपात्र अंकित प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'चण्डी यंत्र' स्थापित कर यंत्र के आगे उसी थाली में 'गणपति चक्र' और 'शक्ति चक्र' स्थापित कर दें। धूप दीप जला दें तथा दूसरी थाली एक कागज पर अष्टगन्ध से नीचे दिये गये चित्र के अनुसार यंत्र बना कर पूजन कार्य प्रारम्भ करें।

	ओं	ऐं	ओं
श्रीं	१	९	१०
	१४	७	२
		ओं	६
		३	कलीं
	५	११	४
	ओं	कलीं	ओं

## प्राण प्रतिष्ठा

अपना बायां हाथ हृदय पर रखें तथा दाहिने हाथ में पुष्प लेकर यंत्र को स्पर्श करें तथा निम्न मंत्र को जोर से बोल कर अवश्य पढ़े।

अर्हं अरं हीं क्रों यं रं लं वं शं सं सं हं हंसः सरोऽहं मम प्राणाः इह प्राणाः अर्हं आं हीं क्रों यं रं लं वं शं शं सं हं हंसः सरोऽहं सर्व इन्द्रियाणि इह मम अर्हं आं हीं क्रों यं रं लं वं शं सं हं हंसः सरोऽहं मम वाक्-मन्-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा ग्राण प्राणा इहागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

इसके पश्चात् सर्वप्रथम गणपति पूजन एवं गुरु पूजन सम्पन्न करें, गणपति पूजा स्थापित किये गये गणपति चक्र से करें तथा गुरु चित्र स्थापित कर गुरु पूजन सम्पन्न करें।

अब सामने दोनों थालियां में रखे हुए यंत्रों की पूजा करें, यह पूजा क्रम निम्न प्रकार से रहेगा -

### समर्पण प्रक्रिया

पाठं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
अर्द्धं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
आचमनं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
जंगाजलं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
दुर्गं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
धृतं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
तरु पुष्टं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
इक्षुक्षरं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
पंचमृतं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
जन्धं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
अक्षतान् समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
पुष्प मालां समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
मिष्ठाङ्गं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
द्रव्यं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
धूपं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
दीपं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
पूजी-फलं समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
फल समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः  
दक्षिणां समर्पयामि चण्डी यन्त्रे नमो नमः

इन मंत्रों में जिन-जिन वस्तुओं का नाम आया है, वे वस्तुएं अर्पित करते हुए पूजन करना है। तत्पश्चात् दोनों यंत्रों पर पुष्प चढ़ाएं।

अब साधना का सबसे मूल क्रम प्रारम्भ होत है, इस क्रम में सबसे पहले एक माला गणपति मंत्र का जप करें -

### गणपति मंत्र

// उ३० गं गणपतये नमः //

तत्पश्चात् एक माला नवार्ण मंत्र का जप करें।

### नवार्ण मंत्र

// ऐं हौं क्लर्ण चामुण्डायै विच्चे //

इसके पश्चात् एक माला चण्डी अनुष्ठान मंत्र का जप करें।

### चण्डी अनुष्ठान मंत्र

ओं ऐं हौं क्लर्ण चामुण्डायै विच्चे। ओं ज्लर्ण हुं क्लर्ण जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं हौं क्लर्ण चामुण्डायै विच्चे। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

प्रत्येक दिन के पूजा किये हुए यंत्र को लाल कपड़े में बांध कर अलग रख दें, दूसरे दिन पूजा के समय नये यंत्र का निर्माण कर इसी क्रम में पूजा सम्पन्न करें। ज्यारहवें दिन पूजा सम्पन्न करने के पश्चात् साधक इन सभी कागज पर अंकित यंत्रों को ताबीजों में डाल कर बन्द करवा कर प्रथम यंत्र स्वयं गले में अथवा बांह पर धारण करें। बाकी यंत्र अपने परिवार के सदस्यों में अथवा जनहितार्थ किसी पीड़ित व्यक्तियों को दे दें।

ताम्रपत्र पर अंकित यंत्र को अपने पूजा स्थान में प्रमुख स्थान पर रखें और नित्य प्रति की पूजा में नमस्कार करते हुए अगरबत्ती, दीपक अवश्य जलाएं।

यह विशेष तांत्रिक अनुष्ठान आस्थावान साधकों के लिए पूर्ण सफलताकारक एवं शीघ्र फलदायक है। जीवन में कभी भी कोई संकट उपस्थित हो तो उस समय भी साधक यदि स्नान कर इस यंत्र का निर्माण कर विशेष चण्डी मंत्र का 11 बार उच्चारण कर ले तो भी संकट टल जाता है।

वास्तव में ही तो इस वर्ष यह प्रयोग साधक को सम्पन्न करना ही चाहिए।

साधना सामग्री - 360/-

**नवरात्रि उत्सव की रामायण काल से परम्परा**  
चली आ रही है। यह विवरण वाल्मीकि रामायण में आता है कि भगवान् राम ने समुद्र यात्रा से पहले रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना की और पत्थरों का पुल बनाकर समुद्र पार उत्तरने के पश्चात् पूर्ण शक्ति प्राप्त करने के लिये “चण्डी पूजा” पूर्ण विधि विधान सहित सम्पन्न की। जिससे वे रावण पर विजय प्राप्त कर सकें और रावण को प्राप्त वरदान की समाप्ति कर सकें। दुर्गा ने चण्डी रूप में प्रकट होकर राम को वरदान एवं आशीर्वाद दिया और वह विधि भी स्पष्ट की जिसके माध्यम से युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते हैं। उसी परम्परा के अनुसार क्षत्रिय राजा अथवा अन्य लोग युद्ध में जाने से पहले चण्डी पूजा सम्पन्न करते हैं। यदि कोई विशेष कार्य के लिये जा रहे हैं और उसके पहले चण्डी पूजा सम्पन्न कर दी जाती है तो एक अद्भुत शक्ति प्राप्त हो जाती है, संकट टल जाता है, संघर्ष में विजय प्राप्त होती है।

सांस्कृतिक सुरव के लिये देवी साधनाओं के साथ ब्रीहिष्ठ

## धृतिप्रिणी धृतिशास्त्र

यक्षिणी साधना ही एकमात्र ऐसा उपाय है, जिसके माध्यम से नक्षत्र आपली रागत्त प्रकार की इच्छाओं को पूर्णता देते हुए, भौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्राप्त कर सकते हैं। योगिनी साधना सम्पद्वा करने से भोग व जोक्ष की प्राप्ति होती है। ये योगिनियां तत्काल फल देने वाली समर्पण प्रकार की अवृत्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली होती है क्योंकि ये नेत्री ही शक्ति का स्वरूप हैं।

यक्षिणीयां तो तंत्र साधनाओं की आधात्मिक देवियां हैं, अपूर्व सौन्दर्य की त्वागिनी होने के साथ ही साथ इच्छाओं तंत्र के गोपनीय और दुर्लभ दृष्टियों का भी ज्ञान होता है। ये नात्र जारी आकृति ही नहीं होती, अपितु पूर्ण चैतन्यता से आपूर्ति एक विशिष्ट सौन्दर्य की त्वागिनी होती हैं, जिनके दोन-प्रतिरोध में साधनात्मक बल समाचा होता है और लोत्रों में समाई होती है तंत्र की प्रखरता, जो कि आधार है तांत्रिक साधनाओं का।

इनके सौन्दर्य की साधना की प्रखरता भी होती है और जोहन, वशीकरण, स्तर्वन्धन, उच्चाटन आदि के साथ-साथ तंत्र की अनेक दुर्लभ और गोपनीय क्रियाओं में ये साहायता प्रदान करती हैं और साधक को खेचती विद्या (वायु गमन), दस सिद्धि, भूगर्भ सिद्धि, वशीकरण, शत्रु स्तर्वन्धन, नदोकानन्दा पूर्ति, दिव्य दसों की सिद्धि, अदृश्य होने की शक्ति, चौबज और बल की प्राप्ति आदि सिद्धियां प्रदान कर उसे पल नात्र में ही सम्पूर्ण विश्व का एक अद्वितीय व्यक्तित्व बना देने में समर्थ होती हैं।

धनदा यक्षिणी साधना सम्पन्न करना, मेरे जीवन का रोमाञ्चक क्षण था। आज भी उन क्षणों को याद कर मेरी आंखों से आंसू छलछला आते हैं। पूज्य श्री से मिले हुए मुझे ज्यादा समय नहीं हुआ था, उनकी पत्रिका पढ़ कर, मुझे यक्षिणी साधना को सम्पन्न करने की धुन सवार हुई। इसी मध्य मुझे पता चला, कि पूज्य श्री दिल्ली में हैं। मैं अगले दिन ही दिल्ली पहुंचा, तो जात हुआ, कि आज 'धनदा यक्षिणी साधना' भी है।

वहां पहुंच कर मुझे लगा, कि अब मेरी इच्छा शीघ्र ही पूरी

हो जायेगी। वहां पर प्रातः पूज्यश्री से मिलने के पश्चात् मैं अपने एक आवश्यक कार्य से निकल गया, क्योंकि साधना शाम को आरम्भ होने वाली थी; अतः मैं निश्चिन्त था, कि शाम तक मैं आ ही जाऊंगा। लेकिन मुझे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा, वापस गुरुधाम आते समय मेरी टैक्सी ट्रैफिक जाम में फंस गई। मैं अत्यन्त बैचेन हो रहा था, किन्तु जब मैं वहां पहुंचा, तो पूज्य श्री साधना आरम्भ करवा चुके थे। हाल पूरा भरा हुआ था, मेरे आंसू छलछला आये। वहां काउण्टर पर पता किया तो पता चला, कि आज समस्त साधना सामग्री

समाप्त हो चुकी है। मैं अत्यन्त दुःखी मन से वहां से लौटा तथा अगले दिन पुनः वापस आया, कि यदि पूज्य श्री से मिला, तो उन्हें अपनी स्थिति स्पष्ट कर, उनसे प्रार्थना करूँगा, कि मैं भी यक्षिणी साधना सिद्ध करना चाहता था, लेकिन किन्हीं कारणों से मैं कल की साधना में भाग नहीं ले पाया।

रात्रि भर मुझे पूज्य श्री का प्रवचन सुनाई देता रहा, जिसके कारण मेरी साधना करने की इच्छा बलवती होती गई। रह-रह कर मुझे प्रवचन याद आता रहा, उनके शब्द गुजरित होते रहे।

उन्होंने यक्षिणी साधना के सम्बन्ध में कहा - 'यह साधना साधक के जीवन की समस्त धन सम्बन्धी इच्छाएं पूर्ण करती है। यह साधना सम्पन्न कर साधक अपने जीवन में दरिद्रता को कोसों दूर ढकेल देता है और सुख समृद्धियुक्त तथा ऐश्वर्ययुक्त जीवन की प्राप्ति करता है तथा यक्षिणी जीवन भर साधक के अनेक कार्यों को भी सम्पन्न करती है।'

उन्होंने कहा - 'यक्षिणी नाम से डरने की आवश्यकता नहीं है। यक्षिणी एक विशेष जाति से सम्बन्धित होती है। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर स्वयं इसी जाति से सम्बन्धित हैं। अतः यक्षिणी सिद्ध करने के उपरान्त धन-ऐश्वर्य आदि दूर कैसे रह सकते हैं और यक्षिणी सिद्ध होने के बाद वह मित्रवत् रहती है, जिसके फलस्वरूप वह साधक के मार्ग में आने वाली छोटभ-छोटी बाधाएं स्वतः ही समाप्त कर देती है, पर इन सबसे ज्यादा आवश्यक है, कि आपको स्वयं पर, अपने लेकर उनके द्वारा बताई विधि ही मैं आपके सामने स्पष्ट कर गुरु पर तथा साधना पर पूर्ण विश्वास करना होगा साधना रहा हूँ। को करने के प्रति दृढ़ता रखनी पड़ेगी। तभी आप साधना को पूर्ण रूप से सिद्ध कर पायेंगे।'

अगले दिन पुनः भारी मन से गुरुधाम पहुँचा, पूज्य श्री दीक्षा दे रहे थे। दीक्षा समाप्त होने पर उन्होंने मुझसे कहा - 'तुझे जाना नहीं है, चल ऑफिस में आ।'

मैं आश्चर्य चकित भी हुआ, कि इतनी भीड़ में भी पूज्य श्री ने मुझे बुला लिया। ऑफिस में पहुँच कर मैं अपने आपको रोक न सका और मेरी आंखों में आंसू आ गए।

उन्होंने पूछा - 'क्या बात है?'

एक बालक जिस प्रकार से अपने पिता के समक्ष खड़ा होता है ठीक उसी प्रकार से मुझे अनुभव हुआ और मैं अपनी स्थिति उनको बताता चला गया।

उन्होंने मेरी बात ध्यान से सुनी, मुझे लगा उन्होंने मेरे दुर्भाग्य को परिवर्तित किया और पूर्ण विधि-विधान से मुझे यक्षिणी साधना स्पष्ट की और कहा - 'यदि कोई बाधा



आये, तो मुझसे मिल लेना।'

मैंने उत्साह पूर्वक घर जाकर पूर्ण विधि - विधान से यह साधना को सम्पन्न की, जिसके फलस्वरूप मैंने अपने जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन अनुभव किया। पूज्य श्री की आज्ञा लेकर उनके द्वारा बताई विधि ही मैं आपके सामने स्पष्ट कर गुरु पर तथा साधना पर पूर्ण विश्वास करना होगा साधना रहा हूँ।

### साधना विधान

'रुद्रयामल तंत्र' में दारिद्र्य को नष्ट करने तथा अपार संपत्ति को प्राप्त करने का उपाय स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया गया है। धनदा यक्षिणी को मंत्रों के माध्यम से प्रसन्न कर कोई भी व्यक्ति अटूट सम्पत्ति, भवन, वाहन, ऐश्वर्य, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त कर सकता है। इन्द्र की तरह अत्यन्त वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकता है।

प्रणम्य शिरसा जौरी प्रोवाच शशिशेखरम् ।

येन कल्येन दारिद्र्यं विनश्येच्च तद वद ॥

शिवजी को प्रणाम कर पार्वती ने पूछा - "महादेव! कोई ऐसा उपाय बता दीजिए, जिससे मनुष्य की दरिद्रता सदा के लिए समाप्त को जाय।"

तब शिवजी ने कहा -

पुरा विश्वसृता प्रोक्ता कुबेराय महात्मने ।

विद्या दारिद्र्यसंहंत्री यक्षिणी पापखांडिनी ॥

तेन सा तु समाच्छयाता यक्षिणी सुरसुंदरी।  
ततो निधिवरणां तु नायको निष्ठितं भवेत्॥

‘देवि! प्राचीन काल में दारिद्र्यनाशक, पापनाशक धनदा यक्षिणी विद्या को चतुर्मुख ब्रह्माजी ने कुबेर को बताया था। इस विद्या को चतुर्मुख ब्रह्माजी ने कुबेर को बताया था। इस विद्या को जो भी प्राप्त करेगा, वह निधियों का नायक अवश्य बन जायेगा।’ वास्तव में यह अक्षरशः सत्य है।

यह साधना साधक किसी भी मास की अमावस्या को प्रारम्भ कर सकता है। यह साधना ७ दिन की है।

### विनियोग

उ॒ँ अस्य श्री धनदेश्वरी मंत्रस्य कुबेर ऋषिः  
एंक्तिछन्दः, श्री धनदेश्वरी देवता, धं बीजं, स्वाहा  
शक्तिः, श्रीं कीलकं, श्री धनदेश्वरी प्रसादसिद्धये  
समस्तदारिद्र्यनाशाय श्री धनदेश्वरी मंत्र जप  
विनियोगः।

इसके बाद साधक धनदा यक्षिणी का ध्यान करें -

### ध्यान

हे मप्राकारमध्ये सुरविटपितटे रक्तपीठाधिरुढा,  
ध्यायेत्तांयक्षिणीवैपरिमलकुसुमोदभासिधमिलभाराम्।  
पीनोन्तुंगस्तनाडचां कुवलयन्यनां रत्नकांचीं कराम्याम्,  
भ्राम्यद्रक्तोत्पलाभ्यां नवरविवसनां रक्तभूषांगरागाम्॥

साधक एकाग्र मन से उत्तर दिशा की ओर मुख कर गुरु पूजन तथा धनदा यक्षिणी यंत्र पूजन करें।

जप के लिए मूँगे की माला श्रेष्ठ है। मूँगे की माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

### मंत्र

॥उ॒ँ रं श्रीं हौं धं धनदे रत्नपित्रे स्वाहा॥

ऐसा करने पर धनदा यक्षिणी सिद्ध होती है।

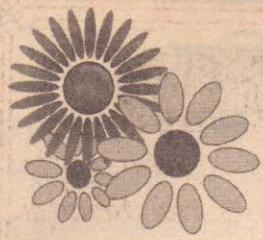
साधक मंत्र जप समाप्ति पर एक बार धनदा यक्षिणी स्तोत्र का पाठ अवश्य करें।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि धनदा यक्षिणी अप्सरा साधना की भाँति समक्ष उपस्थित नहीं होती, लेकिन साधना समाप्ति के पश्चात् ही देह में एक विशेष प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। रोम-रोम आह्लाद से भर जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी ने अमृतं पान कराकर नवीन जीवन शक्ति प्रदान कर दी है। सात दिन पश्चात् यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 240/-

### धनदा यक्षिणी रत्नोत्तम

भूभवांशभवां भूत्यै भक्तिकल्पत्रां शुभां।  
प्रार्थयेच्च यथाकामान् कामधेनुस्वरूपिणीम्॥  
धरामर प्रिये पुण्यै धन्ये धनदपूजिते।  
सुधनं धार्मिकं देहि यजमानाय सत्वरम्॥  
धर्मदे! धनदे! देवि! दानशीले! दयाकरे।  
त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यह्॥  
रम्ये लद्धिप्रियेरुपे रमारुपे रत्नपित्रे।  
शशिप्रभमनोमूर्ते प्रसीद प्रणते मयि॥  
आरक्तचरणांभोजे सिद्धिसर्वार्थदयिनि।  
दिव्यांबरधरे दिव्ये दिव्यमाल्यानुशोभिते॥  
समस्तगुणसंपन्ने सर्वलक्षणं लक्षिते।  
जातरूपमणीदादि भूषिते भूमि भूषिते॥  
शरच्चन्द्रमुखे नील नील नीरजलोचने।  
चंचरीक चमूहार श्रीहारकुटिलालके॥  
मंत्रे भगवति! मातः कलकंठ रवामृते।  
हासावलोकने दिव्ये भर्त्तुचिंतापहारके॥  
रूपतावण्य तारुण्य कारुण्यगुणभाजने।  
क्वणत् कंकणमंजीरे रसलीलाकरांबुजे॥  
रुद्रव्यक्तमहत्वे धर्माधारे धरात्रवे।  
प्रयच्छ यजमानाय धनं धर्मेकसाधनम्॥  
मातरं वावित्रंबेन दिशस्य जगदंबिके।  
कृपया करुणासारे प्रार्थितं पुरतः शुभे॥  
वसुधी! वसुधारुपे! वसुवासवदेविते।  
धनदे! यजमानाय वरदे वरदा भव॥  
ब्राह्मणे ब्राह्मणे पूज्ये पार्वती शिवशंकरे।  
श्रीकरे शंकरे! श्रीदे! प्रसीद मयि किंकरे॥  
स्तोत्रं दारिद्र्य कष्टार्तिशमनं सुधनप्रदम्।  
पार्वतीशप्रसादेन सुरेश किंकरेरितम्॥  
श्रद्धाया ये परिष्वन्ति भक्तिः।  
सहस्रमयुतं लक्षं धनलाभो भवेद् ध्रुवम्॥  
॥इति श्री रुद्रव्यामले धनदा रत्नपित्रा  
यक्षिणी स्तोत्रं संपूर्णम्॥



# नारायण ध्यान

कभी तुमने सीधा है, जब तुम्हारा अंतस् बैचैन ही उठता है, तुम्हें कुछ श्री अच्छा नहीं लगता है, जब इस संसार में सब कुछ बैमानी सा लगते लगता है - तुम क्या करते हो ?

- तुम बैचैन से इधर-उधर अटकते फिरते हो, यदि तुम्हारा बैटा, तुम्हारी पत्नी तुमसे कुछ पूछ ले, तो तुम झल्ला जाते हो, यदि दीवारा पूछ ले, तो तुम क्रीढ़ की प्रतिमूर्ति बन बैटे की मार देते हो, पत्नी की फटकार देते हो।

- क्या यह उचित है ?

तुमने कभी सीधा ही नहीं इस बारे मैं, क्योंकि मुम अपने आपसे बात करने की क्रिया भूल गयी है।

- और यही क्रिया तो मैं तुम्हें सिखाने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

- क्या तुम मेरे प्रयत्न की सार्थक करींगे ?

- हाँ !

तो मैरी बात ध्यान से सुनी और ऐसा ही करने की आदत बना लौ। तुम्हें रीज़ सीने से पहले यह कार्य करना ही होगा।

हाथ-पैर धीकर पौछ कर अपने दिन श्र ने पहने कपड़े उतार कर साफ-स्वच्छ और ढीले वस्त्र पहन लौ। यदि ऐसा नहीं कर पाते हो तो किसी परिस्थिति से मजबूर होकर, तब श्री तुम इस क्रिया को कर सकते हो -

आंख बंद कर पूरे शरीर को ढीला छोड़ते हुए लैट जाओ। अपने दिमाग और पूरे शरीर की आझ्ञा दी, कि 'वह बलकुल शांत ही रहा है', वुकु मंत्र का उच्चारण करी या सिर्फ पांच बार "नारायण, नारायण" बीली।

फिर बिल्कुल शांत ही जाओ, तुम सीधी कि तुम्हारे मस्तिष्क का तूफान शांत ही गया है।

धीरे-धीरे तुम शांत ही जाओगे, ऐसे समय में तुम्हारा शरीर और मन एक ही जायेंगे, फिर तुम जी श्री आझ्ञा दींगे, शरीर और मन दोनों की मानना ही होगा।

यदि नींद आ जाये, तो परेशानी की बात नहीं है, सुबह उठते समय पुनः "नारायण, नारायण" मंत्र का पांच बार उच्चारण करी।

यदि तुम सीना नहीं चाहते हो, तो तुम मस्तिष्क से क्रीढ़ समाप्त ही रहा है यह आव लाओ। पांच मिनट मैं तुम सफल ही जाओगे। "नारायण" मंत्र का पांच बार उच्चारण करी।

तुम नये जीश, उमंग, प्रैम और अपनत्व के आव से परिपूर्ण ही जाओगे।



या देवी सर्वभूतेषु मातृसूपेण संस्थिता।  
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

# ब्रह्मजीवी काण



पृथ्वी के विकास से आदिम काल में जब विधाता ने नारी होगी, उनको केवल समय ही बता सकेगा। ब्रह्म ज्ञन के विचार की संरचना की होगी, तब निःसंदेह उनको अगणित समस्याओं में यह जल की भाँति तरल और स्निग्ध होगी, किन्तु इसका का निराकरण करना पड़ा होगा। अन्त में जब उनकी इच्छा आन्तरिक स्वरूप स्थायी होगा। इस प्रतिमा के अन्य स्वयंभू और पूर्वाभास के अनुरूप एक मूर्ति निर्मित हो गई, एवं उसमें मानव की भाँति 180 अवयव होंगे, किन्तु परिस्थितियों के केवल प्राण-संचार करना शेष रख, उस घड़ी हरि-नाम का अनुरूप वे बदलते रहेंगे। माता बनने पर यह अमृतोपम पय-कीर्तन करते हुए महर्षि नारद ब्रह्म लोक में जा पहुंचे।

श्रद्धा तथा आश्चर्य से भर कर नारद ने पूछा - 'भगवन्! अनन्त विश्व की संरचना में इतना श्रम और समय नहीं लगा होगा, जितना कि इस छोटी सी प्रतिमा में आपने लगा दिया है। प्रभुवर! इसमें क्या विशेषता आप संचरित करना चाहते हैं?'

ब्रह्मा जी ने मुस्करा कर कहा - 'हे नारद! तुम सर्वज्ञ हो। इस प्रश्न का स्वयं समाधान कर सकते हो। मानव जाति की इस नारी में जितनी सम्भावनाएं सन्निहित होंगी, उनका पूर्वाभास पाने में मैं भी असमर्थ हूं। तुम भूत-भविष्य के संद्रष्टा हो, एवं अपनी ब्रह्म ज्ञान की पद्धति से इस नव-निर्मित मूर्ति का अंतरंग एवं बाह्य व्यक्तित्व सब कुछ ज्ञात कर सकते हो।'

नारद ने नतमस्तक होकर निवेदन किया - 'परम श्रेष्ठ! मेरी ब्रह्म विद्या एवं दूसरी सिद्धियां आपकी ही देन हैं। अस्तु, आपके श्रीमुख से ही मैं इस मानव प्रतिमा के भावी उपलब्धियों की व्याख्या सुनने की पूर्ण अपेक्षा लेकर, आपकी शरण में आया हूं।'

- 'तो सुनो, मुनि प्रवर!'

विश्व के नियन्ता ने थोड़ा विश्राम करने के उपरान्त कहा - 'मानव जाति की इस सुन्दर प्रतिमूर्ति में जिन गुणों की परिणति

में यह जल की भाँति तरल और स्निग्ध होगी, इस प्रतिमा के अन्य स्वयंभू मानव की भाँति 180 अवयव होंगे, किन्तु परिस्थितियों के अनुरूप वे बदलते रहेंगे। माता बनने पर यह अमृतोपम पय-पान करा कर, अपने कठिन मातृ धर्म का पालन करने में सक्षम होगी।'

आदि प्रजापति अपनी नव-निर्मित मूर्ति को वात्सल्य पूर्ण नेत्रों से देर तक निहारते रहे।

ब्रह्मज्ञानी महर्षि का आश्चर्य बढ़ता ही गया - 'पितामहा! परब्रह्म!! आपका आशय समझना मेरी बुद्धि के परे है, कृपया स्पष्ट विवेचन करें।'

ब्रह्मा बोले - 'इसकी गोद अपनी संतान के निमित्त कोमल बिछोना बनेगी, किन्तु उसकी रक्षा के निमित्त जब यह खड़ी हो जाएगी, तो जगत की कोई विघ्न-बाधा इसका मार्ग अवरुद्ध नहीं कर पायेगी। इसके चुम्बन मात्र से घाव और पीड़ा समाप्त हो जाएगी। इसकी प्रमुख विशेषत होगी - इसके आठ हाथ!'

'प्रभुवर! क्या कहा आपने?' - हडबडाहट में नारद जी की बीणा गिरते-गिरते बची, 'मुझको तो केवल दो हाथ ही दिखते हैं।'

सुस्मित मुद्रा में सृष्टि संरचना के प्रवर्तक देवाधिदेव ने फिर कहा - 'हां, महर्षि! मैं सत्य बताता हूं। यह नारी, पत्नी तथा माता के रूप में भविष्य में वन्दित होगी एवं मेरी आदि-शक्ति जगत्जननी दुर्गा की अंश तथा प्रतीक बनेगी, किन्तु इसकी चरम विशेषता इसकी आंखों में परिलक्षित होगी, यह

त्रिनेत्र है।'

महर्षि नारद किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर भगवान के चरणों में गिर पड़े -

'देवाधिदेव यह भेद मेरी बुद्धि के परे है। हे कृपानिधान! अब इसका समाधान आप ही करें।'

समस्त विश्व की उत्पत्ति के मूल स्रोत एवं सर्व प्राणियों की जीवन-शक्ति परब्रह्म भगवान ने अपने कमण्डल से जल की कुछ बूँदे महर्षि के शीश पर डाल, हंस कर कहा - 'नारद, तुम अजन्मा हो, अतएव इस तथ्य को समझने में असमर्थ हो। यह मूर्ति प्राणवन्त होकर जब माता बनेगी, तो एक नेत्र से वह अपने बच्चों को देखा करेगी, जब वे कमरे का दरवाजा बन्द कर अथवा अंधेरे में लुका छिपी के खेल में निमग्न होंगे। दूसरी आंख उसके शीश के पीछे अवस्थित होगी, जिनके द्वारा वह अपने पीछे होने वाली शरारतों का अवलोकन कर, फिर भी अनदेखा करने में समर्थ होगी।'

'और उसके तृतीय नेत्र?'

- 'वह उसके मुख के सम्मुख भाग में स्थापित होकर उसके शारीरिक सौन्दर्य का विशेष आक्रमण प्रमाणित होंगे। सम्मुख के नेत्र, उसके हृदय की भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने के निमित्त सशक्त वाणी बनेंगे। जब कोई शरारती बालक पिटने के भय से कांपता हुआ। उसके सामने एक अपराधी की भाँति सिर झुकाए चुपचाप खड़ा होगा, तब वात्सल्य भावना उसके नेत्रों से छलक पड़ेगी, उसमें क्षमा और प्यार का आभास पाकर नटखट बच्चा भी उसके गले से लिपट जायेगा। इस प्रकार माता के नेत्रों में सदैव करुणा, क्षमा और वात्सल्य की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहेगी।'

महर्षि नारद ने उस नव प्रतिमूर्ति की सादर परिक्रमा की एवं उसके अंग-प्रत्यंग को छूकर फिर प्रश्न किया - 'परम पिता! यह अत्यन्त कोमल होगी।?'

'अवश्यमेव! किन्तु बाह्य रूप में कुसुम-कोमल होकर भी यह कठिनाइयों से संघर्षरत होने पर वज्रादपि-गरीयसी प्रमाणित होगी। मानव-जाति की उत्पत्ति, विकास एवं प्रवर्धन की भावी अभिनेत्री माता बन कर क्या कर सकती है? क्या सह सकती है? यह सब कल्पनातीत है।'

'धन्य, धन्य, प्रभुवर! काश मेरी भी कोई माता होती।' महर्षि नारद ने गद्गद कण्ठ से कहा।

- 'भगवान! क्या मैं इसका मुख छू सकता हूँ?'

- 'अवश्य, ऋषि प्रवर!'

नारद जी की उंगली मूर्ति की आंखों के नीचे पहुँच कर अचानक रुक गई। इस अवधि में जगत-पिता त्रिदेवों में प्रथम पद के अधिकारी देवाधिदेव, ब्रह्मा ने अपने कमण्डल से अमृत जल लेकर मूर्ति के मुख में डाल दिये, और वह प्राण संचरण की संज्ञा से मुस्करा उठी।

इस अप्रत्याशित परिवर्तन को घटित होते देखकर ब्रह्मान के अजस्त्र महर्षि भी भय से सिंहर उठे। हाथ जोड़ कर इस जीवन संज्ञा से अनुप्राणित देवी के सम्मुख शीश झुका कर उन्होंने कहा - 'परमात्मन! क्षमा करें, लगता है, भूल या प्रमाद वश इसकी आंखें को मैंने छू लिया, जिसके अभ्यंतर से टूट कर शायद कोई मोती बाहर लुढ़क पड़ा है?

- 'नारद जी, यह मोती नहीं, आंसू की बूँदे हैं।'

- 'यह किस लिए प्रभुवर?'

- 'ये आंसू नारी सुलभ लज्जा, प्रसन्नता, दुःख, उदासी, निराशा, एकाकीपन एवं विश्व विजय तथा आत्मगौरव के शाश्वत प्रतीक हैं। नारी इनके आधार पर ही जगत में पूज्य होगी।'

कुलं पवित्रं जननी कृतार्थं  
वसुन्धरा पुण्यवती च तेज़।  
अपार संवित्सुखसागरे  
स्मिल्लीनं परे ब्रह्मणि वस्य चेतः॥

जिसका चित्त गुरु चरणों में लीन हो गया, उसका कुल पवित्र हो गया, माता कृतार्थ हो गयी और पृथ्वी उससे पुण्यवती हो गयी, वह पूर्ण शांत, सुखद परमानन्द में लीन होने के साथ-साथ अपने परिचितों स्वजनों को भी इस सुख में भागीदार बनाने के लिए संकल्पित समर्थ हो गया।

धिक्कुलं धिक्कुटुम्बं च धिङ्गृहं धिक् सुतं च धिक्।  
आत्मानं धिक् शरीरं च गुरु चरणे पराइमुखम्॥

जो गुरु के विमुख है, उसके कुल को, कुटुम्ब को, घर को, पुत्र को, आत्मा को और शरीर को धिक्कार है, धिक्कार है।

गुरो दाता गुरो भोक्ता गुरुः सर्वमिदं जगत्।  
गुरो वज्रति वज्रश्च य गुरुः सरोऽहम् वहि॥

गुरु ही देने वाला है, गुरु ही भोगने वाला है, इस जगत् में मेरे लिए गुरु ही सब कुछ है, गुरु ही यज्ञ स्वरूप ईश्वर है, अतः सर्वत्र जो कुछ दृष्ट है, वह सब गुरुमय ही है।

विश्व का सर्वश्रेष्ठ

लक्ष्मी से सम्बद्धित स्तोत्र

# इन्द्राक्षी स्तोत्र

इन्द्र का नव्यर्थ है वैश्व, जीवन की वह उच्चतम स्थिति, जिससे पूर्ण औंटिक सुख प्राप्त होने के लाये देवत्व और आनन्द की प्राप्ति हो जाके, इन्द्र का जर्द इन्द्रियों को नियन्त्रण में कर जीवन का जश्य प्राप्त करना, इन्द्र जिसके लाहयोग के लिये जमी देवता नव्यर्थ है और इन्द्र की आदेश हैं भगवती इन्द्राक्षी। पुष्टवद्वर कृषि द्वारा वर्षित यह स्तोत्र जीवन का जीवाण्डय है, जिसका पाठ ही इन्द्र वैश्व अपने भीवद रथापित्र करना है -

यह भगवती का श्रेष्ठ स्तोत्र है और यदि साधक अपने सामने 'इन्द्राक्षी यंत्र' रखकर नित्य इस स्तोत्र का एक पाठ कर ले तो निश्चय ही वह सभी दृष्टियों से सम्पन्न होकर पूर्णता प्राप्त कर लेता है। यह स्तोत्र देवताओं को भी दुर्लभ है। मेरे अनुभव में यह आया है कि धन-धार्य, पुत्र-पौत्र, बन्धु-बान्धव, सुख-सौभाग्य, पूर्णता, वाहन सभी की प्राप्ति के लिए पूर्ण रूप से दरिद्रता निवारण के लिए इससे श्रेष्ठ कोई स्तोत्र नहीं है।

किसी पूर्णमासी के दिन इन्द्राक्षी यंत्र स्थापन करें। बाजोट पर पीला कपड़ा लिखकर ऊपर गुलाब के पुष्प रखकर इन्द्राक्षी यंत्र को स्थापित करें, फिर इस स्तोत्र का पाठ करें। नित्य एक बार या पांच बार पाठ करने से कुछ ही दिनों में जीवन में अनुकूलता आने लगती है और सभी दृष्टियों से सम्पन्नता प्राप्त होती है।

## विनियोग

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्र महामंत्रस्य श्री शचि पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री इन्द्राक्षी देवता महालक्ष्मी बीजं भुवनेश्वरी शत्र्त्तिः लक्ष्मी कीलकं मम श्री इन्द्राक्षी प्रसाद सिद्धयर्थं मम मनोकामना सिद्धय विनियोगः।

## इन्द्राक्षी ध्यान

नेत्राणां दशभिः शतैः परिवृत्ताम्, अत्युग्र मर्यावराम  
हेमांभां वहति विलम्बित् शिखै मर्मिन्त के शांवितां ॥

घटा मण्डित पाद पदम् युगलां नागेन्द्र कुम्भस्तनी।  
इन्द्राक्षी परिचिन्तयामि मनसः कल्पेत सिद्धि प्रदाम् ॥

इन्द्राक्षी द्विभुजां देवि, पीत वस्त्र द्रुयांवितां,  
वाम हस्ते कमलधराम् दक्षिणेनवरप्रदाम् ।

इन्द्रार्दिभी सुरैर्वन्दयाम् वन्दे शंकरवल्लभाम्  
एवम् ध्यात्वा महादेवि पठामि सर्व सिद्धये ॥

### स्तोत्र

ॐ एं श्रीं श्रीं हुं हुं इन्द्राक्षी माम् रक्ष रक्ष, मम शत्रून् नाशय नाशय,  
जलरोधम् शोषय शोषय दुःखं व्याधिं स्फोटय स्फोटय, दुष्टादि  
भंजय

भंजय मनोग्रन्थिम् प्राण ग्रन्थिम् रोग ग्रन्थिम् धातय धातय इन्द्राक्षी  
माम् रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा।

ॐ नमो भगवती प्राणेश्वरी प्रत्यक्ष सिंह वाहिनी महिषासुर मर्दिनी,  
उष्ण ज्वर पित्त वात ज्वर श्लेष ज्वर, कफ ज्वर आजाल ज्वर, सज्जिपात  
ज्वर माहेन्द्र ज्वर सत्योदि ज्वर एकान्निक ज्वर, द्रुयान्निक ज्वर  
संवत् सर ज्वर सर्वांग ज्वर नाशय नाशय, हर हर हन् हन् दह दह पच  
पच तालय तालय आकर्षय विद्वेषय विद्वेषय स्तम्भय स्तम्भय मोहय  
मोहय उच्चाटय उच्चाटय हुं फट् ।

ॐ नमो भगवति माहेश्वरी महाचिन्तामणि सकल सिद्धेश्वरी सकल  
जन मनोहारिणी काल रात्रि अनले अजिते अभये महाघोर प्रतीतय  
विश्वरूपिणी मधुसूदनी महाविष्णु स्वरूपणी, नेत्रशूल कर्णशूल  
कटिशूल वक्षशूल पाण्डुरोगादि नाशय नाशय, वैष्णवी ब्रह्मास्त्रेण  
विष्णु चक्रेण रुद्र शूलेण यमदण्डेन वरुण वज्रेण वाशववज्रेण सर्वान्तरिम्  
भंजय भंजय, वक्ष ग्रह राक्षस ग्रह स्कन्द ग्रह विनायक ग्रह बाल ग्रह  
चौर्य ग्रह कूष्माण्ड ग्रहादीन निश्रहा राज्य क्षमा क्षयरोग ताप ज्वर  
निवारिणि मम सर्व शत्रून् नाशय नाशय, सर्व ग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय  
हुं फट् ।

महालक्ष्मी महादेवि सर्व रोग निवारिणि। सर्वपाप हरो देवि महालक्ष्मी  
नमोस्तुते ।

ऐसा कहकर हाथ जोड़े और भगवती महालक्ष्मी की आरती करें। इस प्रकार से यह इन्द्राक्षी स्तोत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है और नित्य इसका पाठ करना सौभाग्यदायक माना गया है।

### विनियोगः

इस इन्द्राक्षी महामंत्र का शब्दी पुरुष त्रयिः, अनुष्टुप्, छन्दः इन्द्राक्षी देवता, महालक्ष्मी बीजं, शुभगौशवरी शक्तिः। लक्ष्मी कीलकं मैं इन्द्राक्षी भगवती की कृपा प्राप्ति एवं भग्नीकाणा पूर्ति के लिए इसका पाठ कर रहा हूं।

### इयान

इस ठजार नैत्रों वाली, अति उच्च तैज युक्त स्वर्ण के समान आभायुक्त लम्बे कैशों से सुशोभित, दीनों पैरों में धुंधरओं से युक्त, स्थूल स्तनों वाली, भगवती इन्द्राक्षी का सिद्धि प्राप्ति हेतु सतत् इयान करता हूं।

हे देवि! आप दी श्रुजाओं युक्त हैं, दी पीत वस्त्रों से सुशोभित बायें हाथ में कमल धारण किए हुए, बायें हाथ से साथकों की वर प्रदान करने वाली, इन्द्र आदि देवताओं द्वारा विकृत, शंकर की प्रिया, आपके इस दिव्य स्वरूप का निरन्तर इयान करता हूं।

### स्तोत्र

ॐ ऐं श्रीं श्रीं हुं हुं हुं है! इन्द्राक्षी आप मेरी रक्षा करें। मेरे शुत्रों का नाश करें। अग्निष्ट की धू करें, दुःख एवं व्याधियों का नाश करें, दुष्टों का नाश करें। भग्नीव्रित्थि, प्राणव्रित्थि की, रौग्यव्रित्थि की धू करें। हे भगवती आप मेरी रक्षा करें।

हे भगवती इन्द्राक्षी आप प्राणों की ऊर्जा देने वाली, सिंहवाहिनी, महिषासुर मर्दिनी, उष्ण उवर, पीत उवर, स्लैशम उवर, कफ उवर, अजाल उवर, शङ्खों पात उवर, महेन्द्र उवर, शतियोदि उवर, आदी दिन का उवर, दी दिवसीय उवर, वार्षिक उवर आप सम्पूर्ण उवरों का नाश करें। हृण कीजिये, हृन कर दें, समाप्त कर दें। आकर्षण, विद्वेषण, स्तम्भन, भौहन एवं उच्चाटन कर दें।

हे! भगवती माहेश्वरी आप सकल सिद्धियों की देने वाली है, चिन्तित कामनाओं की शीघ्र प्रदान करती है। सभी लौगीं की आप प्रिय हैं। हे! कालरात्रि अठिन स्वरूप, कथी परास्त ना होने वाली, अभय प्रदान करने वाली, महाघीर रूप वाली, विश्वस्वरूपिणी, माधुर्य युक्त तथा आप विष्णु स्वरूप हैं।

नैत्र शूल, कर्ण शूल, कवर शूल, छाती शूल तथा पीलिया आदि रौगीं का नाश करें। हे! वैष्णवी, ब्रह्मस्त्र से, विष्णु चक्र से, रुद्र त्रिशूल से, यम दण्ड से, वर्ण देवता वज्र से, इन्द्र देवता इन्द्र वज्र से, सभी शत्रुओं का नाश करें, अंडान करें।

हे! भगवती यक्ष व्याह, राक्षस व्याह, स्कन्द व्याह, विनायक व्याह, बाल व्याह, चौर व्याह, उष्माण व्याह, मूक व्याह आदि सभी व्याहों की नियन्त्रित करें। राज यक्षमा, क्षय रौग तथा ताप उवरों का निवारण करें, मेरे सभी शत्रुओं का नाश करें तथा सभी शत्रु व्याहों का उच्चाटन करें।

सभी रौगीं की धू करने वाली समस्त पापों का शमन करने वाली भगवती महालक्ष्मी की मैं नमन करता हूं।

मुक्ता, विद्वुम स्वर्ण तथा स्वच्छ डल के समान, धवल शीआ युक्त मुखों से संतोष प्रदान करने वाली, चन्द्र मणि से सुशोभित, मुकुट धारण की हुई, ब्रह्मात्व स्वरूप की प्रकट करने वाली, हाथों से अभय प्रदान करने वाली, स्वच्छ स्वर्ण पात्र, शंख चक्र तथा कमल डल की हाथों में धारण की हुई लक्ष्मी का मैं इयान करता हूं।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं सभी दुर्दोषों की नाश करने वाली, दरिद्रता की धू करने वाली, सभी कष्टों की धू करने वाली, सभी मुखों की देने वाली, सभी सीआव्य की देने वाली है। भगवती महालक्ष्मी मैरे घर मैं पथारियै तथा सीआव्य प्रदान कीजिये। सीआव्य के साथ यश, मान, पद, प्रतिष्ठा एवं एश्वर्यता प्रदान कीजिये। हे! भगवती इन्द्राक्षी आपकी बारम्बार नमन करता हूं।

# राहु यंत्र

जब राहु को अपदे अबुकूल बढ़ा लिया है तो क्यों धबराते हैं जीवद की विषयीत स्थितियों में, क्योंकि राहु प्रदाद करता है हिमत, साहस, शीर्य, वाहन सुख, शक्ति और राहु समाप्त करता है दुःख, चिंता, दुर्भाग्य और संकट बस आप कीजिये विधिवत् मंत्र जप और साधना

साधना विधान: किसी भी मंगलवार अथवा शनिवार की रात्रि से शुरू किया जा सकता। रात्रि में स्नान आदि करके शुद्ध वस्त्र पहन लें। पश्चिम की ओर मुख करके लाल आसन पर बैठें। सामने चौकी पर लाल आसन बिछा दें। आसन पर गुरु चित्र स्थापित कर, गुरु से साधना की पूर्णता के लिये आशीर्वाद प्राप्त कर लें। अब साधक अगरबती और तेल का दीपक जला लें, दीपक को अपनी बायें और रखें। सामने चौकी पर बिछे हुए वस्त्र पर साबुत काली उड्ड से राहु ग्रह का चिन्ह U (अंग्रेजी वर्णमाला के यु अक्षर के समान) बनाकर, उस पर 'महाकाल राहु यंत्र' स्थापित करें। यंत्र के ऊपर ही 'शत्रुमर्दिनी गुटिका' स्थापित करें। इसके पश्चात् साधक दाहिने हाथ में पवित्र जल लेकर विनियोग करें -

**विनियोग :** उ३ अस्त्य श्री राहु मंत्रस्य ब्रह्मा त्रष्णिः किसी विशेष कार्य पर जाने से पहले उसे धारण कर लें।  
**पर्तिं छन्दः:** राहु देवता, रां बीजं, भ्रां शक्तिः श्री साधना की शेष सामग्री किसी निर्जन स्थान पर रात्रि में डाल दें।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

### आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि "मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूँ एवं 20 पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप नि:शुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'राहु यंत्र' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें", आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'राहु यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क: अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

प्रत्येक साधना निःशुल्क

# गुरुद्वारा दिल्ली

जिस भूमि पर कैकड़े प्रयोग और अकंक्ष्य दीक्षाएं  
कम्पन्ह हो चुकी हैं, उसे किंद्र चैतन्य दिव्य भूमि



समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुठेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन ७ आम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शनिवार, 15-10-05

जिस प्रकार अन्य साधनाएं महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार साधक के जीवन में सौन्दर्य का भी विशेष महत्व है, क्योंकि जिस मनुष्य में रस नहीं है, प्रेम नहीं है वह किसी अन्य साधना में भी सफल नहीं हो सकता है। किसी कवि ने कहा भी है - 'मनुष्य नहीं वो ठूंठ है, बहती जिसमें रसधार नहीं।' अप्सरा साधना जहां देवताओं के लिए उचित मानी गई है, वहाँ मनुष्य के लिए भी अत्यंत अनुकूल मानी गई है। इन्द्र दरबार की 108 अप्सराओं में नाभिदर्शना अपने आप में ही चिरयौवन, तरुणाई, और मादकता का साकार स्वरूप है। नृत्यकला, संगीत एवं मधुर वार्ता में निपुण यह अप्सरा अपने साधक को जीवन में हर प्रकार के भोग प्रदान करती है। साधक के जीवन में धन की प्राप्ति इस साधना से स्वतः ही हो जाती है। अपनी देहयष्टि, रूप, हाव-भाव, हास्य-विनोद की शैली, सुरुचि प्रियता, श्रृंगार शैली से नाभिदर्शना अपने साधक को बरबस ही मुग्ध कर देती है। नाभिदर्शना की साधना मूलतः प्रिया अथवा मित्र रूप में सम्पन्न करने पर ही शीघ्र सफल होती है।

रविवार, 16-10-05

तारा साधना

तारा के सिद्ध साधक के बारे में प्रचलित है, कि वह जब प्रातः उठता है, तो उसे सिरहाने नित्य दो तोला स्वर्ण प्राप्त होता है। भगवती तारा नित्य ही अपने साधक को स्वार्णभूषणों का उपहार देती है। तारा महाविद्या दस महाविद्याओं में एक श्रेष्ठ महाविद्या है। तारा साधना को प्राप्त करने के बाद साधक के जीवन में अर्थ का अभाव समाप्त हो जाता है। तारा साधना प्राप्त करने के बाद साधक को जहां आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनने लगते हैं, वहाँ उसके अन्दर ज्ञान के बीज का भी प्रस्फुटन होने लगता है, जिसके फलस्वरूप उसके सामने भूत-भविष्य के अनेकों रहस्य यदा-कदा प्रकट होने लगते हैं। तारा साधना प्राप्त करने के बाद साधक का सिद्धाश्रम प्राप्ति का लक्ष्य भी प्रशस्त होता है।

सोमवार, 17-10-05

विष्णु वैभव साधना

भगवान विष्णु सकल जगत् को चलाने वाले आदिदेव हैं। उनकी साधना करने से साधक को हर कार्य में पूर्ण सफलता मिलती है, क्योंकि समस्त कार्य मात्र भगवान विष्णु की शक्ति से ही गतिशील हैं। किसी भी मनोकामना को लेकर सम्पन्न की गई इस साधना के माध्यम से साधक के संकलिपित कार्य पूर्ण होते हैं। इस साधना को सम्पन्न करने से साधक का व्यक्तित्व भी आकर्षण हो जाता है, जिसके कारण उसे अनेकों लाभ होते हैं। भगवान विष्णु यदि प्रसन्न हो जायें, तो उनकी सहचरी भगवती लक्ष्मी तो स्वतः ही सिद्ध हो जाती है, और इस प्रकार साधक के जीवन में दरिद्रता का तो समाप्त हो ही जाता है, यदि व्यापार है तो उसमें बरकत होती है, यदि नौकरीपेशा हैं तो तरक्की होती है। यह साधना जहां पूर्ण भौतिक उन्नति का साधन है, बेरोजगार के लिए व्यवसाय का उपाय है, वहाँ इस साधना से मोक्ष मार्ग भी प्रशस्त होता है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को वृष्टि परम्परा की इस पावनसाधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक का प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

### गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन दिवसों को साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना के बजाए इन 3 दिनों के लिये 15-16-17 अक्टूबर

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क  $240 \times 5 = \text{Rs.} 1200/-$  जमाकर के या उपरोक्त राशि का बैंक डाप्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित निधियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के मदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पाते पर भेजें आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पाते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

\* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधृतेन को दूर कर देने का, जीवन में अतुल्यनायी बल, साध्य, पैलुष एवं गौर्य प्राप्त कर लेने का साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का...

\* गुरु प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य के द्वारा वह दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निषुणा प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त कर लेने का एक लघु उपाय है...

\* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों का जल से अमृत अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सार्व 9 बजे प्रदान की जाएगी।

### शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

## हनुमान दीक्षा

हनुमान तो अपने भक्त की रक्षा करने वलो एकमात्र देव हैं, जो संकट के समय में एवं भूत-प्रेत बाधा को दूर करने तथा बल-वीर्य प्रदान करने वाले हैं। जब हनुमान साधना करने पर भी लाभ की स्थिति न बन रही हो तथा

किसी भी प्रकार की भय-बाधा दूर न हो रही हो, तो उसका सीधा, सरल उपाय है - 'दीक्षा'।

'हनुमान दीक्षा' को प्राप्त कर साधक को उस साधना में भी सफलता मिलने लग जाती है, साथ ही दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वह स्वयं भी अपने आप को बलवान, पराक्रमी अनुभव करने लग जाता है, फिर कैसी भी बाधा हो, विपत्ति हो, वह उसका मुकाबला दृढ़ता के साथ, साहस पूर्वक करता है।

बलमिच्छेच्च दीक्षाभिः हनुमतः शत्रुदारिणः ।

बुद्धिं ज्ञानं यथा चैव, सर्वं सौभाग्यमीहते ॥

अर्थात् श्री हनुमान शत्रुओं का शमन करने वाले तथा विघ्न विनाशक हैं, अतः वह 'हनुमान दीक्षा' बल, बुद्धि ज्ञान एवं सौभाग्य को देने वाली है।



# हृजै गर्व है कि हृज हिन्दू हैं

अपने धर्म के प्रति गर्व, स्वाभिमान करना व्यक्ति धर्म है, जो व्यक्ति हिन्दू धर्म के मूर्ति पूजक, अंधविश्वासों से भरा करोड़ों देवी-देवताओं से युक्त मानते हैं, उन्होंने हिन्दू धर्म को समझा ही नहीं, हिन्दू धर्म कर्मकाण्ड का पांखड नहीं अपितु ज्ञान का वह महासागर है। जिसमें सबको स्थान है, समानता है। प्रस्तुत लेख को आप पढ़ें और कोई शंका हो तो हमें लिखें, हम आपकी शंकाओं का अवश्य उत्तर देंगे।

हिन्दूत्व संसार के हर कोने में पाया जाता है। उक्त सर्वेक्षण के अनुसार पूरे संसार में हिन्दूओं की संख्या १ ब्राह्म से लगभग है। भारत में करीब ८१ प्रतिशत हिन्दू हैं तथा नेपाल में ८८ प्रतिशत हिन्दू हैं। हिन्दू धर्म की शाखा बौद्ध धर्म माना जाया है। जो थाईलैण्ड, मलेशिया, सिंगापुर, चीन, ताईवान इत्यादि में है। केवल नेपाल ही उक्त ऐसा राज्य है जहां राष्ट्र धर्म हिन्दू है। साझथ अमेरिका तथा करेबियन क्षेत्र में जिसमें गुयाना, सुरीना, त्रिनिडाड, टोबैगो, कीजी आते हैं उसमें आधिकतर हिन्दू ही रहते हैं। मारिशस में करीब ६० प्रतिशत व्यक्ति हिन्दू हैं।

## हिन्दू धर्म की विशेषताएँ

हिन्दू धर्म विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्म है। प्राचीन सभ्यता में यह सिन्धु, गंगा, कावेरी और दक्षिण के किनारों पर फैला हुआ था। इसके साथ ही भारत के अन्य भागों के साथ उश्मिया के आधिकतर शहरों में था। हिन्दूत्व उक्त धर्म नहीं अपितु “जीवन मार्ग है” तथा यह जीवन के जन्म से लेकर मृत्यु तक की जीवन यात्रा को स्पष्ट करता है। केवल प्रार्थना ही हिन्दू धर्म नहीं है अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रिया और जीने का मार्ग है।

हिन्दूत्व में आप जो जीवन में करना चाहते हैं वह कर सकते हैं। हिन्दूत्व यह सिखाता है कि आपने आप को और दूसरों को नुकसान पहुचायें बिना अपना

जीवन उच्चता की ओर कैसे ले जा सकते हैं।

यदि आप सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिये जीवन जीना चाहते हैं तो हिन्दूत्व यह सिखाता है कि सीमाओं में रह कर किस प्रकार श्रोणों की प्राप्ति की जा सकती है। यदि आप समाज के लिये कर्तव्य निभाते हुए जीवन जीना चाहते हैं तो यह श्री हिन्दू धर्म सिखाता है। यदि आप अपने स्वयं के मुक्ति के लिये जीवन जीना चाहते हैं तो यह मार्ग श्री हिन्दू धर्म सिखाता है।

हिन्दूत्व की यह विशेषता है कि यह जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक प्रश्न का सैखानिक और व्यावहारिक उत्तर देता है। जीवन के प्रत्येक प्रश्न के पीछे जो कारण होता है उसे समझाता है और आपको यह जिम्मेदारी श्री देता है कि आप उस उत्तर को पूरी तरह से समझ कर अपने विश्वास और श्रद्धा को मजबूत करें।

हिन्दू धर्म का स्रोत वेद है जो दिव्य शक्तियों द्वारा स्वयं प्रदान किये गये थे। यह माना जाता है कि वेद सृष्टि की उत्पत्ति से पहले बने तथा भगवान ने स्वयं ऋषियों को अपने श्रीमुख से कहे। महान् ऋषियों ने वेदों का अध्ययन और उच्चारण किया तथा इन्हें गुरु-शिष्य परम्परा में आगे प्रदान करते रहे अन्ततः वेद व्यास ने इन वेदों को लिपिबद्ध किया तथा पूरे वेदों को चार भागों में बांटा जिसे ऋथवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद कहा जाता है। बाद में ऋषियों ने वेदों का

है जो कि स्वप्न, स्थान और समय से परे है और उन्हें किसी परिमाण में बांधा नहीं जा सकता। यह दिव्यतम स्वस्थप है, जो समय-समय पर संसार की रक्षा करने के लिये अवतरित होता है। श्रखा और विश्वास युक्त भक्तों की रक्षा करता है। दुष्टों का नाश करता है जिससे न्यायोचित समाज चल सकें।

ऋग्वेद के इतिहास के अन्तर्गत हिन्दूओं की ध्यान केन्द्रित करने के लिये भगवान के एक स्वप्न की आवश्यकता पड़ती है और वे एक ही भगवान के अलग-अलग स्वप्नों की प्रार्थना, पूजा, साधना करते हैं। हिन्दू भगवान को पुरुष स्वप्न में भी देखते हैं, श्री के स्वप्न में शक्ति स्वप्न में भी देखते हैं। भगवान को शिव और शक्ति सहित पूरे परिवार के स्वप्न में भी देखते हैं। साथ ही साथ हिन्दू यह भी समझते हैं कि भगवान का स्वस्थप दिव्यतम और उच्च है।

पुरुष स्वप्न में एक ही भगवान को वे ब्रह्मा स्वप्न में अर्थात् जनक के स्वप्न में मानते हैं। विष्णु अर्थात् रक्षा तथा संसार को चलाने वाला मानते हैं, शिव अर्थात् सृष्टि विनाश कर्ता तथा पुनः अवतरित होने वाला मानते हैं। इसी प्रकार श्री स्वप्न में हिन्दू शक्ति और ऊर्जा की प्रदायक दुर्गा स्वप्न में मानते हैं। धन और वैश्व विद्युत की प्रदायक लक्ष्मी स्वप्न में मानते हैं। ज्ञान और बुद्धि प्रदायक सरस्वती के स्वप्न में मानते हैं। हिन्दू धर्म की विशेषता है कि वे नारायण अर्थात् विष्णु की पूजा करें, परमशिव की पूजा करें या पराशक्ति की पूजा करें। लेकिन अन्तः वे परमात्मा को परमतत्व के स्वप्न में ही जानते हैं। हिन्दू धर्म में अन्य धर्मों के विपरित भगवान को माता के स्वप्न में भी माना गया है। जैसे श्रीमीनाक्षी, विशालाक्षी, कमलाक्षी इत्यादि-इत्यादि। इसी प्रकार शिव को विभिन्न स्वप्नों में पिता स्वप्न में भी माना जाता है। हिन्दू मन्दिर के वेल पुक सभागार अथवा व्यक्तियों के समूह का स्थान नहीं है। अपितु यह वह स्थान है जहां परमात्मा निवास करते हैं।

हिन्दू रिति रिवाज और पूजा में व्यक्ति का ध्यान उसकी सीमा, उसके विचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है। धर्म का पूजक व्यक्ति घर में या मन्दिर में जाकर पूजा कर सकता है। स्वयं पूजा कर सकता है। अथवा किसी पुजारी के द्वारा पूजा कर सकता है।

वह पूजा में पुष्प, नारियल, फल, धूप, दीप प्रज्जवलित कर सकता है। इसके अलावा स्वयं या अन्य के द्वारा संकल्प भर कर पूजा कार्य कर सकता है। स्वयं पूजा करने को संस्कृत मंत्रों के उच्चारण को उतनी ही मान्यता दी गई है जितनी किसी अन्य के द्वारा उसके लिये पूजा की जाये।

ऋग्वेद में केवल मूर्ति पूजा ही भगवान को प्राप्त करने का माध्यम नहीं है। इसके अलावा व्यक्ति दूसरों के प्रति दान के माध्यम से, करुणा के माध्यम से, शरीबों की सेवा के माध्यम से भी पूजा सम्पन्न कर सकता है। इसके अलावा वह शारीरिक और मानसिक योगाध्यान से पूजा सम्पन्न कर सकता है जिससे सबसे पहले वह अपने भीतर को समझे और फिर बाहर को समझे क्योंकि हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है।

ऋग्वेद के अनुसार योग को पूर्ण सिद्धान्त है। ध्यान योग उन व्यक्तियों के लिये है जो स्वयं आत्मज्ञान प्राप्त कर ईश्वर को प्राप्त करना चाहते हैं। भक्तियोग उनके लिये है जो प्रेम और समर्पण के द्वारा भगवान को प्राप्त करना चाहते हैं। भक्तियोग यह भी बताता है कि भगवान दूसरों को प्रेम करने से भी प्राप्त हो सकते हैं। कर्मयोग उन व्यक्तियों के लिये है जो अपने कर्म द्वारा कर्मशील बन कर उच्चता प्राप्त करना चाहते हैं तथा निस्वार्थ भाव से केवल कर्मज्ञान में रत होते हैं। राजयोग उन व्यक्तियों के लिये है जो भगवान की प्राप्ति के लिये शारीरिक और रौच्छानिक प्रयोग करना चाहते हैं। स्वयं को भीतर ही भीतर पहचानना और सुन्दर के भीतर उतना भी राजयोग माना गया है।

हिन्दू धर्म की विशेषता है कि यह सार्वभौमिक और सबके सिद्धान्तों पर आधारित है। यह काल, समय के अनुसार व्यवहारिक है तथा किसी भी जाति, स्थान के लिये उपयोगी है।

**हिन्दू धर्म द्वारा दिये गये महान् सन्देश**

ऋग्वेद को त्रिमूर्ति माना गया है। जिसमें ब्रह्मा का स्वस्थप है जो संसार के जनक है, विष्णु का स्वस्थप है जो संसार का संचालन करते हैं, शिव का स्वस्थप है जो संसार में प्रलय और पुनः उत्पत्ति के जनक है।

वह हिन्दू धर्म का यह सन्देश है कि व्यक्ति को अपने

आव्य के प्रति आशावान, आस्थावान रहना चाहिये  
क्योंकि व्यक्ति और ब्रह्म कोई अलग-अलग नहीं है, अपितु  
व्यक्ति ब्रह्म का ही भाग है।

ऋग्वेद का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि अच्छे  
कर्मों का फल अच्छा ही प्राप्त होता है तथा बुरे कर्मों  
का फल बुरा ही प्राप्त होता है। चाहे वे तत्काल प्राप्त हो,  
कुछ वर्षों बाद प्राप्त हो अथवा अबले जीवन में प्राप्त हो।  
पुर्वजन्म का सिद्धान्त पूर्ण स्थापित सिद्धान्त है जिसमें  
आत्मा अलग-अलग २५पों में प्रकट होती रहती है।  
शरीर बदलता है लेकिन आत्मा नाशहीन है।

ऋग्वेद धर्म यह सन्देश देता है कि मोक्ष और  
निर्वाण के द्वारा ही व्यक्ति जन्म-मृत्यु के बन्धन से  
मुक्त होकर अन्तः परमात्मा में विलिन हो जाता है।

ऋग्वेद धर्म यह सन्देश देता है कि योग अनुशासन  
का वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति शारीरिक और  
मानसिक शारों पर नियन्त्रण कर सकता है।

ऋग्वेद धर्म यह सन्देश देता है कि धर्म आदर्श  
सिद्धान्तों का स्वरूप है जिसकी पालना कर व्यक्ति  
सांसारिक सुख, मानसिक सुख और अन्तः परमात्मा  
प्राप्त कर सकता है।

ऋग्वेद धर्म आहिंसा के साथ-साथ शाकाहारी  
भोजन का सिद्धान्त देता है जिससे जीव हत्या नहीं हो  
और मनुष्य के साथ-साथ सभी जानवरों, पशु, पक्षियों  
को जीने का सन्देश मिलें। जिससे प्रकृति में संतुलन  
रहे।

ऋग्वेद धर्म यह सन्देश देता है कि जीवन में उक  
मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है जिससे संसार  
यात्रा सरल हो जाती है और वह यात्रा 'गुरु' स्वप्न  
मार्ग दर्शक के माध्यम से ही सम्पन्न हो सकती है।  
'गुरु' को ही सांसारिक स्वप्न में ब्रह्म, विष्णु, शिव का  
समन्वित स्वप्न मान कर मार्गदर्शन प्राप्त किया जाता  
है। ऋग्वेद का हर शास्त्र गुरु महिमा को विशाल  
इसलिये बताता है कि व्यक्ति ने ईश्वर के स्वप्न में  
साक्षात्कार किया हो या नहीं किया हो लेकिन गुरु  
स्वप्न में मार्गदर्शक उसके समक्ष हर समय उपस्थित  
है। इसलिये सब शास्त्रों में सर्वप्रथम गुरु वन्दना की  
जाती है।

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णुः, गुरु देवो महेश्वरः।  
गुरुः साक्षात् परब्रह्मा तस्मैश्च गुरुवे नमः॥

## काली की उत्पत्ति

अध्यात्म रामायण में महाकाली के सम्बन्ध में एक  
सुन्दर आख्यान आता है। लंका युद्ध के पश्चात् जब  
राम सीता के साथ अयोध्या आये और उन्होंने दशाशीश  
रावण पर अपने विजय की गाथा बताई।

सीता ने कहा कि - आप इसलिये प्रसन्न हो रहे हैं  
कि आपने एक ऐसे रावण को मार दिया है जिसके दस  
मुख थे। लेकिन यदि रावण हजार मस्तक होते तो आप  
क्या करते?

राम ने गर्व से कहा कि - वह हजार शीश वाले  
रावण को भी समाप्त कर देते।

तब सीता ने कहा कि - सत्द्वीप पर एक राक्षस है  
जिसके हजार शीश है, आप उससे युद्ध कीजिये।

भगवान राम ने यह चुनौती स्वीकार की और अपनी  
सेनाओं को लेकर सत्द्वीप पर आक्रमण करने के लिये  
बढ़ चले। भगवान राम के साथ बन्दरों की सेना, स्वयं  
की सेना, विभीषण की सेना थी। युद्ध होने पर उस  
महाराक्षस ने तीन तीर चलायें। पहले तीर के प्रभाव से  
सारे बन्दरों पर प्रहार हुआ और वे सत्द्वीप से सीधे  
किशकिन्दा अपने मूल निवास पर पहुंच गये। दूसरे  
तीर के प्रभाव से विभिषण और उसकी सेना सत्द्वीप  
से सीधी लंका पहुंच गई, तीसरे तीर के प्रभाव से राम  
के सारे सैनिक अयोध्या में पुनः जा गिरे। इस युद्ध को  
देखकर राम को अत्यन्त ही वेदना और अपमान अनुभव  
हुआ। इस प्रकार राम को असहाय देखकर सीता को  
बड़ी वेदना हुई। तब सीता ने शक्ति तत्व को जाग्रत  
करते हुए तीव्र रूप ग्रहण किया जो कि अत्यन्त विशाल  
काला एवं भयकर था। इस काली रूप में राक्षस पर  
आक्रमण किया तथा उसका वध कर उसका रक्तपान  
किया। युद्ध उन्माद में काली तीव्र नृत्य करने लगी  
तथा राक्षस के शरीर के सारे टुकड़ों को इधर-उधर  
फेंकने लगी। तब भगवान शिव प्रकट हुए तथा मां  
काली का क्रोध शांत कर पुनः उसे सीता रूप में ले  
आए।

इस प्रकार सीता भी शक्ति स्वरूप है, जो  
समय पड़ने पर स्थिति के अनुसार  
काली का रूप धारण कर लेती है।

**24-25 सितम्बर 2005**

**त्रिशक्ति साधना शिविर, सुन्दर नगर**

शिविर स्थल: कम्युनिटी हॉल, नजदीक पी.डब्लू.डी रेस्ट हॉटस, सुन्दर नगर (हि.प्र.)  
 आयोजक: सुन्दर नगर: बंशीराम ठाकुर - 01905-242544 ○ महेन्द्रलाल गुसा - 094180-43420 ○ खुबराम गुसा - 01907-267073 ○ हरीसिंह ठाकुर - 098162-40050 ○ जय कुमार ○ धनीराम शर्मा - 01907-263263 ○ छबिन्दर ○ घुमारवी: के.डी.शर्मा - 094180-65655 ○ ज्ञानचन्द राठौड़ ○ सोहन लाल ○ मंडी: शैलेन्द्र (शैली) - 094180-50051 ○ आर.एल.शर्मा - 01905-237849 ○ अशोक बंत ○ यशवंत ठाकुर ○ ओम प्रकाश - 01893-265174 ○ आर.एस.बदावर - 094180-88358 ○ पालमपुर: आर.एस.मिनास - 01894-238356 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆

**4-5 अक्टूबर 2005**

**शारदीय नवरात्रि साधना शिविर, महेश्वर, औंकारेश्वर**

शिविर स्थल: गौ-शाला मैदान, महेश्वर, मध्यप्रदेश  
 महेश्वर - इंदौर से १० कि.मी. दूर स्थित है। आगरा-बाम्बे रोड पर धामनोद से ९३ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। निकट ही औंकारेश्वर ज्योतिलिंग है।  
 आयोजक: महेश्वर: ललित जायसवाल एडवोकेट - 07283-273920 ○ दामु भाई - 07283-273355 ○ ओम सोनी ○ मनोज रावत ○ सनावद: डॉ. मण्डलोई- 094254-50490 ○ अरुण मोरानिया - 098267-84151 ○ गौरव सिंह ○ धामनोद: डॉ. आर. के. पाटीदार - 094250-14801 ○ बाग सिंह पंवार ○ गुलाब सिंह मण्डलोई ○ कुक्षी: ओ.पी. सोनी ○ संजय ठक्कर ○ शोभाराम पाटीदार - 07294-262312 ○ सुरेश भाई ○ मनावर: सरदार सिंह ठाकुर ○ इंदौर: कुलदीप सिंह - 094250-57411 ○ विष्णु पाटीदार ○ बड़वानी: एस.के.वाघेला - 07290-223516 ○ ठीकरी: यतेन्द्र सक्सेना - 094250-59293 ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆

**10-11 अक्टूबर 2005**

**शारदीय नवरात्रि साधना शिविर, झाँसी**

शिविर स्थल: सिद्धेश्वर मन्दिर, नवालियर रोड, झाँसी  
 आयोजक: बी.के.श्रीवास्तव - 098391-63023 ○ तरसेम कुमार - 094155-05052 ○ नरेन्द्र कुमार - 094150-57582 ○ मनकेश कुमार साहू- 094154-12151 ○ जगदीश अग्रवाल - 0955178-260113 ○ कैप्टन वैकटेश - 094150-55020 ○ श्रीशिव राम मीना- 092357-82221 ○ एस.वी.शर्मा - 0517-2310460 ○ प्रमिला शर्मा - 0517-2310460 ○ के.आर.शर्मा - 2771004 ○ रमा शंकर तिवारी - 07522-238686 ○ विनोद निखिल ○ हरिशचन्द्र ○ मानसिंह यादव ○ संजीव चतुर्वेदी ○ एम.एल.मिश्रा ○ राजू सोनी ○ महावीर प्रसाद दुबे ○ हीरा लाल ○ मुरारी लाल श्रोती ○ हरीवल्लभ खरे ○ अरुण थापर ○ किरण निखिल ○ धर्मेन्द्र गुसा निखिल ○ अनिल वाजपेई ○ सुनील अरोरा ○ सुरज प्रकाश गोस्वामी ○ अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, झाँसी ○

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆

**31 अक्टूबर - 1 नवम्बर 2005**

**दीपावली महोत्सव, जोधपुर**

गुरुद्याम, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर  
 हम सभी जोधपुर स्थित गुरु भाई- बहन गुरु परिवार एवं परम वन्दनीय माता जी की ओर से आप को आमंत्रित कर रहे हैं। हमारे साथ सम्मिलित होकर इस दीपावली साधना उत्सव को मनाने हेतु।

◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆

**13-14-15 नवम्बर 2005**

**कर्म सिद्धि उत्सव दीक्षा**

**संन्यास दिवस महोत्सव, रायपुर**

शिविर स्थल: सप्रे शाला प्रांगण - रायपुर (छ.ग.)  
 ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆◆

बल प्रदायक भयनाशक भूत-प्रेत बाधा विनाशक

# हनुमान गुटिका

पवन पुत्र श्री हनुमान जन-जन में उपास्य देव अचानक नर्ही बन गये। अपनी तीव्र शक्ति और भक्तों पर सहज अनुकूल्या कर देने की उनकी वरदायक शक्ति ने उन्हें लोक उपास्य बना दिया है। ऐसे ही वीर और अद्वितिय बल धामा श्री हनुमान की साधना यदि व्यक्ति अपने ऊपर या अपने परिवार में किसी सवस्य के ऊपर व्याप्त भूत-प्रेत की बाधा निवारण के लिए करता है, तो उसे आशातीत लाभ प्राप्त होता ही है। इस साधना को करने के लिए किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नर्ही होती, केवल एक निश्चित क्रम को अपना कर नित्य सायं शुद्धता पूर्वक प्रयोग किया जाय तो बाधा की तीव्रता के अनुसार कुछ ही दिनों में पूर्ण मुक्ति मिल जाती है।

## साधना विधि

इस साधना को करने के लिए आवश्यक है कि साधक यदि स्वयं के लिए प्रयोग कर रहा हो अथवा किसी अन्य के लिए प्रयोग कर रहा हो तब भी, लाल धोती पहन कर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठे, सामने एक तांबे के पात्र में 'हनुमान गुटिका' स्थापित कर लोबान जला दें एवं मंत्र सिद्ध प्रामाणिक हनुमान चित्र को सामने स्थापित कर उस पर श्रद्धापूर्वक लाल फूल चढ़ाये, धी का दीपक जलाये तथा गुड व धी को मिला कर उसे नैवेद्य रूप में अर्पित करें तथा कुछ क्षण शांत मुद्रा में बैठकर मानसिक रूप से श्री हनुमान का वीर व कल्याणकारी रूप में चिंतन कर, निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करें। यदि यह प्रयोग किसी अन्य के लिए कर रहे हैं तो उसे भी स्नान करा कर लाल वस्त्र पहनायें एवं लाल आसन पर बैठा कर, उसके दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली पकड़कर मंत्र का उच्चारण करें, इस प्रयोग को शनिवार से प्रारम्भ करें।

## मंत्र

ॐ रामदूताञ्जनाय वायुपुत्राय महाबल पराक्रमाय सीता दुःख निवारणाय  
लंकादहन कारणाय महाबल प्रचण्डाय फाल्गुन सखाय कोलाहल सकल  
ब्रह्माण्ड विश्वरूपाय सप्तसमुद्रनीरलंघनाय पिंगलनद्यनायाति विक्रमाय  
सूर्योदीपफल सेवनाय दुष्टनिर्बहणाय दृष्टि निरालंकृताय संजीविनी  
संजीवितांग दल लक्षण महाकपिसैन्य प्राणदाय दशकंठ विद्वंसनाय  
रामेष्टाय फाल्गुन महा सखाय सीता सहित रामवरप्रदाय षट् प्रयोगागम  
दक्षिणमुखाय यं चमुख हनुमते करालवदनाय नरसिंहाय  
ॐ हां हौं हूं हौं हौं हृः सकल भूत-प्रेत दमनाय स्वाहा॥

यह अपने आप में एक अत्यंत सिद्ध व तीव्र मंत्र है। यदि इस मंत्र का नित्य प्रति श्री हनुमान जी के चित्र के समक्ष पाठ किया जाय तब घर में भूत-प्रेत बाधा व्याप्त ही नर्ही होती।

प्रयोग की सफलता प्राप्त हो जाने के बाद हनुमान गुटिका को धी, गुड एवं लाल वस्त्र के साथ कुछ उचित दक्षिणा रख मंदिर में दान कर दें।

साधना समग्री - 100/-

मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

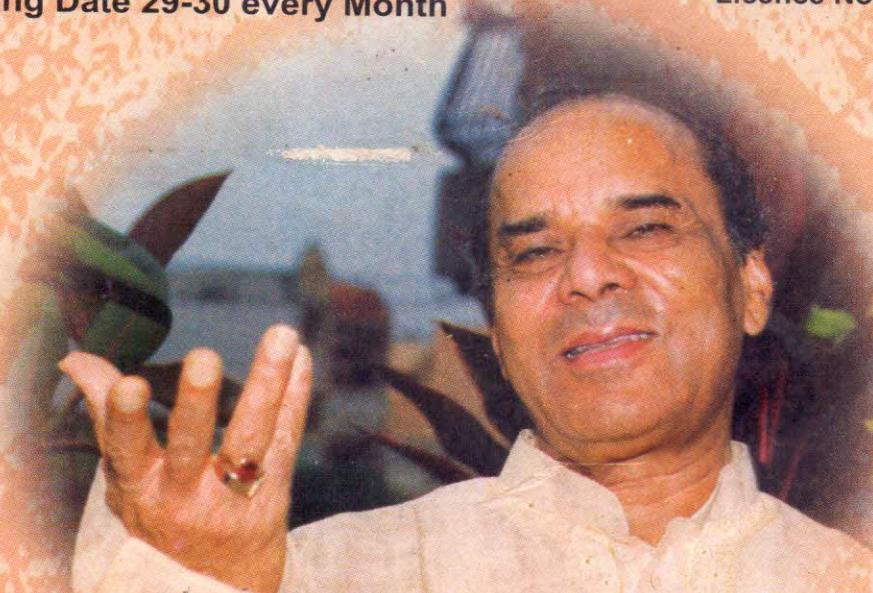
A.H.W

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 29-30 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2003-05

Licence to post Without pre payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2003-05



## माह : अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विषेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं ८:११ से १ बजे के  
मध्य तथा सायं ५ बजे से ७.३० बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक  
28-29-30 अक्टूबर

वर्ष - 25

स्थान  
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक  
15-16-17 अक्टूबर

अंक - 09

:: संपर्क ::

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफ़ोन क्स-0291-2432010  
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेली फैक्स 11-27196700